Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नम्बर मौजा ——

नाम कागज ——

नाम महाल ——

नाम मौजा ——

नाम परगना ——

नाम पटवार ——

सन फसली ——

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]m No. F. 13 (Oudh).

فارم نمبر ایف ۱۳ (اودھ)

پرگنہ

تحصیل

ضلع

مقدار جو زمیندار کو ملنی چاہیئے سرکاری تول سے			تفصیلی قیمت مقدار مندرجہ خانہ ۱۵		[illegible]	کیفیت
[illegible]	بابت اخراجات	میزان	[illegible]	قیمت	[illegible]	OUDH
۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Form No. P. 13 (Oudh).

فارم نمبر پی ۱۳ (اودھ)

پرگنہ

تحصیل

ضلع

کیفیت	کل اخراجات جملہ	تخمینی قیمت مقدار مندرجہ خانہ ۱۵		مقدار جو زمیندار کو سالانہ چاہیئے سرکاری تول سے		
		کل رقم	شرح روپیہ فی من	میزان	بابت اخراجات	بابت لگان
۱۹	۱۸	۱۷	۱۶	۱۵	۱۴	۱۳

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोंकहतेहैं कीहेप्रियेगिरिराजन
न्दनी तुमनवेउउपकारकावृत्ता
न्त प्रछ्याकियोहो सो प्रछ्या
केउत्तरसुनो प्रथम हस्तके ॥
चिन्हकेप्रकारहमकहतेहैंसो
सुनोपुरुषकेदाहिनेहस्तमों सु
भअसुभकीरेषावानेवाला
रेषाकोपरीक्षादेषनेसोंसंपूर्ण
जन्मकासुभअसुभकाज्ञान
होवेहै। स्त्रीकेवामेहस्तमेसंपू
र्णरेषाकेमध्यमोसुभअसुभसु
षदुःषआयुजनममरणकाहाल
देषनेसों मालुम होवे है सो सामु
द्रिकसास्त्रमों भगवानजो ... न
सो कहाहैसो ईप्रमाण हम ...

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हौंहोसोमनचित्तदैके हमसौंसु
नौ॥ श्रीमहादेवउवाच॥ श्रीपार्व
तीजी कैलासपर्व्वतपर कल्प
वृक्षतले बैठके श्रीपार्व्वतीजग
वृतीजीसो संपूर्णजीवकासुभ
असुभकाहस्तकेचिह्नसोपाहि
लेरेखाकेविचारकरेहै॥ ॥

श्लोक

अथातःसंप्रवक्ष्यामिहस्तरेखाविचार
स्त्रिरापुरुषजेयंवामेवामाकरस्य

अर्थ

अबप्रथमहमहस्तरेखा कोवि
चारकहोंहोंसो सुनोहिहनहस्त
केमध्येपुरुषकेलक्षण देखोमे
वामहस्तकेमध्येमो स्त्रीकेलक्ष
णविचारकरोगे॥ हस्तकेरेखा
मोसंपूर्णजीवके जन्ममात्र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कासुनन्त्रसुनकाहवललिया
हैविर्षीयूल्गा सोइफलहोगा
ऋवसत्यजानोगे हेपार्व्वतीजो
हमसत्यकहेहेंगजेसेंकोमंत्र
ऊरोराजा केपत्रसों प्रजाके
सुनके सचकपत्र परवाना
सोंप्रजालोगऋापनास्अर्थ
नोगकरहे॥वैसेहीं॥परमस्व
रकाआज्ञासोजीवनकाह
त्तामों वूह्माजीरेखामथ्यसु
नऋसुन फलोंकोंलिखाहेंसो
सुनो॥१॥ श्लोकं
॥सिवोक्तंतंत्रसामुद्रंकेररेखासुभासुभं
यस्याधिज्ञानमात्रेणपुरूषोनीतिसोध
ति॥२॥ अर्थ
श्रीसिवभगवानजोकहेहैं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥तंत्रसामुद्रिक॥ शास्त्रमें हस्तके॥
॥रेखाका सुलक्षण सुख दुःख॥
॥के हवाल लिखा है॥ जो हस्तरेखा॥
॥के देखने सो सुख दुःखको ज्ञान॥
॥होने सो पुरुष ज्ञानवान होके॥
॥शोकको त्यागकर के सुखी हो॥
॥ये है॥ २॥ श्लोक
॥जस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च
जायते। धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहु
पुत्रो न संशयः॥ ३॥ अर्थ॥
॥जाके हस्तके मध्ये पहुंचे के॥॥
॥बीच मध्ये पूर्ण मे रेखा मीनमी॥
॥न मछरी के समान प्रगट रेखा॥
॥होने सो मीनकार रेखा वाला पु॥
॥रुष इह संसार में जो जो व्याप॥
॥र करेगा सो सब में प्राप्त होगा॥॥
॥धनवान होगा बहुत पुत्रवान॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ होगा सुखी होगा संसार मों बड़ो ॥
॥ मान्य होके जीवन पर्यन्त ना ॥
॥ ना प्रकार सुख भोग को करेगा ॥
॥ या मों नहीं संदेह जानना अब ॥
॥ स्यमीन चिन्ह हस्तवाले सुखी ॥
॥ होत ही है निश्चय यह वनान्तके ॥
॥ जानना जोग्य है ॥३॥ ॥ श्लोक ॥
॥ तुला ग्रामं नत्याव जूंकर मध्ये च ॥
॥ दृश्यते ॥ तस्य वाणिज्य सिद्धिः ॥
॥ स्यात् पुरुषस्य न संशयः ॥४॥
॥ अर्थ ॥ जा प्राणी के हस्त के मध्ये ॥
॥ रेखा के बीच मों तुला नाम तरजूई ॥
॥ तौल करे का पात्र तुला राशि उतर ॥
॥ जूई का चिन्ह यदि होवै वा किम्बा ॥
॥ हस्त मध्ये ग्राम नगर के सदृश ॥
॥ चतुरकोण आकर रेखा के मध्य बीच ॥
॥ चिन्ह प्रतीत होवे ग्राम के स ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानाकिसवा अंकुशकाचिन्ह
यदिप्रतीतनहोवे किवाहिनेनोर
करसमभ्येरहे अन्यथा के
इरवामभ्येरहनेसोयहफल
होवेगाकि वह प्रारंगातुला
चिन्हवाला समचिन्हवाला।
वज्रचिन्हवालेका एकमुख्य
फलएहोहैकि जोजो वानिज्यक
र्मसंसारमों प्रसिद्ध हैसोसो
सब वानिज्यकर्म करेगा वा
नीज्यद्वारा धनवान होगा सु
खीभोगीहोके जीवनपर्जन्तआ
नंदमेंपरहैगा॥४॥ ॥श्लोक॥
पद्मचापादिपर्वतश्चर्मसूको
शादिदृश्यते॥ स्त्रियस्सपुरु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यस्यापि धनवान स सुखी नरः॥५॥

अर्थ

जाप्राणीकेहस्तमें धनुगदाचिन्ह
पद्मकमलफूलके प्रतीत होवेकि
म्याचाप नाम धनुषका चिन्ह
होवेकि वा खड्गतरवारकाचि
न्ह होयो किंवा अंकुसकोरावकाचि
न्ह होवे स्त्री का कि वा पुरुषका
सो धनवान सुखी होवेगा॥पद्म
चिन्हसे राजारानीहोवे॥चापध
नुष चिन्हसो धनुषधारी व
डे बीर होवे॥ तरवारकेचिन्हहो
नेसे वडे सीपाही बलवन्त होवे॥
अंकुसकोराके चिन्ह होनेसे भू
मिकपासक जमीदार ग्रामप
ति होवेगा सबप्रकारके सुखी हो
वेगा॥५॥ श्लोक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चक्र संख ध्वजा करौ मासाको
शौच दृस्यते॥ सर्वविद्याप्रवी
नेन बुद्धिमान सर्ववेदमर ॥२॥
जाके हस्तमध्य चक्रकाचिन्हहो
वेसो पंडित शास्त्री होनेकालक्ष
णहै॥ जोसंखकाचिन्ह हस्तम
ध्यहोवेतो विद्यावान शास्त्र
ज्ञहोय॥ जोहि ध्वजाके चिन्ह हो
वेतो वेदज्ञ वेद वेदान्तकेज्ञाता
होवे जोहिहस्तमध्य मासाकाचि
न्ह दृस्यमान होवेतो सामान्य
संसारिक व्यापार विद्यामेनि
पुनहोगा यहि दृहसंपूर्णचि
न्ह हस्तमोरहेतो संपुर्ण षट
शास्त्र चरवेद अठारहपुराण॥
केवक्ता पंडित यजोमाननी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जसुखिहोगा॥६॥ —— श्लो०
त्रिशूलंकरमध्येतुजेनराजापूर्व
र्तिता॥यज्ञेधर्म्मेचदानेचस्थिहि
जपूपूर्जने॥७॥ अर्थ
यदिकोईपुरुषकाकिम्वास्त्री
केहस्तमध्येत्रिशूलकाचिन्ह
प्रतीतहोवैतोराजाहोनेकाचि
न्हहै॥अगरशुधत्रिशूलहोने
सेअवश्यराजाहोताहै॥यदित्रि
शूलमेकछुसंदेहहैशुधपूर्व
टनहींमालुमहोवैतोराजाकेकु॥
टुम्बकोकेराजभोगकोकरेगा॥
राजालोकेकिम्वाराजाकेप॥
र्युवतीहोकेनानाप्रकारके
जज्ञकरेगा॥धर्म्मात्माहोगा
दानकेकरेगादाताउपकारी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगा गौब्राह्मण देवता मातापि
ता गुरुजनों के सेवा पूजा स
न्मान करेगा धर्मसील सुखी
धनी गुनी काम श्य मानवी
य होगा त्रिसूल हस्त वा लेख
वृ ऊत प्रताप लोक मो विख्यात
सुजस होवे हो॥ ७॥ = श्लोकं
शक्तितोमरवाणोक्षुकरमध्ये
सुदृश्यते। रत्नचक्रध्वजाके।
शैस्य च राज्यं लभेन्नरः॥८॥

अर्थ

जदि स्त्री का पुरुष का हस्त मध्ये
कोई स्थान मो शक्ति वरछी
का चिन्ह होवे अन्य बान तोम
र खड्ड के सदृस कछु का चिन्ह
म रा मनुस्य मो हस्त प्रवेसक।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोस्यतोमरनामकअङ्गाकार
प्रतीनहोवे॥ किम्वाचारोको
चिन्हहस्तमध्येप्रगटमालुम
होवेतो॥ऐसीतीनोचिन्हकेफल
प्रगटतेवडेभंग्रसराज्यकोप्रा
प्तिहोवेहै यदिएकभीचिन्हहो
वेतो समान्यराज्यभोगकोप्रा
प्तहोगा॥दोचिन्हरहनेसोराज
ऐश्वर्य्यकोभोगकरेगा॥
संसारमोवडाअनंदसोजन्म
पर्यंतसुखीमानीधनीज्ञानी
गुनीहोकेसदाअनंदसुखसे
रहोगा॥२॥ श्लोकं
अंकुसंकुंडलंचक्रंयस्यपाणि
तलेभवेत्॥तस्यराज्यंमहा
भ्रसंसामुद्रवचनंयथा॥६॥
अर्थ
कोईपुरुषकाहस्तमध्येयदि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

अंकुशकाचिन्हहोवेतोकिन्न
कुंडलकाचिन्हहोवेतोअन्न
चक्रका चिन्हहोवेतो॥ती
नौचिन्हके प्रतीतहोनेसे म
हाराजाचक्रवर्त्तिराज्यभोग
कौंप्राप्ति होगायदिइसकाचि
न्हहोवेतोसामान्य राज्यभो
ग होगा॥जोदोहीचिन्हहोवेतो
कछु विसेषराजधनस्व
र्जभोगकरेगा॥ क्षीरसमुद्रवा
सीनारायणका वचनहैस
त्य यामेसंदेहनहीकरनो॥ती
नौचिन्हहोनेसे अवश्यक
महाराजाचक्रवर्त्ति भूपाल
नामहोवेसंपूर्ण भूमीकों

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपररहेगा जदिअंगुष्ठ घोडाके
चिन्हहोवेतो घोडा द्वारपरबंधा
रहेगा ॥ यहसंपूर्णचिन्हहस्त
मेंरहनेसेबडोधनाढ्यराजा
पृथिवीपालकहोकेसुखीम
नुष्यलोकमेंरहे ॥ ११ ॥
श्लोक ५
अंगुष्ठोदरमध्यस्थोयस्यवि ५)
राजते॥ उत्पन्नभक्ष्यभोगीस्यात
सनरःसुखमेधते॥१२॥ अर्थ ॥
जापुरुषकेहस्तकेअंगुष्ठके
उपरमोमध्यरेखाकेवीचमो
जोयवकाचिन्हहोयतोय
हपुरुषसारमोविद्यावानगु
नीज्ञानीबुद्धिमानधनीहो
केसुखीहोगा॥जन्ममत्रेय

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मररा॥ पर्जोतसदासुखीभोग

करेगा॥ ॥ जामेसंदेहनहीहै॥

॥१२॥ श्लोक

मध्यमानजनीमूलेयवोय

स्यचदृस्यते॥ धनवानसु

खोभोगीस्यात्पुत्रवान्सुता

न्वितः॥१३॥ अर्थ॥

जाकेहस्तकेमध्यमाअंगु

लीकेमूलमेनीचेकेरेखाके

मध्येजोइजवकाआकारा

दृस्यमानहोवैतोधनपतिसु

खीहोवै॥किमध्यानजनीना

मअंगुस्टकेसमीपकेअंगु

लीकेनामतर्जनीकहैहैवा

हीतर्जनीअंगुलीकेमूलते

लेरेखाकेमध्येजवकाचिन्ह

प्रतीतहोवैतोधनीगुरामि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनीय पृथ्वीलोकमो प्रसिध
होके विलासकरेगा व हूतपु
त्र होगा ॥ बडी सुंदरी स्त्रीसो
भोगविलासकरकेवडो ऐश्वर्य
वंत होके जीवनपर्यंत आनं
दसौं रहेगा ॥ यामों नहीं संदे
हकरनो सत्यहोवे तौतलोक
मो देखा जातहै गुरुजनोसे
निश्चयमालुम होतहै ॥ १३ ॥

श्लोक

अनामिकापूर्वमूलेकनिष्ठ।
िका मेरा तनू॥ आयुष्य दश
वर्षाणि सामुद्र वचनं यथा
॥ १४ ॥ अर्थ ॥
जदि कोई प्राणीका हस्तमध्ये
कनिष्ठिका अंगुली नामकहूं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ीअंगुलीकापूर्वसमपूर्वभाग
सेअपरअचलकेअनामिका
अंगुलीकापूर्वभाग जउ
तकसेआयुरेषाहोनेसे ९०
वर्षपर्जन्त आयुजीवनाहै।
लादसरा॥ आयुरेषअनापूर्तित
होहै॥ जोरेषाकेमध्यमें
३रेषाटुटगयाहोय नीचेतर
फकुकाहोयतो जसमें
दुषनेकालसरा॥सुचनहोता
है॥ जोइआयुरेषामें उपरसे
चटकेरेषानीचेकुकाहोय
तोवसमेकिम्याकोहातेउप
सेनीचेगीरनेकासूचनदेष।
ताहै॥ यहसौरसमुद्रसा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसेंअंगष्ठानवृद्धमासोवकेहैंलेख
स्यवतांतयाननागयहिकनि
ष्टिकांअंगुलीकामूलसेंआर
म्रतर्जनीमूलपर्जन्तएक
रेखापरिपूर्णाअरुणावर्णास
सवर्णारेखाशुभमालमहोय
तोएकशतवीर्षायर्बकाअ
युरेखासूचनकरैहै॥६४॥

श्लोकं

अंगुष्ठस्यापुर्धरेखवर्त्ततेम
तेशुभा॥ सेनापतिर्धनेश
यमर्थ्यमायुर्न्नरोलभेता
६५॥ अर्थ
केहस्तकेअंगुष्ठकेअं
लीकेउपरचढकेयदिउ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धिगामीरेखापूर्णतिहोवोतोजा
नियेकीवडाउतमराजराजेश्वर
काचिन्हहैवडाक्षत्रपतिराजाहो
वेगावडासेनाफौजलसकरके
मालिकहोगाउहराजाकेसंग
मोउंकनिसनझंडापताकाझ
नेकहसयोंपाकेसंगमोजास
करकेमहाराज्यवडाऐश्वर्य
धनजोगकोकरकेपर्थिवी
मोरहकेपचापापाचमचप
नवर्षकिम्वासाठवर्ष ॥६०॥
आयुजीवननपूर्णराशिके
मनुष्यकाजोगसंपूर्णउजो
गकरकेउत्तमतीर्थमोशरी
रत्यागकरेगा ॥१५॥ ॥श्लोकं॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तर्ज्जनीमूलपर्ज्जन्तमूर्ध्वरेषाच
दृश्यते॥ राजदूतोभवेत्तस्यध
र्मनाशोपजायते१६॥ ॥॥ अर्थ॥
तर्ज्जनीनामवडेअंगुलीकेस
मीपमोंरहनेवालीतर्ज्जनीनाम
अंगुलीकेमूलजडतलेयदिऊर्ध
रेषाजिसकेप्रगटप्रतीतहोवेतो॥
राजदूतहोनेकाचिन्हहै॥सिपा
हीहोकेहस्तमोंघडुवाराप्र
र्वकनानाप्रकारकेराजकीय
चार्त्ताहरसालेआवनेकाअधि
कारमोंप्राप्तहोगाजीवनपर्ज्जन्त
राजकीयकर्म्मकररामोंप्रा
प्तहोगा॥व्यग्रचंचलहोकेस्व
रूपमहीहोनेसों॥अपनाव
र्गाश्रमकेयन्यावतूउचितध

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्मकर्मकाचेसूरसेरीतिनहो
केसंसारमोंयतूकोचितूविषय
भोगाकरके शरीरत्यागकरेगा

॥६६॥ श्लोक

मध्यमामूलपर्यंतमूर्धरेखाच
दृश्यते॥पुत्रपौत्रादिसंपन्नोध
नवान्ससुखीनरः॥१७॥ अर्थ
याकेहस्तमध्येउर्धरेखाकोचि
न्हउठकेचलाउपरकोमध्यमा
अंगुलीकेमूलजडातसेमिलके
प्रगटसोप्रतीतहोवेतोसोप्राणी
संसारमोंअपनेवंशजरमोंव
डाभाग्यवान्होगा बहुपुत्रवंत
होगावडेधनीहोगा वडेसुंदरी
स्त्रीसोंसंगरहोगा वडेसुखसं
पतिभोगाकरेगा यहलोकमों
वडोमाननीयसुजशकीर्त्ति

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तभाग्यवंतनामप्रगटकर
केलोकमोंवडेआनंदसोंभोग
विलसकरकेजीवनपर्जन्त
आनंदसोंरहेगा ॥ ११ ॥

श्लोक

अनामिकायामूर्ध्वरेखव्याव
सायेधनागमः ॥ सुखदुःखेन
जीवेत्पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥
॥ १२ ॥

अर्थ

जापुरषीकेहस्तमध्येपूर्वमे
पहुंचेकेजडतेंआरंभहोकेउ
हकेऊपरकोंचलकेजोंअना
मिकाअंगुलीकेमूल पर्जन्त
मिलकेप्रगटप्रतीतऊर्ध्वरेखा
होनेसोंव्यवसायरोजगार
नानाप्रकारकेव्यवहारकेसं
जोगकरकेंधनसंचयकरके
शरीरमोंकिंचित्सुखकिंचि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदुःखभोगकरतेऊयेलोकमें
रहेंगा।।अत्यंतधनाढ्यभीहि
होगा।अत्यंतःदरिद्रीहीन
हीहोगा।परंतुमध्यमअधीका
रीधनवंतहोकेसुखदुखसों
निर्वाहमात्रकरतेऊयेलोकमें
रहेंगा।१८।। श्लोक।।
जस्यपाराम्युर्धरेखास्यातक
निस्टामूलसमन्विता।।तेनरः
परदेशेषुशतमायुर्लभन्तिते
१८।। अर्थ
जाप्राणीयोंकाहस्तमोंजाहि
कनिस्टकाअंगुलीकेमूल
जउतलेऊर्धरेखाकेचिन्हमि
लकेप्रतीतहोयेतोकनिस्टा
अंगुलीकेऊर्धरेखासोएक
शतस १०० वर्षलोकमोंरा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ोर रहके परदेशमो वासकरके
अपनाजीवकाकेकरनेऊवे
शरीरकानिर्व्वाहकरेगा १९॥

श्लोक

द्रीसहानंयन्योधर्म्मपद्वीसुख
मेवचाविद्यामानोनपमाप्नं
चकंगुल्यामूलसंस्थिता २०

अर्थ

कनिस्टाअंगुलीके मूलमोर
दिरेषाहोवे जितनासर्व्वभाग
ननेमोप्रतीतहोवेसोसबके
फलप्रगट होवे जिसवडोकीसाच
कर्त्ताहोवे एकर[illegible] सोमादा
तापरोपकारीहोवेइतरेषासो॥
यन्यावत् धर्म्मशीलमाननी
यपूजनीय ज्ञानवान नती
यरेषाके फलमो प्रतीत हो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहै।।बडोऐश्वर्यराज्यन्नोग्य
बडोमहिमामहत्वकोप्राप्तहो
केसुखसंपतिकेप्राप्तहोंहै।।च
तुर्थरेखाकनिष्टांगुलीके
फलमोहुआजाहै।।बडोविद्या
वानपंडितज्ञानीबुधिमानला
यकपंचमरेखाकेमध्यमोपर
लक्षितहोवैहै।।यालोकमोब
डोमाननीययशस्वीसरदार
चौधरीग्रामकेसन्नामोमान
नीयकोप्राप्तहोनेकाचिन्हहै
छठयरेखकेमध्यमोसुख
फलप्रतीतहोवैहै।।यदिरेखा
सातहोवतोसंतोषपतसंसा
रकेभोगहोगाबडोसुखीधनी
नहीहोगापरंतुलोकमोम्रूप

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानअ्रो वकुंतपावेगा ॥ यह
नारायन वृक्ष्मासो कहे है ॥ की
अंगुली कनिस्टाके मूलमो
संपूर्ण प्रानियो का जन्म मा
त्र कसु षदुष भोगी घनवंता
न और अज्ञानीयो कालस
णरेषा सो प्रतीत होता है सोइरे
षा सब वृक्षाजू प्रानियो के।
भोग को लिषदिया है ॥ २०॥

श्लोक

कनिस्टामूलसंयुक्तास्त्रिरेषा
यस्य दृश्यते॥ एकंयुग्मंत्रित
यंचचतुर्न्न वारासंयुतमा

॥३१॥ अर्थ

जा प्रानी के हस्त के कनिस्टा
अंगुली के मूल ज ऽत ले जा दित्ती

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नरेषाकेचिन्हप्रतीतहोवेतो
मुर्खधर्मकामस्हेतीनपदा
र्थकेलोकमाध्येभोगकरने
काचिन्हहै।।यदिरेषकरेषा
होवेतोधनीहोवेदोरेषासोध
र्मात्माहोवे तीनरेषासोबडो
भोगीभोगकर्ताहोवे।।चार
रेषासोबहुतस्त्रीकेभोगके
कर्ताहोवेपाचरेषासोज्ञानी
मानीधयशस्त्रीवुधिमान
होनेकाचिन्हहै।।कनिस्टा
अंगुलीकेमूलतलेउठकेरे
षाहोनेसोजईरेषाहोवेउनने
स्त्रीभोगकारेषामोंप्रतीतहो
ताहै।।जोदिस्त्रीकेवामकनि
ष्टामध्येमूसतलेजइरेषाउ
परकेचलकेप्रतीतहोवेतो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओत्तहीपुरुषकासंगकररो
काजोस्यप्रतीतहोवेहै ॥२१॥

श्लोक

अपयुर्व्वेलसवैदृष्टातर्जनीमू
लसंस्थिता ॥ शतवर्षेभवेद्
दायुःसुखमल्पुर्न्नसंश यः
॥२२॥

अर्थ

यहसंसारमोंसंपूर्णाप्रारणीमा
त्रके कनिस्टाअंगुलीकेमुल
तलेजोजोरेषाकाचिन्हप्रती
तहैवाहीरेषाकेचिन्हसेमा
लुमहोताहैकीसुषीदुषीजन्म
मरणाअयुकाज्ञानप्रतीतहो
हैजोरेकनिस्टाकेमूलसेच
सकेतर्जनीअंगुलीकेवी
चमूलमोंजाईकेमीलकेप्रा
तीतहोनेसोएकशत १००॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्षकाआयुरेखासोंपूर्तीहै
ताहै।। बहूप्राणीसुखीहोकेप्रा
णत्यागकरेगा।। यालोकमें
सुखीहोकेरहेगा।। जोहिमध्य
माकेमूलतकलेरहेतोसत्तर७०
पांचपचहत्तर७५।। वर्षके
आयुकाचिन्हरेखासोंपूर्ती
नहोवेहै।। २२।। श्लोक।।
मध्यमामूलपर्जंतमायुरेखा।
चदृश्यते।। चतुर्दशचतुर्विंश।
आयुर्ब्बलविनाशनं।। २३।।

अर्थ

जोहिकोइप्राणीकेहस्तकेअं
गुलीकनिष्टाकेमूलतेउठ
केमध्यमाअंगुलीकेमूलके
नीचेसोंपूर्तीनहोवे।।मध्यमा
मोंमिलीहैनहीं।। मध्यमाके
नीचेएकअंगुलीपरकहे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कै मूलतलेप्रतीतहोनेसोंआघ्रा
णीकेआयुरेखामोप्रतीतहो
ताहैकाचौवीसवर्षा॥२४॥ओ
औरनवर्ष१८हैमिलकेअर्ती
सवर्षका३२आयुरेखामो
आयुकावलकेनाशमररा
कौप्रतीतरेखासोंहोताहै॥२३॥

श्लोकं

आयुर्बलंनवेद्धैखाऽनामि
कामूलसंस्थिता॥त्रिहसंच
वर्षकौंचआयुर्बलंविनाश
नम॥२४॥ अर्थ

आघ्राणीकेहस्तकेअनामि
काअंगुलीकेमूलतलेएक
रेखाहुपरसोंनीचेकेउत्तररही
होवेतोएकयवमात्रतोत्रिह
शनामतीघ्रा३वर्षकेआयु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रेखासोप्रतीतहैजोदृहोयथमा
त्ररेखाप्रतीतहोवेतोत्रिवर्षस्त्रीस्य।
ठतीनपत्रिस्ठ ६३ वर्षकेआयु।
युकेवलरेखासोप्रतीतहोताहै
सोआनामिकाकेमूलकेरेख।
सोआयुजन्मकाहालप्रतीत
होतहै॥२४॥ श्लोकं॥

आयुर्हीनंवल्पास्वल्पलघु
दीर्घंपद्रूश्यते॥तेनराःसुख
दुःखेनचाल्पमृत्युर्नसंशयः॥

॥२५॥ अर्थ

जोप्राणीकेहस्तमोअल्पछो
टारेखाप्रतीतहोयतोआयुअ
ल्पत्योराजीवनकावीचारक
रनो॥जोसदिर्घदीर्घवडीसं
वायमानरेखाहोयतोदीर्घ
बडेआयुर्वलकेदेखनो॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परंतुरेषामोक्ष्यामनाकृषाव
रीरेषापूनीतहोनेसोंगाकिंचि
तसुषकिंचितदुःषजोगकर
तेकुहे अल्पआयुकाविचार
केईषलाजोप्रकारकेरेषाहोवे
सोप्रकाररेषासोसंपूराजन्म
मत्रकाशुभाशुभकोंसूचनक
रताहै॥२५॥ श्लोकं ॥
करमध्येस्थितारेषापितृवं
शसमुद्भवः॥पूर्णारेषापितृवं
शोर्ध्वरेषापरवंसकः॥२६॥

अर्थ

हस्तकेमध्येद्वारेषमोविच॥
रहै॥अंगुष्ठअंगुलीहोतर्जनी
अंगुलीकेमध्येसोहेरेषाच
लकेजातहै॥सकेनोमध्यम
सकेबीचसे॥पीछेपहुचे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कैतरफसोघूमकेजातीहै।।रे
खाकनीष्टिकाअंगुलीके
सामनेसोअपयुरेखाकाकेनी
चैसोजोचलकेहस्तमोरहैहै
सोजातिपूर्णरेखाहोवेअपुर
खाकेनीचेकरेखातोअपने
पिताकेवीर्जसोजन्मालिया
है।।यहीपितरेखामोअर्ध
रूपप्रतीतहोवेतोजानीये
कीपरकेवीर्जसोजन्मली
याहै।।यहिअंगुस्तनर्जनी
केमध्येवीरेखामिलकेरहे
तोजानीयेकीमातापितासो
यडप्रेमत्याएकत्रसंगमहो
वा।।जोदिपलयकरेखाप्रती
तहोवेतोजानीयेकीदोकेसं
गसहानहीरहताहै।।दोमेक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यतहोताहेगातिसुयसोजाति
थायादिपिताकेरेषाछोटाहो
केनीचेकेतरफमोकुकेकेच
लाहोतोपिताकेअल्पआयुज।
नना राजदिमोटारेखालासोव
कुउपरलसमोप्रतीतहोवेतो
उठेआयुपिताकेजानीयेराज
दिमातरेषा जोपकुचेकेतरफ
सोहोकेउपरमोगयाहेसोअ
ल्पसूक्ष्मरेषामोक्ष्यामताहे
तोमाताकेआयुअल्पजानना।
राजदिमोटाहोकेअरूरावरा
पूरीप्रतीत होवेतोवउंआयु
माताकेजानियेराजदिमातापि
ताकेहीरेषाकेमध्ये उपरअ
उमोत्रिकूलहोवेतोमातापि
तादोस्वर्गवासीदेवताहोके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं ये लोकमों जाइके संगगस्वर्ग ।
सकरे ग यतनी ज्यू यथा कहे है
॥२८॥ श्लोक ॥
मातुरेषा करे चैव एकैक पुत्र
मेव च ॥ एकैक पुत्र्यमाहायय
स्यरे चापचतुष्ट्यं ॥२७॥
अर्थ
पिताकेरे पामाताके रे पाये हस्त
मे पूत्य क पुत्र्य क है है के हस्ता म
ध्ये प्रतीत होय है ॥ माता के रे
घात जनीअंगुस्टकमध्यसो
चलके पड़ चमों मीलके रहती
है पिताके रे धात तर्जनी अंगु
स्टके मध्य मों निकसके अंगु
ष्टाके नीचे सो चलके हस्त के
वाम पार्श्व मो उठके जाना
प्रतीत होता है सो ई मातापिता

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केपुन्यकेलैकेमाताकेअशर
रमात्वीपिताकेअशवीर्जमत्र
सौरजवीर्जकेसेके प्रारामात्र
संसारिकविषयभोगनिमित्त
शरीरकोधारराकरेहैसोईमा
तापिताकेरेषाहैहस्तकेवीच
मोप्रतीतहै॥२७॥ स्लोक॥
यऊरेषाभवेत्कलेशं स्वल्पा
न्निर्धनहीनता॥रेषायावाम
नंसौष्यसाभवृचनंजल्पाप
॥२८॥ अर्थ
जाकेहस्तमोमातापितकेरेषाके
मध्येयऊतरेषाहोछोटारेषा
अनेकोप्रतीतहोतहोताहोवेतो
निर्धनहोनेकाचिन्हहेशरी
रमोनानाव्याधिरोगहोनेका
चिन्हमोप्रतीतहै॥जोरमातापि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

च नाकेसैकेरेषाकेमध्यमेंउ
तिअल्पसूल्परेषाहोवेजोइरि
हीहोनेकाचिन्हमोपुतीनहोता
है इपीवास्तेहस्तकेंध्येपुरस
पुरुरेषाजोह्मानपिवितोकेरेषा
मध्येपुतीतहोवेविकोराकी
याकुस्सकोराकीम्याचकुश्र
नवाविसलालाहिकोकोयि
न्होवेतोवडोमानतीयवोधि
मानसुषीहोनेकाचिन्हहोता
है। यह सीरसागरसमुद्रवा
सीभगवान श्रीब्रह्माजीसें
कहेहैसोसत्यवाक्यकेनि
श्चयकोमाननाजोग्यहै। स

श्लोकं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगुलीनांपन्यकरेषागन्यतो
त्रितयंपन्यकारेषाद्वादशाके
सौख्यंयनयान्यपूदयकं ॥१९॥

अर्थ

जोप्राणीकेदहिनेहस्तकोपाचो
अंगुलीयोंकेमध्यमपर्वके
तिनीतिनरेषाकोपन्यकपन्म
कगननासोंयदिवारहद्वादश
रेषाहोवेतोबडेसुषीधनीगु
नीलायकहोनेकाचिन्हमें
प्रतीतहोताहै ॥१९॥ श्लोक ॥
अंगुलीनांपन्यकरेषागन
मेवत्त्रयोदशामहादुःषा
महाकलेसंसामुद्रवचनंज
न्या ॥२०॥ अर्थ ॥
जोकेदहिनेहस्तकेपाचोंअंगु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिन्हहै॥प्रवचनहोगा॥परंतुइ
न्काकलेशरहेगा॥हरिहूंहोग
जोदिहेकेडकेबीचसोसामने
घालवेहोवेकघडेलिंगहोवेतोस
घीहोनेकाचिन्हलिंगमोप्रतीत
होताहै॥३४॥ श्लोकं
कल्पेनुतनयोलिंगोशिरालेन्य
सुखीनरः॥स्थूलग्रंथियुते
लिंगेन्नवेतपुत्रादिसंयुतः॥३५

अर्थ

जोसिद्धोसालिंगमेहोवेपरंतुलिंगके
उपरमोगिरहग्रंथिसोमिलाहै
घ॥गिरहद्वानहोवेजोलिंग
घडेमोशिरानाडीउढीऊबीपुती
तहोनेसोजीमोटाजोक्योलिंग
होपरंतुलिंगकेउपरकेचारो
तरफकेगिरहग्रंथिसोसज
क्षरहनेसोसुखीधनीपुत्रादि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को स्त्री सपन्न होके लोक मोसु
खी होने का लिंग सो प्रतीत होवे
है ॥ ध्या ॥ इति गारुडे पुराणे ॥ ६६ ॥
अध्याये ॥ अन्यच्च श्लोकं ॥

दीर्घलिंगेन दारिद्र्यं स्थूललिंगे
न नीर्धनः ॥ कृशलिंगेन शौ
भाग्यं ह्रस्वलिंगेन भूपती ॥ ६७ ॥

अर्थ

जो दिर्घ अंगुली के प्रमाण लिंग
होवे तो निर्धन होय ॥ स्थूल बडे
मोटा लिंग होने से निर्धन दरि
द्री होने का चिन्ह है पतले कृश
लिंग होने से सो शौभाग्य सुखी हो
य ॥ जाहि के अल्प छोटा लिंग के
उपर ग्रन्थी अरुण लाल वर्ण प्र
तीत होवे है ॥ सूक्ष्म पतले लिं
ग सो जुक्त होने सो राजा होने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

कालस्वरा॥तौ॥स्त्रीलस्वरा॥मि
लेतोराजाअवस्थहोतहै है॥

॥३६॥ श्लोक

कर्कशैकठिनैर्लिंगैः परदार
नः सदा॥ रमंतेचसदाहासीनि
र्धनोभवतिध्रुवं॥३६॥ अर्थ
जाकेलिंगमोयडोकडाकठोर
ताकठिनताप्रतीतहोवेतो॥प
रस्त्रीकेसंगसदारमणाकरेगा
सदाहासीवेश्याकेसंगरम
णाकरतेऊधनिर्धनहोनेवा
लिंगमोचिन्हपातीजहोताहै

॥३७॥ श्लोक

कृशानिलिंगेनसूक्ष्मेरारक्तानि
गेननृपतिः॥परस्त्रीरमतेनि
त्यंनारिनोवहुभोजवे तु॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जाके छठें स्थान सिंग होवे परंतु सू
र्य्यपतलाई बनै सो प्रतीत है।
और रक्त लाल वर्ण सिंग के ऊपर
सो प्रतीत होवे सो नृपती राजा हो
जा॥ परंतु परस्त्री धर्य कुल
शस्त्री वैरी रोगी बैठि चारि रोगी
नो को सुंदरी परस्त्री जो के सं
ग भोग करनतु वैवऊ और बीजवो
के भोग इनै सो प्रियवस्तुन
परस्त्री के भोग को आनंद होता है

जा॥३९॥ श्लोकं॥

कृशलिंगे नरः क्षेनलजतेचे।
नमांगना॥ राज्यसुखंचादि
व्यकृत्यकपाः पतिर्भवेत्॥३८॥

अर्थ

जा पुरुष के सिंग कृश होवे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कल्यानजोपतलादेषनेमो
प्रतीतहोवेयाजोलिंगकेउपर
मोरकवर्णकल्यानलालव
र्णदेषनेमोप्रतीतहोनेसों
उत्तमसुंदरीसर्वगुणसोंसं
पन्नदिव्यगनादिव्यसुंद
रीकन्याकेपतिस्वामीहो
केनानाप्रकारकेराज्यवि
भवकेसुषभोगकरकेजी
वनपर्यंतालोकमेसुषी
भोगाहोकेरहेगा ॥२१॥
इतिश्रीशिवपार्वतीसंवादे
तंत्रसामुद्रिके ॥

अन्यलक्षणवर्णनं

श्लोक

उन्नतोर्व्विपुलैः शंखैर्लला

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैर्थ्यिधमेस्तन्या॥ निर्धनो
धनवंतश्च ऊर्ध्वे दृश्यते नरः॥
॥ ५६॥ अर्थ
जा प्रानी के ऊंचे ललाट होवे॥
ललाट के उपर मों जो दो ऊंचे उ
न्नत उपर के चढ के पूर्ण प्रशांश
के चिन्ह प्रतीत होवे॥ अन्यच
ललाट के उपर मो रेखा ऊर्ध्व च
ढ के सहस रेखा प्रतीत होने सो
निर्धन के वंश मों जन्म है तो
परन्तु बडो धनी सुषी होगा
संसार मों बडो मान नीय पुरा
ली वह होगा॥ ५७॥ श्लोक॥
प्राच्याजन्मः शुक्तिविशाले:
शिराले: पपाकारिराः॥ उन्नत
नि:शिरा निस्तु षस्तिकानि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धनेश्वराः॥ ५॥ अर्थ॥

जपुरुषोंकेललाटकेउपरशुक्ति
कानामसीपीकसदृशरेषाके
शमध्यनाडीस्थिराप्रतीतहोवे
सोआचार्जसाधुमतीश्रीवि
राजिकेमध्यजनकेलोकमो
वंचकनष्टहोकेरहेगा॥ प
रंतुपापहीकर्मकेकरनोमो
याकेप्रीतीहोयेगा॥ जोललल
टपर३षे३षेपुनगरेषाहोवे॥
स्वस्तिककमलहूसकेसदृस
नाडीकेचिन्हप्रतीतहोवेतोवं
ऊंचनीयोमेअस्सरधनेश्वरहो
केलोकमेंविष्यातहोगा॥६॥

श्लोक

निर्मलललाटेवर्याते क्रूरकर्म
रतरस्तन्यासंहतेश्मललाटे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्तुकूपरा॥ उक्तैर्नृपाः ॥

॥ ८२॥ अर्थ

जाप्राणीकाललाटमेंनिमननि
चावीचमोबाल प्राप्तिहोयतो
वापुराणीयपकरयेकाजोस्यहे
जाहिनीचाललाटयापुराणीजो
येतीजीवनपर्जतदुस्वकर्म
कूरशुभावपापयुक्तहोवैसो
कर्मोविदितहोगा॥जाकेछोटा
ललाटहोकुपिराहोनेकोंयुधि
होयगा॥जाके ३ चाललाटहोय
तौराजाहोनेकाचिन्हहयाद

श्लोकु

ललाटोपसृतास्तिस्रोरेखास्युःशं स्त्री
तवर्षिणां॥ नृपत्वंस्यात्चतस्र
श्चिरायुःपंचनवत्यब्दा॥ ८३॥

अर्थ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जापुरषोके ललाटके उपरमोर्ते
नरेषा उत्पन्न प्रगट प्रतीत है
नेसो एकसौ वृ शतवर्ष कै रेष
मो प्रतीत होता है ॥ जाके ललाट
पर प्रगट चार रेषा होय तो द
जो मो ऐसा होयगा ॥ जाके ल
लाटमो पाच रेषा होय तो नवे
पाच पंचनवे पाच वर्ष कै
एक शतवर्ष कम एक शत व
र्षका आयु जिवने का प्रतीत
रेषामो होता है ॥ ५७ ॥ श्लो
क्रे रेषा ॥ पुनर्यातिविच्छिन्न
लि घुप घुला: ॥ के शांतोप
ता निघ्नुम्म शोत्याय नेरोब्बे

५८ ॥ अर्थ

जापुरषाके ललाटके उपरको
एक रेषा नही होय तो नवे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घेकाछुद्रायुजानिस्योजाहिलूला।
टकेउपरयकुंतरेखाछिन्नभिन्न
न्नप्रतीतहोयतोस्योपूरापीपु
बुललंपरपरस्त्रीपरधनचोरा
घनेकाभोगकररोकासप्हाम
नमोचीन्नाहोनेकालछुलहै
जोहिकोइस्केरआललाइकेउ
परकेशवलकेजडमलयेपूग
रेखाप्रतीतहोयतोकुसीयवं
कामसायुजीवनलाम्नहोकेसं
सारमोसुखपूर्व्वकसरीरको
त्यागकरेगा ॥५॥ = श्लोकं ॥
पंचभिःपंचभिःषष्ठैःपंचा
शद्दृऊभिस्तथा॥चत्वारिंश
द्व्युक्ताभिस्तिशतभ्रूःत्यग्रगा
मीभिः॥६॥ = अर्थ =
जाकेललाटपर पांचपंचदस
रेखाछिन्नभिन्नप्रतीतहोय॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहिस्थरहरेखाहोयजहिछु
रेखाहोयजहिचक्रजनरेखाहोय
ननेमेठीकनाहिमालुमहोय
तोएतनेरेखासोचालीसव
र्षकीआयुलक्षणरेखासोप्र
तीतहोहे॥जहिलक्षणकेउपर
रेखाएठाहोकेएकरेखाअंगु
ष्टीकेउपरप्रतीतहोयतोतीसव
र्षकीआयुरेखासोप्रतीत
होहै॥९४॥ श्लोकं
विंशतीर्वामनक्षाभिरायुःपु
ष्टीभिरषपंक्तौ॥नपन्नुवालेइ
निमेक्रुवोचालक्षणकै॥९५॥

अन्य

जाप्रराकेलक्षणकेरेखावाम
भागमेविशेषहोय॥किम्वा
रेखएठारेखाछोटेछोटेहोय

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोवीशवर्षकेआयुप्रतीत
होहै।जोदिनकुलीकेउपरका
रेखामोटाहोइकोइन्जकेचन्द्रमा
केसामुशरेखाप्रतीतहोताय
तोपरिपुरीआयुस्यकसत
वीसवर्षकेप्रतीतहोहै।जा
दिन्हकुलीकेउपररेखानही
हुतीयाकेचन्द्रमासादस्सहोय
ओनहीमोटारेखाहोयअतिसु
क्ष्महोयतोअतिअल्पआयु
रेखासमप्रतीतहोहै॥१॥

श्लोक

शुक्रमर्षेदुसस्थानमस्युक्रस्य।
दृश्योमंशीगानप्रतीतांश्चवेचित
ललाटेशुक्रस्पतांग॥२॥

अर्थ

॥ जाभुसोकेललाटमध्येन्कुकु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह्रीके उपर एक रेखा ऊर्ध्व चेहू
माके सदृसाम्यीत उच्चुरेखा
प्रतीत होवे जादि उच्चु लसार हो
वे जादि सलाट मध्ये रोम रहित
रेखा प्रतीत होवे ताजादि भ्रुकु
टि मध्ये रोम मिला न ही होवे
तो राज्य होवे वा राज्य सें सु
र्प भोग करतो वांचिन्ह श्
भ प्रतीत होवे है ॥ श्री ॥
इति श्री गारुडे ललाट शुभाशु
भ वर्णनं ॥ अथ जंघा लिख

श्लोकं

शुक्लः कमठ पृष्ठाभो गजस्कं
धोपमोन्नगः ग्रीवाभोन्नत स्कं
न्याजः पुत्र जो दासि रामोन्नतः

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जातकीकेजोनक्षत्रोंतनगक
मठकछुकछुपकेपस्केस
मानत्रगच्छुचाहोनेस्याद्धय
मध्रुस्त्रगकेलक्षणाहै॥
जोदिगजहस्तीकेकंपेकेस
मानउचजोनीहोयतोध्रुस
होजादिजोनिकेउपरयामध्य॥
जाकेउचापृतीहोनेसेवावृत
जोनीमोकन्याकाउत्पत्तिवि
शेषहोनेकाचिन्हहै॥जादिजे
निकेउपरहोहिनेतरफउचा
प्रतीतहोवेतोपुत्रविशेषहो
नेकालक्षणाहै॥ष्ठा॥ श्लोक॥
मधुरोमागूढमणिः सुस्नि
ग्धः स्पष्टनः पत्नुः॥तनूगः क
मलवर्णः शुभोऽध्युत्पद
याकृति॥ष्ठा॥ अर्थ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गास्त्रीकाजोनिकेउपरमोंचिह्न
रीविल्लीकेरोमशदूसाछल्प
ल्पाभिन्नभिन्नसेछोरा
मूवरमुवरवारप्रतीतहो८
तोजोनिअस्तहोय्याजादिजो
निगूरुगूप्रमिलिकेहोत्तरप
केसंपुटभिसाकुयामोराहल
होकेउचाप्रतीतहोकेकमल
पुष्पकेसमानसंपुटशुभ
संहरदेखनेमोप्रतीतहोनेसो
क्रूरजोनिकाचिन्हहैजादि
श्वत्थपीपलपत्रकेसमा
नत्रिकोणउचाहोकेप्रतीत
होनेसोउत्यमसुखशुभदाय
ककालसराहो॥८९॥

श्लोक

कुरंगखुररूपोयस्तुसिंहको

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरसंनिम्नःनारोमशोचिवृता
स्यअवदृश्यनासोउत्तिदुर्भगश्च।
॥प०॥ अर्थ
जानारीकेजोनिकुरंगमस्त्रके
षुरकेशादृसहोयाजाहिचुचि
चूलहोकेउपरपेटकेशदृसहो
याजाहिबकृतसंधनवालहोय॥
उंचाउंचाहोयजाहिजोनिको
मुषपृलकपृलकहोयेपद्धे
ढाडिम्यफलकेशादृसपुष्टिरहै।
होवेदृषनमोंभीतरकेमांसका।
लाश्यामवरा देषनेसोंपउ
दुर्भाग्यदुःषकाशुत्रकसेशोके
मायकजोनिकालसरापूती
नहोहोाप०॥ श्लोकं॥
श्राघावर्तोंगोयस्याःसाज

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेंभिन्नहोनेद्युति।। चिपिटःक
पैराकारःकिंकरिपस्ते अ
गः।।पद्य।। अर्थ
ज्ञानारीकेजोनिशंयकेसमा
नस्वेक्तरपरमोहास्वेक्तरप
पतलाप्रतीतहोनेसोपागत्रे
केनहींपाररााकेररावेकाप्र
तीतहैाावहत्याहोनेकाजोनि
मेंचिन्हप्रतीतहोहैाजहिंचि
पसावक्रतयालमुखप्रतीतहे
येखपराकेसमानहैयनेमें
प्रतीतहोनेसोलसराजोनि
काकिंकरीहासीओस्वकीद
रिद्रीदुःखीहोनेकाजोनिचि
न्हमेंसूचनभ्रुसुभ्रूमे
लप्रतीतहोहैापद्य॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथनासिकालक्षणं॥ ॥

श्लोक

वंशपत्रसपत्राभोगजरोमोच्च
नासिकः॥ विकटः कुटिलाका
रोलम्बगह्वरस्तस्याःसुभः॥ ५१॥

अर्थ

जास्त्रीकेबांसकेपत्रकेसमान
किंवाबेतकेपत्रकेसमानउच्च
नासिकहोवे॥ किम्बागजहस्ती
केरोमकेसदृसाकेशरोमनासि
काकेउपरहोय किम्बाचडेनत्र
यकरकुटिललंबायमानउचग
ह्वा॥ केठहोनेसेसोस्त्रहचिन्हस्त्रीका।
शरीरमेंअशुभअमंगलकोसू
चनकरावताहै॥ ५२॥ श्लोक॥
शोंखनाम्बोाकृतिर्योनिस्त्रीयाव
॥चक्रीर्तिता॥ तस्यास्तृतीये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यावर्त्ते गर्भेशा व्याप्रकीर्त्तित

॥५३॥ अर्थ

जा स्त्री के शंषका नाम्नी के सम

न जोनि होनेसों उह स्त्री वक्त

संतान कन्या पुत्र के उत्पत्ति

करावने वाली उह जोनि लोम

सों गर्भ होने का सेज्या रहने क

स्थान हो है ॥५३॥ ॥ इति जोनि रु

स्रां ॥ अर्थ कांघल स्रां

श्लोक

कक्षाउ च्चुल्यदला ऋस्तासुगंधि

न्युर्धरोमी का ॥ अर्थ त्यान्यहि

नानामसौनि स्वस्यचारो के

अर्थ

जा स्त्री के की म्यापर स्वकेकक्षा

नाम का वके सामो अक्ष्युल्य

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीपलकेपत्रकेशदृसहोनेसे
ऐसफलहै।जाइंकेघामोसु
गंधवसहोय उ॑धउ छुकोच
हैऊवेरोमप्रतीतहोयतोयडो
ऐसेसुखदायक लक्षण है३
रिपीपलकेपत्रकेसमानकंय।
नहीहोवसुगंधकेघामोनही
होयतोउर्धरोमनहीहोयतो
उहकेघामोफलदारिदृतको
देवावनेवालाहै॥ अथमप
लनहीहै सचारराफलजा
नानाजोग्यहै॥पत्रा
पुनरूजलसरा॥
श्लोक
निर्मासौचैवत्रग्राल्पौष्ठ
द्रौचविपलौत्र जो॥ऊजा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नुसंथिनौवा हृवृतौपीनौन्हूवे
झुरे ।।५५।। अर्थ
आपूरगीकेजुजाकेउपरमोंमो
सन्योरापूलीनहै। उवेरावरा
वजेअूस्समोंहामुजाहोनेसो
सुषहूायकहै। जदिजानूघो
रूपूजौतलंवायमानहीर्घव
हू पुरूषकोहायतोवेउाय
मअेस्सराजाहोकेनानापूव
रकेसंसारकाभोगसुषके
करतोवालाजुजामहाराज
होकेलोकमोपूगटहोयगा
।।५५।। श्लोकं
निःश्वानोरोमसोदूस्योन्न
जौहारि हूहायकोाअरोमहे।
नुसुषिनोअूसोकरिकरपू
भौ।।५६।। अर्थ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाकेभुजाकोउपरवक्रतरोम
होयअल्पछोटेछोटेभुजाहो
नेसोदारिद्रदुःखकलेशकेदाय
कअसुभभुजामोंलक्षणहै
जेहिहस्तीकेसंठकेशूकसलै
वायमानअल्पतोरेरोमवा
लेभुजासुखीहोनेकालक्षण
सोप्रतीतहैकीअसभुजाक
हीएहैजामेन्योरेरोमहोतो
रेमांसप्रतीतहोयलंबाय
मानहोयसोईभुजाअसस
ख फल है है॥पहा॥

इतिभुजालक्षणं॥

अथजंघलक्षणं॥

श्लोक

अल्परोमयुताःअस्राःजंघ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हस्तीकरोपमा॥रोमैककं
पकेस्यात्नृपानांतुमहाम
॥पत॥ ——— अर्थ ———
जाकेजंघकेउपरमोंकमलपन
रारोमहोगासोजंघाअतिसुख
भोगकेदायकहे॥जोहस्ती
केसूंठकेसमानउपरमोटाहै
नीचसोपतडोअतिसूठकेस
मानपतडाअरुतरावजंघाहोय
तोअतिसुखकेदेनेवालीहोते
जंघकेउपरमोएकएकरोम
केछीद्रमोएकएकहीहोयरो
मतो॥वडोराजामहाराजकेचि
न्हमोजंघाकेफलसोंमहार
ज्यसुखएश्वर्जभोगकेदाय
करोमएकहीमेअतिसफलहै
जोहिजंघमोरोमकेछीद्रस्न्या

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नमोहोतापूनीतहोयतोवडोपं
डितज्ञानीशास्त्रज्ञेवुपमान
होनेकालस्रराजंघेमारोमहो
केहोनेसोपंडितहोतहैहौरहो
हेरोमबरावरजंघामोसंपूर्ण
होनेसोवेदपाठीसंपूर्णवेद
वेदांतकेपढनेवालाश्रवना
द्योपनिषदादिकतत्वमसी
नामहावाक्यकेअर्थकेज्ञात।
डोमहापुरुषब्रह्मज्ञानीहो
काचिन्हहै।।पृच्छा == श्लोक ॥
नत्रयंत्तरिद्वारासोगीनिर्मा
जानुक:।।महाहारिद्रजंघ
कारोमचतुर्थकोपृच्छा

== अर्थ ==

जंघेकेउपररोमत्रयहो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिनातिनरोमएकत्रमिलकेहै
यतोद्धारिद्रदुःखरोगकेहाय य
जंघहै जोहिमासएन्योराजंघेमे
प्रतीतहोयपतोदुःखहीकेहाय य
कहोयहै॥जोहिचारचाररोमए
कत्रहोयतोवडोद्दारिद्रताके
जोगकरनेवालापुराणीजंघे
केरोमचारचारहोनेसोदुःख
हीकोंजोगकरेगा॥याम्नेंनहीं
संदेहजाननों॥पद॥

इतिजंघेरोमलक्षणफल॥

अथचरणलक्षण॥

श्लोक

निगुढगुल्फोपतितोपस्थक
तिनलोष्ठश्चजो॥अग्रअंगुरिनौमृद
तलौमतस्यांकमकरांकितौ
॥पहगा॥ अर्थ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जापराणीकेचरणतलेयुठयस
फरहेंडीपारहिंछोटाहोयकमल
केसमानसुंदरपहतलेप्रतीति
होयअंगुष्ठह॥पशेनाचरण॥
मोंनहीहोय॥वडोकोमलहो
नेसोअंगुस्टफलदैहै॥जाकेच
रणजलेमनुसमछरीकेचिन्ह
होयतोवडोराजयनोगकेदा
यकहोहै॥जदिमकरगृहके
चीन्हहोयतोवडोप्रतापीसु
षीहोकेनानाप्रकारकेवाहन
परचलनेकाचिन्हहैयहप्र
राणीवडोअंगुस्टसुषाकेपावेगा
॥पद्य॥ श्लोक
वज्राजहसांचिन्हो वहास्या:
यहयहास्त्यतो राजपत्नीनु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साज्ञेयाराजभोगयुक्तहोयकौ

अर्थ

जाकेचरणतलेवज्रकेचिन्ह
यजाहिकमलकोचिन्हहोय
जाहिहललांगलकोचिन्हहो
तोपुरुषराजाहोयस्त्रीरानी
यजाहिदासीकेचरणमेंरथ
चिन्हहोयतोदासीभीरानी
होयराजसुखभोगकरेगी
जाहिदासकेचरणमेंरथहोयचि
न्हहोयतोदासभूराजहोसुख
भोगकोप्रापय्रयहोभोगके
गा॥६०॥ श्लोक॥
जंघेचारोमराहितेसुवृत्तविशि
रेशुजे॥कन्नतुलवरासंघिदे
शेसमंजानुहृयंशुभं॥६१॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जास्त्रीकेजंघेकेऊपररोमबाल
नहींरहनेसोश्रेष्ठजंघाहैजा
केजंघेमोनाडीनहींप्रतीतहो
यतोश्रेष्ठहैऔजंघेकेसंधि
मिलनस्थानमोजोहृदयकुतन।
ौत्रिकोणचिन्हनहींरहेतोश्रेष्ठहै
औरसमानबराबारदोऊजंघाहो
नेसोबडोश्रेष्ठसंतानारिकु
सुखकोदायकजंघाहै॥६१॥

श्लोकं

ऊरूकरिकराकारावडरोमौच
समौशुभौ॥रोमजंघौचनारी
नामहादुःखप्रदायकौ॥६२॥

अर्थ

जास्त्रीकेजंघेहस्तिकेसुंढके
समानहोयतोश्रेष्ठहै॥जीह
रोमनहींजंघेकेऊपरमोण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

लीयोकाहोयतोवडेश्रेसफ
फलयनर्धान्यपुत्रकलत्रसं
जुक्तसुखकेदृष्यकश्चरामज
होहै।जोदिस्तीयोकेजघकेजं
घकेउपरमो॥रोमवज्रुतहो
नोवडोदुःखकलेशकेहनेवा
लाजंघमोंफलअशुभप्रती
नहोवैहै॥६२॥

अथपगत्यपलस्रां

श्लोक

अश्वत्थपत्रसदृशांघ्रिपुलं
स्यमुत्तमं॥पद्मकोशामवं
क्षेसंगत्यचारुर्मुनीश्वर
६३॥ अर्थ
जाकेगुल्यपस्तपान॥गुह्राम
र्गा॥अश्वत्थ्यात्या॥पीपलकेप

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकेसमानदेषनेसोप्रतीतहै
यातिक्या॥कमलपुष्पके
संपुटकेशहसापूतीतहोनेसे
॥स्त्रीकीम्वापुरुषदोकेशुक्ससू
चकगुह्यमार्गसोप्रतीतहै॥
जोदिसहहैचिन्हसोवीपरीत
गुह्यमार्गहोयतोउभयमफ
लकोकहहिनहीहै॥कीं
कलेशहीकोंहेहै॥६३॥

अन्यसर्व्वांगलक्षणं

श्लोक

श्रोणीललाटंकस्त्रीणां॥मस्तकं
मर्मारतंशुभं॥गूढोमणीश्रुश
सोनितंवंशुगुरुशुभ॥६४॥

अर्थ

स्त्रीलोगकोजंघाहैललाट

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीयोकाहोयतोवडेअरुसफ
फलयतनपान्यपुत्रकलत्रसं
जुक्तसुखकेदेयकअरुरोमजंह
होहै।।जोदिस्त्रीयाकेजंघकेजं
घकेउपरमो।।रोमवहुतहोत
तोवडोदुःखकलेशकेहैनेवा
लाजंघमोफलअशुभप्राप्ती
तहोवेहै।।६२।।

अथगुल्फलक्षणं

श्लोक

अश्वत्थपत्रसदृशौयदिगुलं
फमुन्नतं।।पद्मकोशमिव
श्रेसंगुल्फंचकुर्मुनीश्वर।
६३।। अर्थ
जाकेगुल्फपत्रपात्र।।गुल्हाम।
गी।।अश्वत्थ।।पीपलकेप

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नकेसमानहैघनेसोप्रतीतहो
याकिम्या॥कमलसपुष्पके
संपुटकेशहसोप्रतीतहोनेसें
॥स्त्रीकोम्यापुरुषहैकेशुन्नसू
चकगुह्यमार्गसेंप्रतीतहै॥
जोदिस्त्रहैचिन्हसोवीपरीत
गुह्यमार्गहोयतोउपमक
लकोकहीनहीहैहै॥कीतु॥
क्लेशहीकोंदेहै॥६३॥

अन्यसर्व्वांगलक्षणं

श्लोकं

श्रीरामीललाटकंस्तीरा॥मरुकु
र्म्मीरतंशुभं॥गूढोमणी॥शुभ्रशु
भ्रदोनित्तंयज्ञगुरुशुभ्रः॥६४॥

अन्य

स्त्रीलोगकोजंघाहै॥ललाट

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसेकुर्मकछुपकेपिसटकेसम
नहोय्यतो॥वडोऐश्वर्यफलहै॥तो
ऊंचेकंठकेनीचेहोतरफके॥मांस
वडोउचहोयतोऐश्वर्यफलहै॥रहे
यांके॥स्तनहैमोटा॥उच्चहोने
सोंपुत्रादिकसंपूर्णसुखकेहे
नेवालाहे॥जाहिस्त्रीकेबहुतेहे
रास्तनहोयकेनीचेकेहवाहो
स्तनकेउपरमोंरोमकेशहोय
तोस्त्रीकासतना॥हिकोंकासुख
नहींहोनेकालसरा॥मोपूतीत
होयहे॥६६॥अल्पनाचीलसर

श्लोक

विस्तीरणीमांसोपाचितागंभिरा
विपुलाशुभा॥नाभिःप्रहसिरा॥
यंतामध्येत्रिवलिशोभनं॥६७॥

अर्थ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रीयोंके॥नाभिकेऊपर॥चारोत
रफसोंऊंचामांसहोय॥नाभीके
ऊपरत्रीवली॥पेटीवडाहोय॥ना
भीगावडोगंभीरगुप्तहोयतोवडे
ऐस्सुखसंपत्तिहोय॥नाभी
भीदाहसिरा॥ ॥दहिनावर्त॥ना
भदहिनेतसोंघूमकेप्रजितहोय॥
नाभीके॥भीतरमोत्रीवलीहोय
तो॥वडोसुखऐस्वर्जसोंसंजुक्त
पुत्रादिकोकेसात्यवडोऐस्सुख
भोगहोनेकाचिन्हहै॥६५॥

श्लोक

ऊरोशौस्तनौपीनौघनावडवि
षमौशुभौ॥मृदुग्रीवाकंवुसमा
ऊरोमोरसिकेशुभौ॥६६॥ ॥अर्थ॥
जोप्राणीकेस्तनमोंरोमनहीहो
य॥ऊो॥वडोउंचसमानहोय॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिलाजुउहोय॥ पीनमोठाहोय
तोअैसस्तनहोयहै॥ कंठकोम
लहोय॥ कंवशंखकेसमानकं
ठसोउत्तमफलहोहै॥ जाकेउर
सछातीकउपर॥ मोमनहीहोतो
यतोअैसफलकोहायकवडो
सुखभोगकोंकररोवालोहोयहै
॥६६॥ अत्यमुखवर्णनं ॥

श्लोक

आरक्ताधरोअैसौमांसलंबर्तुलं
सुखंकुंदपुष्पसमादंतास्त्राखिनं
कोकिलासमा॥६७॥ अर्थ
जाप्यारीके॥ मुखकेनीचेकेउस
उपरकेउस्टद्वयसमाना॥ आर
लालवर्णहोनेसोअैसफलहै॥
उस्टकेउपरमांसधिसेखमोटा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसहोवे ॥ वर्तुलाकार गोलमु
खहोनेसोंअस्पष्टकोहै होतो ॥
कुंकुमद्याकेपुष्पकेसमानदे
तसुंदरअतवर्ण प्रतीतहोनेसों
यलोअस नानाप्रकारकेभोगक
रेगा ॥ इतअहसुन्दरहोनेसोंजो
जनमोंयशोसुखदायकहोते तो
जाकेबोलनेमोंअस्वचनको
किलाकेस्वरकेसमानमधुरश
ब्दमुखमों होनेसों उत्यमसुखके
देनेवालोसोंमुखहोहै ॥ ६१ ॥ ॥

श्लोक

हास्विरम्यं पूर्णमशठं तं सशब्दं
वाचहे ॥ नासासमासमधुरस्व
रांनुरुचिराशुभा ॥ ६२ ॥

अर्थ

जाकेमुख ॥ दृसिरा ॥ वर्तहोय ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वडोप्रेमजुक्तकोमला॥तेसकेश
कृके॥समान॥मुखकेयोसनहै
नैसोंवडोअरसुखसंभोगके
दायक॥यहसुखशाबमोंप्रती
तहोहै॥नासिका॥जाकेसमान
हैसंपुट॥बरबरप्रतीतहै॥उच्च
नासिकामध्ये॥अंकुरा॥लरा
बरी॥नासिका॥दृढतानसों॥वडे
अरसफलदेनेवाली॥सिखाकर
रा॥बरी॥यासी॥होयहै॥६४॥

श्लोक

नीलोत्पलनिभंवसुर्नासात्र
ग्रैनलंबकौ॥नभ्रन्मुखीलदुति
भौरत्रुवौचान्यललाटको॥६५॥

अर्थ

जाके॥नील॥श्याम॥कमलके
समन॥नेत्रहूयहोय॥नासि:

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केउसेलग्न॥लागिके॥चल
ठोय॥होकरी॥केसामनेमें॥
वऊतलैयायमानतहीजोहेत
यतेवऊअनेस्नेवमेंभ्रूस्त
फलदेयनेमें॥ज्ञासतहै॥
की॥कौचितलालवरी॥तानेय
नकामध्येहोनेसों॥उत्स्यमप
सकेहेहै॥ज्ञावालचंद्रमा॥हो
नी॥याकेचंद्रकेसमन॥भृकु
टीहोय॥वऊतवऊ॥मृतानहो
होयाकिंचित्धनुषकेसमान
होय॥भृकुटी॥ललाटकेउपर
में॥सुन्दरप्रतीतहोनेसों॥वऊ
भ्रूस्तफलकेदेनेवालाहै॥हेत्॥

श्लोक

शुभमर्धेंदुसंस्थानमत्पुंगस्य
हलोमशं॥कुमामलंकरोयगं
समंभ्रूद्वसमाहिता॥७॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

जाकेकरांगुष्ट॥बालचंद्र॥हे
तियाकेचंद्रमाकेसमानहोय॥
वउ॥उचकरांगुष्टहोय॥रोम
नहीहोय॥मलस्यामता॥नहि
होयमृदुकोमलहोय॥तोसे
चिन्हकरांगुष्टसमनहो॥नेसे
यउत्कृस्टफलकोदेनेवाला
रोहोयहे॥७०॥ श्लोकं
स्निग्धानीलाभ्रमस्योर्ध्व
जाःकुंचितैकजा॥स्त्रीणां
मंशिरःकृस्नंपादेपार्शातले
न्या॥७१॥ अर्थ
जाभारीके॥केशा॥स्निग्धा॥नी
मा॥वउ॥सुन्दर॥कोमलसा॥चि
कनहोय॥नीला॥स्यम॥नी
स्वरीकेसमानहोय॥कि

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थितन्योरा ॥ कुटिलरेखा ॥ उप
रमोकेशहोयतोवडोऐसफल
हैहै ॥ विशेषते ॥ स्त्रीयोके ॥
शिखरावरहोनाऐसहै ॥ चर
णाद्वय ॥ हस्तद्वय ॥ समान
शावरहोनेसोस्त्रीयोकेउत्तम
फलयेहै ॥ ११ ॥

अन्यहस्तपदहनानाचिन्हदर्शने

श्लोक

वाजिकुंजरश्रीवृक्षयुपेषुय
वतोमरैः ॥ ध्वजचामरमाला
त्रिशैलकुंडलवेदिभिः ॥ १२ ॥

अर्थ

जोघोडा ॥ के ॥ हस्तमध्ये ॥ कि
म्वा ॥ चरणमध्ये ॥ स्त्रीको ॥ वा
मभों ॥ पुरुषके ॥ दहिनेमों ॥
ऐसीचिन्हकेरेखा होयतोऐस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फलहै॥ घाउकेचिन्ह॥ हस्ती
केचिन्ह॥ कल्पवृक्षाकेचिन्ह
जहुकुंडकेसम्नै॥ यज्ञयंत्र
केचिन्ह॥ जलकेचिन्ह॥ तोमर
केचिन्ह॥ धुजाकेचिन्ह॥ चा
मरकेचिन्ह॥ मालाकेचिन्ह॥ प
र्वतकेचिन्ह॥ कुंडलकेचिन्ह
पजयोदिकेचिन्ह॥ एतेचिन्ह
जेदिशांपूर्ण॥ लक्षण॥ होयतोश्री
लक्ष्मीनारायणके अवतारके
लक्षण॥ सोवडोचक्रवर्त्ती राजा
के॥ लक्षणपदमोचिन्हहोहै॥
जहिएकहुहोप्रतीतहोयतोव
डोजसफलकेदनेवालाहै॥ इल
तैचिन्हहो॥ ७३॥ ═══ श्लोकं
शंघातपत्रद्वैशुमनस्यस्यास्ति
कसंदूयेः॥ लक्षणारकुशाद्यै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्ति यःस्युःराजवल्लभाः॥७९

भाषा

जाके हस्तचरणमो॥शंख॥छत्र

कमलपुष्प॥मत्स्य॥मकरी॥

पताका॥उत्यमरत्य॥अंकुश॥

इतनेलछण॥जोहोयतोपुरुष

राजाहोहै॥स्त्रीरानीहोहै॥वामे

हस्तचरण॥स्त्रीकेदखनो॥दहि

नेहस्तचरण॥पुरुषकोदेखनो

इहीसबलछिनसोसंसारमोसु

खहोनेका॥सुचकलछण॥वि

पिवलमाष्प्रण॥याकेहस्तचर

णमोलिखदेहै॥७९॥

श्लोक

निगूढमणिवंधौचपद्मगर्भो

पमौकरौ॥नातिनिम्नौनोन्नतौरौ

नवेत्करतलंशुभं॥८०॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जाकेहस्तचररा के मोटा होय ॥ मीरावे धना ॥ ग्यपकुचा ॥ मोटाहो य ॥ मांससेपुररहा होय ॥ कम लकेपुष्पकासमान अंगुलिकोम कमलदलकेनीलरमोजेसप्र नीतहो ॥ वैस्यहस्तहोनेसोवडे ऊंचेनहीहोय ॥ अत्यंतनीचाव तीहो ॥ ग्रासमनहस्त होनोस्त्री स्त्रीयोंकावडोनास्यके ट्वाव नोवासो ॥ यह चिन्हसोपूर्वीन होवेहे ॥ ए हीरे खासोराज्यस्त्रोर केप्राप्त होहे ॥ ७ ॥ श्लोके रेखा निवतांस्व यवाकुर्यात सन्तोगिनी स्त्रिय ॥ रेखायुग्मा त्यंतलग्नासुखभोगप्रदाशुना ७५ ॥ अर्थ

जास्त्रीकेहस्तके ॥ रेखामिसके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैरेषा ।।सं जुक्त प्रीतहोवे ।।
जोद्दा ।।अंगुस्ट ।। तर्जनी ।। दोंवेंको।
मध्यस्थानसोजोहैरेषा ।।वेड
वडोपुस्ट होकेचला हो सोई रेषा।
जोरिजउतलाभिलरहाहोयतोस्त्री
कावडाभाग्यहोहैविषवानहो
तोहै ।।आपनेपतिकेसंगमोन।
नाप्रकारकाभोगसुखकरेगी
हैरेषास्ेकत्रमिलरहनेसोंसुख
भोगकोसहायाप्राणीकोंहोवे
है ।।७५।। श्लोक ।।
रेषायावरिांवंषोलयागतामध्यं
गुलीकरे ।।अताप्रारितलेयाच
ओर्षपाहतलेरिलता ।।७६।।

अर्थ

।।प्राणीके ।।मारिांवंषनाम
ऊचेकोा ज उसेआरत्रअंगुठेके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपरमोचलके॥मध्यमाअंगु
लीकेमूलेजउनलेमिलयेप्रतीत
जोरेखाहै॥वाहीरेखाको॥स
मुद्रिकशास्त्रमो॥उर्ध्वरेखाना
कहेहै॥सोईउर्ध्वरेखा॥हस्त
होयकीवाचररामोहोयतो
धीरेखाहोनेसोंनानाप्रकार
सुखभोगहोनेकासूचनउर्ध्व
खासोंप्रतीतहोहै॥७६॥

श्लोक

स्त्रीरांपुंसांतथायासाम्यात्
राज्यायपचसुरायचपुत्रपौ
त्रादिसंपत्प्राप्तोर्ध्वरेखासुख
दा॥७७॥ अर्थ
उर्ध्वरेखाहस्तमोहोय॥तोसंप
तीफलहै॥जोइचररामोहै
संपूर्णराज्यसुखभोगवि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यापुत्रपौत्रादिकसोंसंजुक्त होके
इसलोकमोंबडोसुखीहोकेर
हेगा उर्ध्वरेषाजुक्तप्रारणी अव
श्यसुखीहोनेकाचिन्हहोय॥

श्लोकं

कनिष्टामूलरेखातुकुर्याच्चेव
शतंसुखंअनामिकमध्यमा
न्यांअंतरालग्रतास्मृती १२॥

अर्थ

जाप्रानीके॥कनिष्टका॥छो
टीअंगुलीकेमूल॥जडतले॥रेखा
कोईछोटारेषाप्रतीतहोयतो॥
एकशत॥एकसयवर्षको
आयुजीवनेकारेषासोप्रती
तहै॥जाईअनामिका॥३॥
मध्यमाअंगुलीकेमध्यस्था
ना॥एकरेषाकोई॥उपरसो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलके ॥ नीचे के तरफ मों ॥
गिरायें तो हरे यार स्त्री के हस्त
में रहने सो ॥ पतिब्रता स्वती स्
भाग्यवती होने का लक्षण है
जो पुरुष का होय तो वह पुरु
ष धर्मशील सत्यवादी सुखी
नी होगा लोक मो प्रसिद्ध होवे
नाना प्रकार के सुख भोगवे
गा ॥ ७२ ॥ श्लोक
उन्ना उन्नायुषं कुर्य्यात्रेखा चा
गुष्टमूलगा प्रक्षयः पुंसां स्त्री
स्त्रा प्रमदा परिकीर्तिता ॥ ७३ ॥

अर्थ

अंगुष्ठ के नीचे के रेखा मो ज
दि ऊँचा हो नीचे नहीं [illegible] प्रतीत हो
य तो अल्प आरोग्य आयु प्रतीत
हो है जो अंगुष्ठ के मूल तले

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूरीरेषाहोयतोपूरीआयुपू
र्णहोहै ॥ अंगुस्टकेमूलकेनी
चेमोंजीतनीरेषाहै ॥ सोसन्ते
मोरहोता ॥ लंबोलंबरेषापु
ष्टहोनेपररेषाहै छोटछोटेरे
षापतलेपतलेरेषासोकन्या
होनेकाचिन्हहै धननाहै ॥७॥

श्लोक

अस्यायुषरेखाघृछिन्नाहीहि
छिन्नामध्यायुषश्चैतुलक्षणो
प्रोक्तंप्रत्यक्षंमन्यपा ॥८॥

अर्थ

अंगुस्टकेनीचेकेरेषासन्ते
मोहैधना ॥ त्योरआयुवार
कहोनेमोछोटारेषामोहि
न्नभिन्नमालुमहोगा ॥ जहिंच
ओरेषाहमेकेछिन्नहोयतोच

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐश्वर्य जीवने का प्रतीत हो है
ऐसी समझे शुभलक्षणा स्त्री पाव
श्री हस्त मे होने सो क्रूर फलै
जो इस्ने चिन्ह नही होय तो इ
ह फल जो कहा है सो नही हो
जो स्य है ऐसा प्रकार फल
चलाचिन्ह सो होगा ॥८०॥
इति शुभलक्षणा ॥ अथ अ
शुभलक्षणा कहा ॥ सो
कनिष्टिका नामिका प
स्यान स्पृशत महीं ॥ अंगुस्त
या गलाती त्यत र्जनी कु सदा
चसा ॥८१॥ अंत्ये
जा स्त्री के ॥ कनिष्ठा नाम च
रा के ॥ छोटी ॥ अंगुली है

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोटीअंगुलीकेपासकोअ
नामिकाअंगुलीतासेंहीहो
तसिप्रीतिचीसेउष्णाउचो
चलनेसोप्रतीतहोताकींया।
अंगुस्टा॥अंगुलीकेउप
रमोचरुके॥तर्जनीअंगुली
होयतो॥बहस्त्रीकुलटापर
पुरुषकासंगमोभोगकरनो
वालीस्त्रीरही॥होनेकालसरा
मोप्रतीतहोहै॥८१॥ ॥॥ श्लोकं॥
ऊर्ध्वहृाभ्यांपिंडिकाभ्यांजंघे
चातिशिरालके॥रोमशोचा
तिमांसेचकुंभाकारंतन्योहरं॥
॥८२॥ अर्थ
जोनारीकेजंघमोउपरके
तरफ॥बडोमोटाप्रतीतहोय

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जे घोडेका नाडोंमे शिरा शोर से
प्रतीत होय ॥ जे घोडेका वृतरे
मे होय तो ॥ जे घोडेंका मास्या
न प्रतीत होय ॥ कुंभ घोडेके
समान ॥ जाके उदर पेट होय ता
को तनोल स्त्री की कुक्षि
मे देनेवाला है ॥ ८३ ॥

श्लोक

वामावर्त निम्नमल्पं कुक्षिं
नोच गुह्यकं ॥ ग्रीवा हस्वं
यो निर्वाति धीयाचकुलस्त्र
यः ॥ ८३ ॥ अर्थ

जा स्त्री की वामावर्त नाभि
होय ॥ वामावर्त गुह्य गह्वर
होय ॥ छोटा ॥ नाभी होय ॥
छोटा ग्रीवा कंपे होय ॥ जो
नित्य गाव डो ॥ लंबाय मान

होयतो वेसनहीहोनेकाचि
न्हहै ॥२३॥ ==== श्लोक ॥
प्रफुल्लयाप्रचंडाश्च स्त्रियः
स्युनीत्रसंशयः ॥ केकरीपिं
गलेनेत्रे प्रायावलोलेक्षणा ॥
सती ॥२४॥ ==== अर्थ ॥
जानारीकै ॥ बडेमोटेकपो
ला गलगाला ॥ होवेसो ॥ बू
डेकलही ॥ दुस्वावकपयामी
होगी ॥ जानारीकेनेत्रमो
हरिद्रावरा होय ॥ मंजारि ॥
विलीकेनेत्रकेसमाननेत्र
होय ॥ जाईनीचानेत्रहोय ॥
जाईचेचलनेत्रहोय ॥ चप
लनाकुंगवाली ॥ नारीचरि
चारियो होवेहे ॥ दुस्वच

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नरकके हनेवाली होहै॥२६॥

श्लोक

स्मितेकूपेगंडयोश्चसापूर्वं
व्यभिचारिणी॥पुंसंविनो
ललाटेचेश्वरंलभेच्चांगना
॥२७॥ अर्थ॥
जोनारीके॥कपोल॥गाल
केउपरभौ॥कूपा॥भ्रमताकी
छाहींप्रतीतहोयतोबहुव्य
भिचारीणी॥परपुरुषसंग
सोभोगकरनेवालीहोहै
निश्चय॥जोनारीकेबडे
लंबमानललाटहोयतोअ
पनेस्वामीकेछोटेभ्राता॥
नामजोदेवरता॥ताहीदेवर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौंमाररोवालीहोनेकाचिन्ह
सोंप्रतीतहोवेहै॥२७॥

श्लोक

उदरेश्वसुरंहंतिपतिंहंतिदिपरचो
र्ध्वयोः॥याजुरोमोत्तरोस्त्रीस्यात्
शुभाचोर्ध्वरेखाहि॥२८॥ ||| भाषा ||
यानारीकेउदरमोस्यामताहोय॥
बडोउदरहोयतोआपमेश्वसुरके
माररोवालीहोवेहै॥जोदिउदर
ऊर्ध्वउपरकेचरुफोयतो॥पति
केमारनेवालीहोवेहै॥जोनारी
कोउपरउदरके॥मोछकेउपर
बाररोमहोयतोबडोशुभहै॥
मातावंश॥पितावंश॥[illegible]
श्वसुरवंशत्रयकेदुःखदेनेवाली
होहै॥२९॥ श्लोक
स्तनौसरोमावशुभौकरौ चवि
षमौतथा॥करारा॥विषमाइं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

नाः कलेशाय च भयायचा॥ २

भाषा

जो नारी के स्तन के ऊपर मो रोम
होय॥ तो वडो अशुभ है॥ जो ना
री को कंठ हि यवि षमा वडो छो
टो होय॥ जो दि हि न वडो वडो होय
समान वरावर नहीं होय तो॥ व
ड़े दुःख के देने को अशुभ लक्ष
ण है॥ दुःख है के को भय त्रास के
देनेवाली होवे है॥ २७॥ श्लोक
चौर्य्यायकुरुते मांसल्वं हीं ग्रा
गुल्फतयो॥ कव्याट रूपे हि सौ
अवूककका हिंसा नि शः २८॥

भाषा

जो नारी के हाथ के नीचे मो मास
उठा उठा उ चा पूती न होने सो प
चोरकर्म मो चतुर होगी॥ जो

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैतचऊंचऊ॥ किन्या॥ हैतहोत्तं
वायमानहोनेसौंश्रपनेस्वामीको
मृत्युकौंहेगी॥ पतिरहितविधवा
होनेकालक्षरासों प्रतीतहोहै॥
जैसिंकाककेसमानकन्याचक
केसमानगऊपूंकेसमानहस्त
कर॥ प्रतीतसों॥ पतिविहनताके
लक्षरासूचनहोहै॥ २२॥

श्लोक

शिरालैर्विषमैःशुष्कैर्वितहीन।
श्रवंतिहि॥ दुःखितापापिनिनता।
चर्तुर्थनाडीचऊधिकमेंगा॥ २३॥

अर्थ

जोनारीकेवक्रुतहस्तपदादिक
अंगप्रत्यंगमेंगायऊंचऊंगमोर।
मोटा॥ नाडीप्रतीतहोनेसो॥ धन
हीनदरिद्रीपापीनीदुःखीनी।
कलहीनाव्यभिचारीरा॥ होनेकी।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिन्हमोंप्रतीतसाहै ॥२८॥

श्लोक

समुन्नतोतरोरुस्त्रीयाकलहैरह
केशिनीमरुच्छ्रीप्रुरोयाविरूपाम्र
पत्राकरोउग्रगस्ततमासा ॥

अर्थ

जानारीकेउपरकेउरुहवओमोट
हस्तहोथकेउंचाहोयाकेशमोगाम
सामरूपर प्रुधराकेशकेवाल
प्रतीतहोयपतो ॥ सोईनारीकल
हीहोहै ॥ कलहमोंप्रतीछ्यरहै
नेत्रजाकेउचकरमालुमहोय
है सोकलहीहोनेकालहोरा
हो ॥ यहसंपूर्णक्रमसजलह
रानारीकेअंगकानिरूपनकि
याहै ॥ ॥ इतिगारुडेस्त्रीलक्षण

श्लोक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कांतिस्सातिसमाञ्जत्यमध्यमा
यामुपागता॥ अस्त्वयंयापुत्र
कुर्य्यात्सायुरेखानुमानयो॥८१॥

अर्थ

जाव्रारीकेहस्तमध्यांगुलि
स्त्रिकांगुलीसोंआरंभहो
केमध्यमांगुलिकेमूलपर्य
र्यंतरेखाहैवहउमोरहाजा
नेसोमासाठिहै॥ यर्थकेआ
युजीसनेकारेखासूचनकरेहै
याहीनहींसंशयजाननेजाग्य
है॥८२॥ श्लोकं
यस्यास्तुकुंचिताःकेशाःमुखंच
परिमंडलं॥ नाभिश्चदक्षिणाव
र्ता:साकन्याकुलनायिनी
॥८३॥ अर्थ
जानारीकेमस्तककेशकुंचित

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किंचित्‌तेठाहोकेमुषकेउप
मोघुमकेफकफलजायतो ३९
मैहा॥यदिदक्षिरागावत्तना
मंडलहोयतोवेवहकन्याक्ष
नोंकुसमाव्वकेवठावनेवाली
घीहोगी॥८१॥ श्लोक
याचकोचनवर्णामारक्तहस
करोरुहः॥ सहस्त्रैतवापिना
र्शा॥न्नचेत्‌साचपतिवता॥

अर्थ

जानरीका॥शरीर॥केचन
वर्णकेसमान॥वर्णहोय॥
॥३॥हस्त॥चरण॥मख्यारक्त
वर्णलालकमलकेसमान
अरुणावर्णजासमानहोने
॥यहस्त्री॥हजारहोंस्त्रीके
धयवडोधर्मशीलवडोसखे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुत्रपौत्रादिकोंसोंसंपन्नहोकेक्र
पनेपतिकेसेवासोंनानाप्रका
रकेसुखभोगकरेगी॥२७॥

श्लोकं

रक्तकेशाचयाकन्यामंडूसा
सीनुयान्नवेत्॥भर्तारोम्रियते
तस्याःनियतंदुःखभागिनी॥

॥२८॥ अर्थ॥

जोनारीकेओररक्तअरूणावरी
केशकरोमहोयऔमंडूसाजो
सानेवालीस्त्रीकेनयनकेसम॥
नानेवाली स्त्रीकेस्वामी
अवश्यमरेहै॥विषवाहोके
आजन्ममरणापर्यंतनानाप्र
कारकादुःखकेभोगकरेगी

॥२९॥ श्लोकं

पूर्णचंद्रमुखीकन्यवालसू

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्रसमप्रभाविशालनेत्रावि
वेस्त्रीसाकन्यालग्नतेसु

॥ल्या॥ अर्थ

ग्रान्तरीकेमुषसुन्दरपूर्ण
वाकेचन्द्रमाकेसदृसगो
लमूषहोय॥प्रातकालके
सूर्जकेसमानशरीरासुंद
रहोय॥वडोसुन्दरविशाल
लंवायमाननेत्रहोय॥दांत्त
स्त्ररक्तवर्णविंबकेसमान
लालहोंठहोनेसोवडोसुख
भोगकोंकरनेवालीरानी
होकेनानाप्रकारकेसंपूर्ण
सुषविलासकेभोगकरसी

॥ल्पा॥ श्लोक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रेखाभिर्यऊर्ध्वभिकेर्लशांवस्यान्नि
र्धन हीनता ॥ रक्ताभिः सुखम।
प्नोति कृष्णाभिकेर्लशांतांव
जेत् ॥ ८४ ॥ अर्थ
जाप्रारीके हस्तकेरेखावक्रतता
छोटाछोटा होय ॥ तो दुःख होनेका।
चिन्ह है ॥ यदि वक्रतन्यार हीरू
क्ष होय तो धन हीनता ॥ दरिद्री
होकेचिन्ह है ॥ हस्तकेरेखाऊ
हरा ॥ रक्तवर्ण होनेसो सुखी है
है ॥ हस्तकेरेखामो ॥ स्यामता
कलावर्ण होनेसो दुःखकप्रा
प्ति होनेका चिन्हमो प्रतीतहोहै

॥ ८६ ॥ श्लोक

ऋांकुशंकुऽलंचक्रं यस्याः पाणि
तलेभवेत् ॥ पुत्रंप्रसूयतेनारीन
रेंद्रंलभतेपतिं ॥ ८५ ॥ अर्थ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानारिके हस्तमध्ये अंकुसके
चिन्ह होवे ॥ कुंडलके चिन्ह हो
चक्रका चिन्ह होय यतो वडीभा
ग्यवाली स्त्री जिसके पुत्रके ॥ उत्
पन्न करके ॥ राजाके संग विव
ह होके ॥ वडी रानी होके सुखी हो
वेगी ॥ ८७ ॥ श्लोकं ॥
यस्यास्तु रोमशौ पार्श्वौ रोमशौ
च पयोधरौ ॥ उन्नतौ चाध
रोष्ठौ च क्षिप्रं मारयते पतिं ॥
८८ अर्थ
जानारीके दोउ बगलमो ॥ पेटके
दोउ ॥ पाजरेमो ॥ वहुत रोम होय ॥
जो दिस्तन पयोधरके ऊपरमो
रोम होय ॥ जा दिनी चेके उस्त
उमो हाइल प्रतीत होय यतो ॥ ऐसे
चिन्ह सो विधवा स्त्री होवे है ॥
८९ श्लोकं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यस्याःपाणितलेरेखाप्राकारं
स्यात्तेयदिहीनकुलेपिसंभवसकुलेजाता।
राज्ञीत्वमुपगच्छति॥२४॥

अर्थ

जानारीकेहस्तमध्येप्राकार
नामकोट॥होयहीनकुलमेंभीजन
होयतो॥जदिहीनकुलमेंजन्म
लेवे॥परंतुरानीहोकेवडेसुखभो
गकोंकरेगी॥२५॥ श्लोकं
ऊर्ध्वंतकपिलायस्याःरोमराजी
निरंतरं॥अपिराजकुलेयातादा
सित्वमुपगच्छति॥२०॥

अर्थ

जानारीका॥केशकेउपरमो॥
रोमकेअग्रभागमों॥जदिका
पिलवर्णा॥हरिद्रावर्णाप्रतीत
होयसंपूर्णरोमकेअग्रभाग॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीतवर्णा होयतो॥ वह हस्ती राज
कुलमे यद्यपि जन्मे है॥ पर
तु दासी होनेका चिन्ह सो प्रती
त होवे है॥ १०॥ श्लोकं
मस्याअङ्गनामिकांगुस्टौप्रिथि
व्यांनैवतिस्टतः॥ पतिंमारय
तेसोपिस्वतंत्रेनैव वर्त्तते॥ १२

अर्थ

ज्यानारीके चरणकी ॥ अनामिका
अंगुली॥ अंगुस्ट अंगुली॥ सो
पृथ्वीसों ऊंचे होके प्रतीत हो
नेसो पतिके मारके विषवाहो
का॥ स्वतंत्र व्यभिचारिणी हो
के लोकमो दुःख पाई करहेगी

॥ १०२॥ श्लोकं
यस्य गमनमात्रेण॥ भूमिकं
पोपजायते॥ पतिंमारयते सो
पिंस्वेछाचारेण॥ वर्तत्ते॥ १०२

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जानारीकेपत्यमोचलनेसोव
उपंसघसमशाव्हुरूमिमोपूती
नकंपितपूनिंवीमासमहोने
सोगावहस्तीअपनेपतिकेमा
रिकेविषयाहेकेव्यभिचारि
णीपरपुरुषकेसंभोगक
रनेवालीस्वैरणीस्त्रीहयेगी
॥६०२॥ श्लोकं
चस्वस्थेहेतनशौचंभाग्यदंतस्थेहे
नभोजनंगानचक्रेहेनपर्य्यं
कंपदस्थेहेनवाहनं॥६०३॥

अर्थ

जाप्रानीकेगनेत्रकेशौभाग
उतरूछहैतोगावहसमउत्तमभाग्य
यानहोगा॥जाकेदंतमेसंदरल
हैं॥वाकेभोजनवडोदिव्यषट्
रस अन्नप्राप्तहोगा॥शरीरके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सर्व्वांगलयथा ॥ चर्म्मयजोस
न्नरकोमलप्रतीतहोनेसेआ
लंगनादिव्यश्रेज्यादिव्यम
मनकोप्राप्तहोगा ॥ चरण
यकेसुन्दरपदचरणहोनेसे
नानाप्रकारकेवाहनरत्नपा
लकी ॥ घोडा ॥ हस्ती दिव्य
हानऊसवारीप्राप्तहोंहो ॥ १

श्लोकं

स्निग्धोन्नतौताम्रनखौना
र्य्याश्चचरणौशुभौ ॥ मत्स्य
कुशाजचिन्हौचचक्रलांग
लक्षितौ ॥ १०४ ॥ ऋ
जोनारीकेचरणहों ॥ चडोको
लहोय ॥ ऊचे ऊचेमध्यहों
ताम्रकेसमानरक्तवर्णन
होय ॥ तोचडोक्रूरफलहो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है॥जोइ चरणमो॥मत्स्याम
छीकेचिन्ह होय॥अंकुशके
चिन्ह होय॥कमलकेचिन्ह
होय॥चक्रकेचिन्ह होय॥
लांगल॥हलकाचिन्ह होय॥
जोइ एतनोचिन्ह होयतोवडो
भाग्यअंसहौहै॥जोइ एतनो
चिन्ह होयतोवडोभाग्यअं
सहीहै॥जोइ एतनोचिन्हमे
कोई एकहु चिन्ह होनेसोव
डोभाग्यमानी स्त्री लोकमोंसु
षीहोके आनन्दमोसंपूर्णभो
गकरती सुषीरहेगी॥६४॥

श्लोक

ऊर्ध्वोदिनैष्पृक्तलोप्रसस्तो
चरणस्त्रियाः शुभेजंघेविरो
मेच ऊरू हस्तिकरोपमो॥६५॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थ

जोनारिके चरणहोमोणाषेहु॥
धर्मेपसेनाणानहीहोयवडो
मलप्रतीतहोयनोउत्यमफल
केप्रापहोवैगोणसुंदरजंघमें
रोमरहितना॥हस्तीकेसुंढके
दृशसुंदरजंघमोवडोसफल
केप्रापहोकेस्त्रीवडेसप्रीत
कमोसपूर्णासुपत्रोणकरेगो

१०५ श्लोक

नोत्तिप्रसस्तागंत्रीराद्दिरा॥
र्यत्तिकाशुत्राराङ्करोमाविवर्ज
नार्य्यः नृ रूनृ नौरोमवर्जि
तौ॥१०६॥ अर्थ

जोनारीकेणनात्रीअुस्तउत्य
गंत्रीरणनीचाहोयाहनिनाव
र्ते घूमानाचीकेशिराप्रतीत
यारोमूकेशसोरहितहोको॥
यलीतानापेरीणनात्रीके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपरमो होनेसो ओभ्रसफलहोवेहै
तह्या।छातीमों।।स्तना।।पयोध
रकेउपरमों।रोमनहीरहनेसोंव
ओभ्रसफलकहैनेवासालसरा
होवेहै।।स्थैहीचिन्हरहनेसोस्त्री
केवओभ्रसफलकेभोगप्राप्त
होनेकालसरा।।है।।१०६।।

श्लोक

स्त्रिसां गुलीनास्त्रनषोपादावबुद्धो
स्त्रीचितोकूर्म्मोंन्नतोगूढगुल्फ
स्वपास्त्रीनःपतःस्मातो।।१०७।।

अर्थ

जोस्त्रीकेचरणाकेअंगुलीसं
पूर्णमिलाहोय।।छिद्रनहीपरती
होय।।चरणाकेनख।।मूनवरा
होय।।चरणाकेउपरमोंउंचापरती
होकोमनाडी।।सुन्दर।।सुन्दर।।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाडीप्रतीतहोयाकर्मकेक्र
कोपदस्केसमदनचरणकेउ
परमोटाहलप्रतीतहोयापार
एडीाचरणकेउच्चहोयाच
रणकेएडीकेउपरमोटाहैति
स्केाा गुल्फ उच्चामांसवडेग
ंभीरप्रतीतहोनेसोापहैि
पूर्णा चरणाकेचिन्हवडेमह
राजनृपतिकेचरणामांचि
होकेराज्यस्कंभुजेजोगवि
वकेप्राप्तिकरणावासोचर
चिन्हसोंप्रतीतहोहै।१०।

श्लोक

सूर्य्यकारौचिह्नसौंचवक्रौच
रणांगुलीाकथायसहूशो
दौद्वीरद्धाराणप्रकीर्त्तितौ।१।

अर्थ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाप्राणीकेचरणविजैसूर्य्यकेस
मानहोयातेपृथ्वीमेविरूपरूष
रमालुमहोय।वांकेतीरछीकि
चितधूमाचरणहोयाविरल
पन्यकर्मगुलीसेघेरहनेसों
कष्टायजरुमहीकेसमानवर
णतलेप्रतीतहोनेसोगएतनो
चिन्हहोनेसोगासरीहदुःखीज
नोकेचरणमोऊसूर्नसूचक
चरणचिन्हसोंप्रतीतहोहे॥१०२॥

श्लोक

स्त्रीणांवर्तचलितैर्मृत्रैस्तुनन्
तिःस्म॥तः॥स्थूलगुल्फयुतै
र्लिंगरक्तैपुत्रासिसंजुतः॥१०३॥

अर्थ

जाप्राणीकापेसंचयकरणकेसम
नमो॥मुद्रस्वैकबराबराधाराहो
तकोदाहिनेतरफमोंजाइकेपर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो । इहिनावर्तमृत्युकेपउनेसो
राजाहोकेराज्यभोगकेकर्ता
होवैहाजहिंसिंगमोहाहोके ।।
सिंगकेऊपरमोगिरहहोय ।।
गृभिवंषपनहुदानहीहोय ।। सिं
गकेऊपरमोरक्कबरी ।। सालवरी ।।
प्रतीत होनेसो वहुतपुत्रपौत्र
हिकसोंसंपन्न होनेकेचिन्हहै

।। १०९ ।। श्लोकं

पुष्पगंधयुतेशृंके भवेद्राजा
सुधार्मिकः ।। मधुगंधयुतेवी
र्जे धनवान्सुखकृन्नरः ।।

११० ।। अर्थ

जाप्राणीकेवीर्जमों ।। उत्यमपु
ष्पकेसुगंधकेसमानउत्यम
सुगंधवीर्जमोसहहतमधुके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समानसुगंधहोनेसोपत्नीहै
कोलोकमोवडोसुषीयनपा
त्र होकेलोकमोविष्यातसुज
शवालाहोकेपृथिवीपरहेगा ॥११०॥

श्लोकं

पुत्राःशुक्रेपुष्पगंधेतन्नःशुके
चकन्यका ॥महान्नोसीमांस
गंधेयज्ञःस्यात्महागंधिनी
॥१११॥ अर्थ

जोपृथीकेवीर्ज्जमोउत्यमपु
ष्पकसमानसुगंधप्रतीतहोने
सोपुत्रपोत्रादिकोंकउत्पन्न
करैहै॥जादिउत्यमपुष्पका
गंध्यनहीहै॥मन्दगंन्धहोने
सोकन्याकेउत्पतिकरेगा
जादिवीर्ज्जमो॥मांसकागंध
होयतोवडोसुषीओगीहोगा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो दिहीं जिमों मदिराके समान
गंध होय तौ जीवअस्सी भोगी
आयुमान् लोकमों रहेगा

श्लोकं

स्वारगंधे दरिद्रः स्यान्नदीर्घायुः
शीघ्रमैथुने ॥ समर स्वास्य
गात्यानिमवस्ताधनोश्रितः

११२ अर्थ

जाप्राणीके वीर्जमों ॥ खारगं
ध होवे तो दरिद्री होनेका चिन्ह
है ॥ जाके मैथुनके समे भोग ॥
करते उवा ॥ जलदी वीर्ज पात
होवे तो ॥ दीर्घ जीवी होनेका चि
न्ह है ॥ जाके ॥ छाती मों समा
न वरावार होय ॥ ऊंचा होवे तो
धनवान् हो है ॥ जाके छाती
मों नीचा बाल प्रतीत होवे तो
निर्धन होनेका लक्षण सोपु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीत होवे है॥ ११२॥ श्लोक॥

इमं सामुद्रिकं शास्त्रं विष्णुना परि
भाषितं॥ श्रुत्वा पित्वा पठित्वा च
शोकान् जहाति पंडितः॥ ११३॥

अर्थ

श्री महादेवजी॥ श्री पार्वतीजी
भगवतीजी सों कहत है कि॥ हे गि
रिराजनंदिनी प्रिये॥ यह सामु
द्रिक शास्त्र तो श्री विष्णु भगवा
न जु॥ श्री लक्ष्मी जू सों कहा है॥
यह सामुद्रिक शास्त्र को॥ जो कोई
प्राणी श्रवण करे जाके अर्थ कों
धारण करे॥ याकों पढे॥ पढा
वे तो॥ यह सामुद्रिक शास्त्र के
ज्ञान ने सो प्राणी बुद्धिमान्
पंडित होके संपूर्ण संसार के म
ध्ये नाना प्रकार का चिंता कों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यागकरकेसुखीहोगासंपूर्ण
कामनाकेपावेगा ॥९३॥
इतिश्रीतंत्रसारसंग्रहेहरगौरीसं
वादेसंपूर्णस्त्रीपुरुषवशकरण
शुभाशुभकथनसमाप्तम्॥
रामाक्षांशाब्दे चन्द्रान्दे मार्गशी
र्षेसितेदलेद्वादश्यांचरवौश्री
मद्यदुनाथेनमुद्रितम्॥
श्रीयुक्तशास्त्रीजदुनाथमिश्र
पण्डित मान्यवर्येणामुद्रां
कितं ग्रन्थसारसंग्रहं संवत्
१९६१ मार्गशीर्षशुक्लद्वादश्यां
रवौ ॥ श्रीराधावल्लभौविज
यतुतराम्॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वनाव ईलीन त्रीबालि॰

जोजाायकरा जाववीके माार। रलईवी घोटी।

ऽमवराकपरे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१	२	३	४	५
२२	२३	२४	२५	६
२१	३६	३७	२६	७
२०	३५	३८	२७	८
१९	३४	३९	२८	९
१८	३३	४०	२९	१०
१७	३२	३१	३०	११
१६	१५	१४	१३	१२

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः अथसगुना

वतीलिख्यते

एकपरै तौ सबविधिका जू

गनपतिकहै करउ तुमरा जू

दुजेपरै नीकनाहि है ई

कहै सारदा सर्वसथो ई

तीजे काज विलंबन है ई

रामके बचन सत्य सब है ई

४ चारिपरै होइ सब ही नी

चारिउ बहुक है ऐहव नी

५ पाचपरै तौ मंगल जान उ

भरतबचन सत्य कै मान उ

६ छठपरै तौ दुरी परे है

भीम कहै तुम जूमि नपे है

७ सातै परै तौ विद्या पाव उ

नकुल कहै गनपति मन साव उ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८ आठैपरैतौनासैफल सा।
कहैनिषादकरहुबनवा सा।
९ नवैपरैतौनवनीपीया वो।
सहहुबकहुगुरहिसिरना वो।
१० जोदसपरैतौहाइहैभ्रम छौ।
कहैजुँधाँधावहरिकोइ छौ।
११ येकादसकहैलाभहजा रा।
कहैरीछपतिवारहिबा रा।
१२ द्वादसपरैतौकुसलछनं हा।
नारदबोलजेरघुचं हा।
१३ तेरहपरैतौबडफरफं हा।
रामहिसुमिरिकहैमनगनं हा।
१४ चौदहपरैतौनिहचैमर ना।
घटसुतसाचकन्यायहवर ना।
१५ पंद्रहपरैविससैजेह उ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहैसकपुनिघरफिरिमैले उ
सोरहपरैतुरतहिआव ई
सुरगुरकहैजौनिहचैलाव ई
१७ सत्रहपरैमिलैकछुहा न्या
कहासहृस्यिवन्नोराना न्या
१८ अठारहपरैतौकचाका मा
कहैघिन्नीघनओरा मा
१९ वोनईसपरैतौआवैहम री
सुरपतिकहैनकरयगोहारी
२० वीसपरैतौसोहृले उ
वोलैअरतहृामञारिद उ
२१ येकईसपरैतौनाहीहा नी
लछिमनकहैनिहचैकैजानी
२२ बाइसपरतैकपराले उ
वोलैअरन्यहृामञारिद उ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२३ तेईसपरै तौसुषकीध री
कुसहरिवोसेज्ञानहृध री
२४ चौवीसपरतौनाहीजरा सा
सीताकहैहमहिनहिहो सा
२५ पचीसपरैतौलोहजनिल ऊ
कहैपवनसुतवानीये ऊ
२६ छविसपरैतौसुनिलेवा ता
अंगदकहैवअंक्षिघा ता
२७ परैसताईसमंगलमू ला
कपीपतिकहैछुटदुषमू ला
२८ परैअठाईसवाहनम ने
कहैनीलसुनुनरकेज ने
२९ उनतीसपरैसमरमहहानी
कहैकागपतिप्रहमजानी
३० तीसपरैजनिलघुऊवा रा
कहैगरुडजोकरोविचा रा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यकतीसपरैतौकुवंकेस्फराजा।
पिहिसिकहैमुनिभरद्वा जा।
बतिसपरैतौजीवकोहा नी।
कहैसूपनखघोघहहा नी।
३ तैतिसपरैतौहृवंदीछो रा।
कहैसुतीछुनयहमतमारा।
३४ चौतीसपरैतौचौपरना ल्या।
कहैठमासुतजरघुना ल्या।
३५ पैतिसपरैविहसीहोझा वै।
गोरखकहैवउलाभहेवा वै।
३६ छतिसपरैतौजानेऊभा ई।
तुलसीसुखीसुहामाकिना ई।
३७ सैतीसपरैकेपरैजोझा ई।
चोरीमिलैकहपाटगोहरा ई।
३८ अरतिसपरैतौधनपातिहो ई।
कहैजागवासिगुरुलखलाव ई।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३९ नौवोतीसपरैजोमुं को।
कहैद्विजरतननिहसं कु
४० चालिसपरैतोआनं दु।
कहैमहोहरीसुनुपियकंन्या
चालिसअंकसगुनावतीतु
लसीकहीविचारिसगुनके
कुफुरहोइहैः सांचीहरविपु
रारि ॥ चालीससेस्वेमेये क
मनः ॥ तेहिजानिकरकुमसीत ॥
तीनिवारकहिहीनहम ॥
गुरमंगलरावीहिन ॥ इतिश्री
सगुनावलीसंपूर्णम ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहजंत्रसपनेमेंबीजगीरज्ञात होइतोसीधीकेकमरमेंबंधैतो नगीरे

ऊः	पः	तः	मः
ॐः	त्रः	छेः	ऽः
ॐः	नः	रः	मोः

जोसबकोपीसाचलसाहोयहजंत्र कुम्मारीकन्याकेहाथ्यधूतीघैघो रकेपीआगदइतोपीसचयछुटजा इसजगाहीसलीछै

	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

एह जंत्र गोरोचनसो लीषै जो
जपक्षपर इतवारके दीन हाथ
सोवा पै तो सब काम सीध होय

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

एह जंत्र गोरोचनसौ भोजप
त्रपरलीषै तो स्त्री गी जाय

१३	१८	२	१९
६	३	१६	१५
१८	४३	२	९
४	५	१४	१२

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है अंबभोजपत्रपरगोरोचन
सेलीषैस्तयारकेरोजतौक ही
नमुनज्ञगेहान्समेवापैअकछे

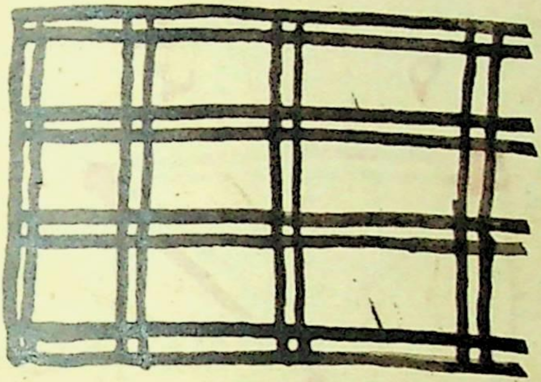

ममम	ररर	ललल
सनस	ममम	पपप
ममम	सममम	ववव
हहह	ववव	ऋऋऋ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐतजंत्रकोरेखपरापरलीखैऔर
जीसकोभुतलगाहोऐतीसकाना
मलीखेसोदीयाइकेआगमेडारदेइतौ
भुतछोडदेइअरमहोइ

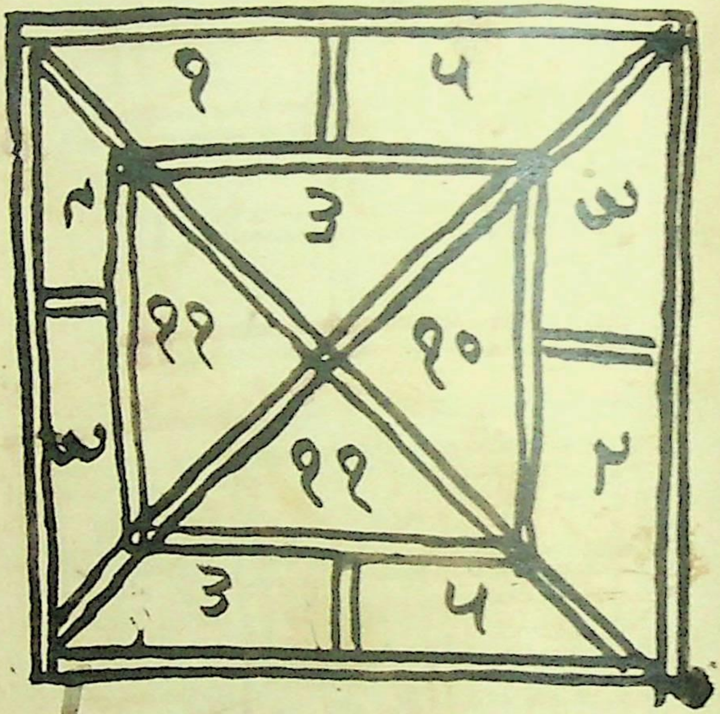

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

यह जंत्र कुंकुमा सो लीखे तो पुरष वस
होइ यो इसत्री कमर मे वांधे तो पुत्र होइ २

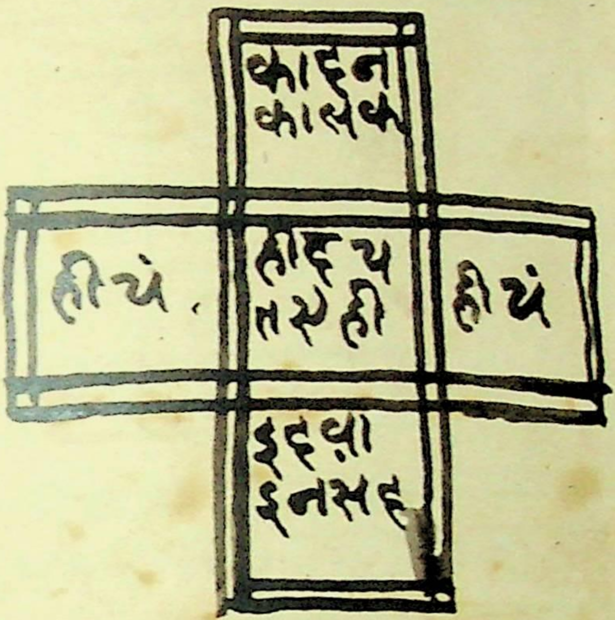

यह जंत्र गउरोचन सो भोजपत्र पर
लीखे स्तत रकेरा जंछपू मे वांधे
तो कुगन न लागे कभी ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्र ३

एहजंत्रबावसीरकागोलोचनते जपत्र पूसी बेस्तबारकेरोजकम रमेवा पीतो बावसीरजाइ

३४	९	२	१
६	३	३२	३१
४	३५	८	१
४	५	३६	३५

२

एहजंत्रगउलोचनसोजपत्रपर लीखेकपानेभ्रास्नानतरेगारहे तोजगतवसहोएमुहइठारीराजी ९

वट	ह्य	६५	राम
६५	३	सो	साता
६६	रधन	६वव	मला

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहजंत्रइतवारकेलीषैगउलोचन
सोतजरइकजार

३१	३४	२	७
६	३	४८	४०
४२	३२	२	१
४	५	३२	४२

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगनेसजीसहाय:श्रीगंगा
जीसहाय:श्रीदेवीजीसहाय
श्रीपोथीफोकासफसलोष
तेकैल्यासप्रवतदीषमा
हादेवजीतपस्याकरतेहतेत
हांसमासुरदेयतसेयाक
रतहतेतवयेकसमैदेयतसो
माहादेवजीप्रसंनभयेकीतु
सेयकेवरमागातवदेवतके
मनमेऐसीआइकीमहादे
वकौभसमंकरूपरवतीको
लैजाउतवयेब्रह्मनमागेकी
गोसइजीजाकेमनमेहनुपरे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेजसंभहोइजाइ महादेवजीने
येहीव्रतनहीयो तबदेवताके
मनमेंऔसीआइ कीमहादे
वकोजाइ औरपारवतीको
लेआउ तबयेमनमाहचीत
नकरतचलेयो तबसंकर
ध्यानकेमनजानीकेलगेये।
तबश्रीकीसनजीपहुगयउ
तबश्रीकीसनमाहादेवजीको
कछजानीकेमोहनीरूपधरो।
औरमोहनीरूपधारीकेदेवा।
कोछलकरीजरीकेजसमकी
। तबश्रीकीसनजीकहीके।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारो मनु छहर जैहा तव सं
करकही की माहाराज हमरो
मनु नाछहरै तव श्री कीसनु
संकरपे गये ३ जाय के कहि
कीगोसाइजी अपु सुचीत
हवो है यतापे मैं भसम कीये
तव महादेवजीने श्री कीसन
जीसो कहीकी चले मैं तुम
कोयकी भसम है यं ३ तव
हादेवजी को श्री कीसनजीने
वाकी भसम है यं इ तव सं
र जीने कही की वही सनूप
ही है यं श्री तव श्री कीसन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोहिसरूपहेबय उतबमह
हेबजीकेसाखरखो तबब्री
जयसतनमे उ तबसंकर
कोपन्नये उभ तबकमहेब
कोसरपहीवो कीतुमकम
समहोउ तबकमजरीगयेउ
तबपरबतीऊपनेनबमेर
खेवो तबपारबतीनेकहीके
जोसांइजीप्रीवीतोनीरवीजे
नइ तबसंकरजीनेकहीकी
तुमऊतकाहानराखेवोतब
परवतीकहीकीगोसइजी जो
ऊकुमपवोतैवीजुपइहकरो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तबसंकरनेपरबतीकोकह्
ह्यौहै२।। तबपरबतीनेअपनै
नुखमेसोबीजपैहकोंसो तब
महादेवकोंघातालो।। तबमहा
देवनेआसीरबहदीयो तबम
हादेवसजीवनमंत्रपडंनेके
तबसंकरनेकहीकीतुमजाइ
प्रीथ्वीकुंजीते तबमहादेव
करजीसोहथजोरीकेकहेउ
कीगोसइजी सकलप्रीथ्वी
कोतेजमोसेंजीतोनहीजाइ
तबमहादेवजीनेकहीकीप्री
थ्वीमेतुमअवतरधरो रज
सुनेसैनकेप्रपंनकेओतार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

रूऔररराजासुरसैनकीरानीरती
यं़तीहै तौनकेवेटीहोवैगीतबच
रससानकीहोवैगीतबवोजोगी
नीसरूपप्रकोसकलप्रीथीमी
जीतीकोतबयोहमआनीढुढील
योइककीमेयाकरेतुमोहीमय
संकराकीमाइतबइनआनी
प्रीथीमेअवतारधरोअवजोगी
नीकीउतपतीकोनहेसपुरपठ
नरजासुरसेनकीवेटीआनीउ
पजी॥ योहजोपुत्रीहतोतबदेवी
प्रसनभइ॥ केतुसेयाकेघरमा
जी॥ तबरजाकहीकीमातपैतो

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥श्री

रूपवीहोसैयेकपुत्रपायो।तन
बहैयीनेकहीकीराजाकेरोगगये
पुत्रनहीलीयौ।येककन्याहै
योगीपदुमीनीरूप।तबराजाके
स्यालघूमयो।तापीछुरानीके।
मसैनरतीयंतीजऊनमेरगरभ
रहेयो।।कन्याजनमुत्रसछुन
जइ।।तबराजसोकोरहैयीसोये
हयतबइहती केया।जोपुरष
कन्याकोजीतैताकोहीजाय।
केजीतेकोकोउपुरषसामर्थ
नहीं।।यहकन्यावृससत्राकी
होसी।।तबजोगीनीकेसरूपयं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रकेहैसमोपैठेगी जोकोउल
छराजाजीतेहै तबयेकछुज्याहेवी
कीअइहती तबकन्याबूससत्र
कीअइ तबरानीनेजोगीनीके
बीऊाहवोगनोसुंभंमररचेयो
तबसबकेसपजअइये तबयेजो
गीनीअपनेसरूपध्रुसभामो
ठठिअइ तबसबरसजाजोगी
नीकोहैरानीकीसंकोअै जो
जोगीनीकेरूपेजीतीनजारतपी
छुजोगीनीप्रीन्यीपैबैठीसाकेउ
छलराजाजीतकोराजासुरसेन
केनगरमेंअजारकुवररजाकेस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नामेंकुनीठौनाइ जोगीसरु
पहानमेंधपरऔरलटछुटीकी
नइ तवरजाजोगीनीकोंदेषी
तोंवेषकभये औरसवसभाके
संकानइ औरमुरुछागाऔर
पीछेरजचीतवतभये तवरा
पलयेकमेंसंभारकी तवपुछ
कीतुदेवकन्याहेकीदयेतीनी
हैकीइसत्रीहें तौसोहमसोकहो
तवजोगीनीराजासोकहनेल
गीकीमाहाराजजीन्हकेनाम
लीयेतीन्हमेंमेंनाहीहोमेंराज
सुर सेनकीवेटीहो तवरा
जापुछाकीतुमजोगीनीकोर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूपकाहैकोधरेसोहमसोकहो
तबजोगीनीनेकहाकीमेरेजन
सेप्रीतीनीरवीजहैसमानइस
त्रीकेहै पुरुषकोउनहीनेऊा
वरजोकोउमोहीजीते तबकीमै
इसत्रीहोगी तबरजयेहवतसु
नीकैहुचीतानयेउ तबराजा
जोगीनीसोकही केमेरेतीनी
सैसाठीवजीरहे तीनकोमेपु
छीहैयेउमेरेकोठकोठकाइस
त्रीचरनपकरतीहै तीनकोवो
लइकेमेपुछइउ केहमइसत्री
हैकीपुरखहै अगरहमारेवजी
रनहसोऊौरतुमसोबतहोचुके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुछो कोहमारेनेकोउकोउ
कातुमधायाहोसोवाहीहीना
कोसोतुवामामीलेकोनीकास
करहेवे तापी छोराजाइसवीस
माजमेहलामेरहोहैरवीवीथे
होहै डुसरेहीनरजाहरवारमे
वैठे तवजोगीनीराजाकेहराव।
रमेआइ तवराजासोकहीके
तेरोकेसवजीरहै तीनका
मैहेथोमे कोवोलछौराजाजी
तेहै तवराजाकहीकेतुमइत
नैजैजीतेहैतेसोतुमहमारो
वजीरजीते तवयेहवातकहे
हैकरकेजोगीनीकीवाहाउहे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रइकेरके हाहाई तबीछरेरजा
नेआपनेनगरमेढीढोरफीरायो
केजोकोउजोगीनीकोजीते तबो
मैवजीरवजीरकरोगा तबसबस
नीकेवयेठरहेकउजुआयनाही
आ तबकोकहेयकीइसत्रीनेये
हवतसुनीके रनीवसमेगाइ
जाइकेबुझीरनीसोकहाकेहम
रनीतुम्हारोवजीरहेकोक
हेयबंहीथानमेहीबोहै जोकोक
हेयहुटेतोजोगीनीकोजीते औ
रकोइजीतीनहीसकतहे येह
बातकहीकेकोकहेयकीइसत्री

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनेघरकोआइ तवरजाओ
रनीरनीवसमयेकजगनैइ त
वयडीरानीनकहीकेमहरजतु
मरोवडोयाजीर सोआसत्री
चरीत्रजानैहै तवोवोलइकैवु
हौ तवरजाकुअनन्नये के
येहवतसवीकहीकीकोक
हेवत्रीअपचरीत्रजानताहै
तवराजातीसरेहीनह्यारेआ
ये तवसवमंत्रीवोलाइकैवु
हा तवसवमीलीकेआरजक
रीकेमहरजकोकहेववडोव
जीरहैवकोवहीथानेसोवो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र कैयुहाउ तवकोक हैयकौ
ब होतन्नाइकीयैयुलाये संन
मानकरवेछारो तवबुहाकी
लुम जोगीनीकोजीतीहैकीनही
तवकोकहैयकहीकेमाहारा
जामेयंहीयनसेछुटो औरञ्र
छरोजकोआयावेहांपंउऔजी
तवकोसमनपउ तैमेजोगीनी
कोजीतेउतवयेहवनसुनीके
रजाकोकहैयकेपसआयेऔ
रवंहीयानसोछोडायोआपरर
जनेकहीकीहमरेकनेसेकोट
तकायावहैसोमेमपककरोऊ।
रपांचकोटतकऔरदीयेउऔ।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रफ़ीरकतकेजबतुम जोगीनी
केजीतीहोतबमैंनोहेकुबधीप्री
बीकेराज़हे तुं गोषेपरऋापसं
नकरउऋौरमेहरवानगीकरी
केकोकहेयकोडेराकेबीहाकी
ख़ोऋौरजोगीनीसोकहीके॥
तुमककोकहेलजीतेगोतुमच
तुहे तबराजानेजोगीनीको
बीहाडेराकोकरदहीवा तपी
छेकोकहेव़ऋापनेसरीरकीस
धनाकरनेलगो कंचनकीवे
टरीबनबाइ जाकेऋानकेजो
रकीवोसोहारमहलसेमेजराय

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राअपनेऊेराकुंआयोआंनके
जोगीनीकीसांमागरीहीकरतन
वो ओनेकीसेजरचाइकंच
नकीकोठरीमेपानाफुलकुम
कुमाकसानुरीसाघजीवघाओ
रजेतेसुगंधाओजेतेमयसोस
यसामजोगीनीकीसेजपूरखी
येहीतीथीसेजजोगीनीकीरची
सबसेजकोहुरजमोहुरसतन
वो नापीहेकोकहेयआपने
नावेमेसोनेकासीगीराथी ना
कानवनाइरखी नषघरो
यारवीतेनवआनिराजासोमो
रोकीवोओरयहीकहीकेमा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाराजाऊप जोगीनीको मोरल
जपछैहीजै मैजोगीनीको जोतुर
तवराजाकहीनीनेवीरमाव मे
लेरहानवकोकहेवकेकमझ
थान्नवोतवअपनेजनमकीय
नकहीनवो केसनुजोगीनी
मैनरऊमैकामहेवको औतार
ऊ औरमैयकहीन सेकरम
हाहेवजीकोव्यवाहनो माहा
हेवजीकोपववमनहीयेके मे
कोसुपहीवके नु जायसर
रवीबेऔतरघरु नवमेकर
वकेघरऔ नारलीयेनव
कयेवीपठो औरआठरह

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरनव्यकरनवीहृयेषपंडीत
चरोवेहपढे ओरछयोसस्त्रप
ढे ओरछतीसोरागपढेओर
चैरसीऊपसंनपढे तबयेक
समैयेसुसबोगछघरयो तबसु
रलोककोहृयताअपनेयीयान
छाड़रहे तीनीलोकवीमोहत
भये तबहृयताकहेनेलगेके
तेरोनामकोकहृय हैमेरेसस्र
हृयीहृयातयीरावीमोहतभये
मेरोनामहुवैकुंठरगयेतेवर।
जके तीनीसैस्थी॥३६॥वजी
रहते तीनयोजीरनकेसीररा
जामोहे तीसयककरोहे ओररा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥८१॥

जाके सहस इस्त्री हती तव सो
सो जुस्त्री चरीत्र पुछा के तुम
मो सौ त्रीआ चरीत्र सब पूनो व
तव तव सुनो हो जोगी मै मैत
वराजा सो कही के मे कामदेव
के वासा ज्ञान तहो और इस्त्री
वसीकरंन जानत हो। और इ
स्त्री के लछन जानत हो और
इस्त्री के चारी वान की होती है
प्रथम पदमीनी। दुसरा चीत्र
नी:३ तीसरी हस्तीनी ४ चौथ
संषीनी: तीन के लछन जान
तहो वास जान सुभाव जानु वी
चार जान प्रीती वात जान।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यसीरहेकीजानु तो मैहांतजी
नेकेमरहु जबजोगीनीबोली
केमैपुरबजलंमकीतुमहीकोर
चीहो तबकोकहेयकाहीकेअ
पनोमानसकोउकोहीयोहै त
बरजानेजोगीनीसोकहीकेको
कहेसमनुबनाहीहै येहहेयत।
हैकामहेयकोभौनारहै तबजो
गीनीनेकही केमहाराजतुम
उजोनागमानहीकेतुम्हारेजै
सेबजीरहै ताकोतुमहेकछुअ
रामपबोहोइ मैकोकहेयसो
पुछो जोजोगनरकहेहेइ तनी
कहोसोयेसबजानतहौ तबराज।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोंवकुतकुपनंहूंवो नवराज़ा
नेज़ोगीनीकेवेटीकरव्याप न
वराज़ानेज़ोगीनीकोंऔरकोंव
हेवकोवीह्याउंराकोकरायेहेइ
औरराज़अपनेआसनपूगे
नवराज़ापतनीकोहुडेरोषवै
कामहेवसेऔरज़ोगीनीसोचं
वेरकरहीनानवअपनेआसे
नजोगकोधःवकरनेलगे नपीहे
राज़ाकोकहेयसोवीहवापठये
नेलगे इसन्नीचरीव इसन्नीच
रीप्रकारकीहे सोपहीचानहेइ
राजाकेअसन्नीसेहेसवलनी॰॰

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तौ कहकीपर छुर्यो करनेलगे ॥
अरखपहुमीनीलंछन: करत
उचीनहीं आतीहीनीचीनहीं
वकीअंगुरीमाफक आतीपत
लीनहीं ॥ केहुनीजंघआवैनहीं
पून वंपेकीकलीकेसो ॥ पहुन
चंहैमाकेसो ॥ नेत्रमृगाकेसो ॥
इमीत्रसरीरकीचौतवनी ॥ ल
जाकंचनकेसी ॥ हो ठकुच
नारंगीकेसी ॥ नाभीगोरीअ॥
पनोपुरुषमुगतेओरसोरहो
सींगारकरबुकरे ॥ कालाचोरस
5जानैजातनोसोवैतातनोउठ
मुषलालसहाषकेसोऊपरनोउ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥१३॥

केसमैपसीनाकीवासससुगं
केसीकआवैचलेतवपावकेत
ह्वामेपद्मउछरेआवैचलत
रजनहीउउैअंगकेपसीनामे
साचेहनकगरकेसीकावे॥म
स्तकउपनैरराजन॥औरना
सुकपकेसी॥चाकोरचीतावन
सीयेपदमीनीलछनसमपु॥
क॥५चीवनीलछनकतीहीउ
चीनहीकसीहीपतलीनहीजत
नीचीनहीकौरछातीचैउीक
गुर॥१५॥करहचउचीअंगर
मुखकीनापकोपसीनानीकोस
गंधकवे॥वचनचकोरकेसी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थोलैज्ञारीगलेथोलैहसनअंगना।
रकेसीथीज॥ लीसाठचैडअंगज
र॥ग॥ मुखसंथोगलोसुधोगरे
मेमोतीनकीमालासोहेउराले
कारचीतकपरपेखकुतकरेष।

॥ दोहा ॥ श्रीपोथिकोकालिखते
सलितसुमनधनुअलियत्तन
चितनवछविअभिनवकेहूः॥
मधुरितुहीतअलिरतिरमनिज
सजसमहनअंगनहू॥ १ ॥ धरनी
कामाअभिरामछवि॥ वरन्योञ्ञ
भिनिजोगसकलकोकहूयिमंव
नकरी॥ रच्योसारसंजोग॥ २ ॥
जोकेसेकनगवंनकी॥ औरमा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंनीजोगवहसंकहेमेसुखक
रन॥एतहुयहरनावियोग॥३॥
मनुखरूपहोइऋवनरोंतीनी
यातकोजोग॥द्रव्यउपायनह
रिभजन॥अरुआमीनिजोग॥
॥४॥ललितवचनसखकवीन
के॥सुरतिसुरतीकरतसखके
इ॥द्रगअजेसखकामीनि॥जे
हसखनिमैहोइ॥५॥पिंगलवि
नुछंदहिरचै॥अरुगीनाविनु
ग्यानकोकपठचिनुरानिकरै॥
तेनरपसुसमान॥६॥गुननी
नऋतिसुजनअर॥सुंदरीयास
प्रवीनकोऊलहैनरांतिसमै॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोककलजोहीन ॥ ७ ॥ ललित
वचनजीरञ्जनीवरनजोगस
वजोगकोम ॥ त्रियापुरुषसुखम
नी ॥ जोहुहतनसुखउपजहो ॥ ८ ॥
॥ दोहा ॥ कोकपढेंचिनुरतिसमैजो
होपकचिनुधामनाकरनरचना
रचीकोकसारइहनाम ॥ ९ ॥ दोहा ॥
चतुरचतुरनमनीकहौंप्रगटवि
चारविचारपदमनीचित्रनीसं
खनीओरहस्तनीनारी ॥ दोहा ॥
रूपपदमनीलछन ॥ पदमनी
चंपकवरनतनअतिकोमलस
वअंगचतुरओरगुजनभ्रमरनिमि
वनछाडनसंग ——दोहा——

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहमनीयकेमलअनिहितनम
धुरतामुखचैनउज्जलचिरपर
मनपरेलाजवंतहैनैनछपै
दुगतिअमितछवियेअरुनमग
मुकुरीकुटीलवरातिलप्रसन्नस
मनासायिराजतचिंन्हकंठपर
वचनगमनजेहिंहंसअंगको
मलायचित्रअति तनसुखमक
रिछीनपगदहामीनीहेहुति
आननचंदुपुरनवहनमहांअंग
निर्मलरहेअहारानीमिथअक्षु
तअमलसुविमलहोरचैठीचहू
थारिसीयैसरहेसवहीनमानक
रेअतीनीकछुलाजेरखेतसरो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहि हेतु धरे मूर्ति उजल चीर
सरीर हि सा जे बारिज को सोव
न्यो ग्रह कौं मकोचौ रजनीर
जवा सौ धिरा जै दूगहन नहीं मन मे।
हमनं हितर भा चारू पप हमनी
राजै ॥ ॥ अथ चित्रनी सक्षन ॥
चित्ररूप सम चित्रनी अति विचित्र
रस रीति चित लावति सब कामतजे
नीर खीचि ब्रसंगीत नहीं नारी दू
बलन ही लघु हीर धन नही अंग अति
विचित्र हि चित्रनी लोचन चक्कि
त कुरंग ॥ छपै ॥ असलक म
ल हल चरन नैन चंचल आनियारे म
धुर मधुर मुख वचन चारु गुंजित

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कचकारे लघुहीरघनेअगसवै
ततनगर्वजनावतिमयावतअति
होतपुरूषपरमनवयुगभावतीगी
वाकपोलघुंघुरतुरीगतीगयंद
आनंदझिझीकुचनितंवकटिछी
नकदलिखंभजुगजंघजिहि

सवैया

कामकोधामवन्योअतिकोमल
वारकोनमनहिसंगजाकेलघ
होयनहोइसुहीरघवासमना
धुकरूपताकेचाहेनहिचिरेलोर
तिचित्रनिहछिनयेसवलछन
जाकेरामरूपाविनुकामकीकी
कोऔसीएजामिनीपमहैका
रअवसंप्पनीनाम॥१६६

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तनहीरघहीरघभुजाकरपहुहीरघभे
मचलतिचालउनालअतिजानीसंच
तीनाम॥ २॥ संखिनीकर्कसवचनहै
सदुर्बलहीरघहेहनिहचैअचलंघिति
चलैजानीसंष्यनीऔह ‒ छपै ‒
हुभुओचनऔकुटिलग्रीवपहहीरघ
नारीसहातपततनजोरहैभुजउर
कटीजाकेजरीकुचसुघमन
कुटिलअधिकतामसतेहिका
मिनिपुरुषहीलपटतीरतीसभैअ
ननप्पसावतिदूठकीऐसुरतिकर
तिहारतनहीसुसैनाकियोचाहति
कीऐ ११ सवैया
प्रीतिकीरितिनजानतिनजानति
नेयककुकामकलोलकोंआतुरज।
रीयउकवानअजानछुधातुरकंदू

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पजोनिकुचासकुरारीककुसौनै
मयानकरैसघलछ्रीनहीनयहै
नटारीपापकिरे जिनकोटिकपु
वपावृतीसोनरकैमीनरी॥१२॥

अथहस्तनिलक्षन

ननजरीनारीअजभरीउरजअं
हनारीस्रीवानितंवजुगचलनहस
नीमंह॥१३॥ छंद॥ मंद्ध्उनमतस
हाजोरहैअनंहवखनकवकुनत
कहेअपनीअस्तुतीअपुपुकरै
लाजवछुकोमलउधारेअंगकुस
संधमकामगहीडारेपापछारस
वअंगविधाऐकटिअरुजंधक
मोतीकरतलपुस्तअंगरीअधि
हीनिउरवचनअपसोवृरवषै
गुरुजनसंकनमनमेधरे॥१४

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥दोहा॥

रूप जसकी सालिता घसे अतीअ
लंवन माइ पंगयें घन सुप्रकाति
कौ हसन नहि हस्स सुमाये छप्पै
पवनि संग चख प्रीति चोप चितन।
टकपट मन भुजनी तें यजुगअ
रसुभ अवर न तनु उरोज अति॥
कठिन सुपव ह्लव चरन ग्रीवं तेल
छिटक यती कुच यें न अति होति
हीन नी हू न अप नी अानं हू अंग।
मारी अधीक सुमें हू में हू जगती हू
न॥१६॥ दोहा
पम कलोल समै अति आनुरपाइ
लै पति प्रीय लैडारे जो निकठोर सु
तकी बात हिस्ये उरवा न नी मारे
यगंध गयेहू बहे मानो कोकाकल
हमे हू वी चारे कौलि समै नरचेगी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिहारननेकुनहस्तनीकोमनहो

सोरठा

पद्मनीचित्रनीजानीनारीसंष्प
नीहस्तनीहस्तसमानपद्म
नीकोउपमानही होह
3 पद्मनी च्यारिबहूचित्रनीनवसं
षनीसस्याहहस्तनीजानिऐसैं
वियिजोनीगं...रशति...कान
ह...ह्नतकोकसारभाषायांतरं
नीविधाननामप्रथमोध्यंउ।१

अथपुरुषलछन

सुसाकुरंगजुवृष्पअरुहप्रगटपु
रूष्पऐचारीनष्पसिष्पसीलछन
सबकलःकहैविचारीविचारी

दोहा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुसापुरुष जोजानिए सीतलहोत
सुन्नायमहंनांकुसचतुंरगुलीराति
सौंअथिकनचायरअतिसुक्षम
कोमलबैचनःसीतलवंतसुभवै
रातिविनोदअतिरुचिनहीसुस।
करतइमसैन ==== सवैया ====
गाविसालअतिसाधुकपरकछुम
नहीसप्पनसीलवंतसुचिचित्रची
वित्तसनअतिआननउरनितंब
गजंघभुजग्रीवासुअंगनरह
सुसापुरुषसोजानिएजोसुभा
अैसोलहन ==== अथमृगलछन
पुरवचनमृगंमध्यतनचपलबु
चितधीरचतुरसाधुअतिहसत
पुष्पकामिकनकसरीर = प = कामी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कनकसरीरम्रगाअतिसुंदरेनाव
नचंचलचितअतिनिपसमुहित
मनमोहनगावातनिभ्रमअतिर
पचप्पनसहामनसकुचजुराप
तमनउजलतनविमलभासमोह
सुन्नसाप्पतः श्रीवनितंवसुछम
सुपरससहामोहचिततर हतमगल
छनयहजाफिरएभ्रानंदकविभ्रे
कहत ॥ ६ ॥ == दोहा ==
व्रप्पनजानीनारीपरुषहाताकु
सुजाधवकपटीकछलेपटहठीक
माकेलिअतिवाच == छपप
डगायसालचितचपसहीरघभ्री
नारितनमुजापीठीअतिकठिन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठिनकूर्मपीठकपटमनःरसनापेंतिचि
तचतुरसौंहकटाक्छनकामवेतच
ज्ञातउग्राधिककज्ञातितेजसहाजिहन्न।
ञूतथर्मचितःमनकुटीलकपरम।
ञानिपटनयकोंकुसमरहनमयन
षजपुरुषअजानिएरहतकछु
करूषेवहनः अथतुरगलछन॥ दोहा॥
ानहीरघहीरघभुजाहीरघनथासिर
जंगसवैतसूनीकंगरातिसमैउपालस
ाधिकतुरंग॥ ८॥ पुरुषमाहाज्ञास
ालिएवजनि हातेहिसंगतीनमुक्ति
ॐकुसवहन तासोंकहततुरंग॥१०॥
प्पए॥ लोचनजुगलथिसालहह
ाहीरघहीरघननजातितोजनपर
ीतिरीतिरहतथे चलतहीमनजा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुलीसकलकरकानमुष्यग्रवाद्सन
हीरषद्रुजानिहैतुरंगमजानिसै
हकोकविद्मतिकहति—११ सोर
चतुरमुसनजानिद्याहसंकर
पहुषमगमहनांकुसपरमानसु
सामुद्रीजानतचतुर—१३ —
इतिश्रीकविमुपनेद्हनेकोकसार
अध्यायांपुरुषलछनदुतियोध्याय

अथरतिभेदवरननं—दोहा—

सुसापुरुषपहमनीत्रियासमरति
कोनामउत्तमएपरस्परतिवढैअ
रनसौनहिकाम—१ सोरठा—
मगाचित्रनिसंगसमसमरतिसु
२ जानीएमनवचनैनकेअंगप्रगटम
सुष्यमानीए —दोहा—

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

प्यनअपुरुष्पसंप्पनीत्रीयासमरति
ाकोनामअतिआनंदहिहीतुवहै
तिमहासुष्पवाम ॥ इतुरंगपुरुष्पत्रि
याहतनीसहायोगवेहार ॥ अतिहि
समानेपुरुष्पत्रियासहासुष्पहसुवि
हार अथउचरति —— सोरठा
पुष्पनकुरंगनिसंगओरतुरंगतुरंग
तिमनवचइनकेअंगपुगउचरति
जानिस्वप अनिबचरति = सोरठा
रनीतुरंगनसावपुरुष्पवृष्पनक
रिजानिएइनकेजन्मकार्यप्र
निचरतिजानीए प. == दोहा ==
यहरनीअति उचरतिहरीनिकर
नीच नरनारीसोअधिकहेतो
सुखसेजावीरच ६ == सोरठा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसीजोतीगंभीरमहनांकुसतै
चहत तौसुखहोइसरीरकोकर
रइमडुंचरत ७ जोहितियकोरति
चिनहिपियाघिलसैजोताहीभा
निमुदितनहोइकछुखनासक
तवआहि ॥ ८ ॥ जोजनजानैको
पढिकरहिजतनसुविचारि ॥ अ
तिसुषउपजैरमनिकोवहसुष
मानैनारि ॥ ९ ॥ जनरुचितियपु
पहिमिलैकहकोकचहन्नारि जै
सेरोगीतीयकोआपिमुहिपिय
६ ॥ ॥ इतिश्रीकविआनंदकृत
कोकसारभाष्यायांरतिभेदवर्नी
प्रथमं ३ दोहा ॥ आन्यनिवासमै
नवरननं ॥ कामनामकेवाम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यवसतमदाअंगअंगसोयतनमदन
आइकैपियविलसैतियसंगकु
मपछकामवास ॥= पृथघरीछंद
रिवावसतजुमस्तककोमतहांक
हतरचेरतिबसमहतियादृगचुंवनक
कत ॥ ततीयारहतअधरपरनवहंत:
यचौथिकामआयैकपोलसतबधु
ानप्यंउनकरिकपोल ॥ ग्रीवापंच
ीवसैमनोजतहांनप्यहानकरैसु
सेजछाडिकाप्यमैकरैहिनिवास ॥
महमहनहाबनहोइउलास ॥ सा
तैमहनकरैउरोज ॥ तहांवसयतअ।
निहचैमनोज ॥ आठैमनमथहू
यधिचारीकरमरहनजाकरतनु
रिनयमीनाभिजुवसतअनंग=

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करमरंनधुरी जोअंगअंगकहिहस
मैनजोआईमरहूनखंडनधरो
र्षेकाहूसीजगमोहैयास ॥ महन
सतहांकरैनिवसा ॥ जोताहिनन
करैप्रसंगदूधैनारीतधहोइअन
हृहसीजंघाकरैनिवास ॥ मरह
षंडनकरहिप्रकास त्रयोहसी
स्वरमरहनसंग ॥ तहांकरसहरा
तयेअंगचौहसीचरनौकरैनि
स ॥ मरहनषंडनकरहिबिलास
रेहिविधिहरिचिउपजोधैनारी ॥
बलकोकतकहैविचार ॥ है
कूमालसतेपरियाविमलपग
गुछअंनंगजोहिमारगसेउतरे
रिचहैतेतहिंअंगगहकछमपछवे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परिवायीमलकंगुष्ठारहैदुतिय।
चरनकोकल्पमकहैतीजगुल्फ
मैकरैनिवासुचौथिजांघमेंक्ष।
वैतासुपाचेजोनिवसैजोक्षाइ
छठियासीकटिमेतहांजाइसातै
नाभिकरैविहारक्षाठैहृयकर
तविचारनवमीकुचजेकरैनि
वासदसमीकाधमेंक्षावैवास
एकासीग्रीवमेरहैद्वाद्सीक
पोलमैचहतेरसिकुंपरानीक
रैनिकरैनिवासचौदसिनेत्रनि
क्षावैक्षपसपून्यौमाथसमस्तक
रहै कविज्ञानहृक्षेकविधिक
है॥इतिश्रीकवियिक्षपंनहृकतेकौ
कसारक्षाध्यायांकामनिवास
वरननंनामचतुर्थध्यायः ५ ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥२८॥ ११२

अथकांमदेववासमुकलपक्ष मैजानवीजंत्र

१	अंगुष्ठ	मरदन
२	पाइ	नषहन
३	गुल्फ	करमरदन
४	जंघ	करमरदन
५	जग	वक्षपरस
६	कटि	मरदन
७	नाभी	करमरदन
८	हृदय	करमरदन
९	कुच	मरदननाषन
१०	काष	मरदन
११	ग्रीवा	नषदान
१२	कपोल	चुवनषंडन
१३	अधर	षंडनचुवन
१४	नेत्र	चुवन
१५	मस्तक	नषदान

अथरतवैरसवरनन ॥ दोहा ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिहेअस्थिचस्कलाज्ञानीया।
जंघरतीतिव्यिनिराधिअंगतिय।
पहिचानि॥ ६॥

अबकामदेवकोवासकहसप
हैमेजानिनीजइ

१	मस्तक	करहुं नं
२	नेत्र	हगचुं.बन
३	अधर	पंडनं
४	कपोल	चुंबनपंडनं
५	ग्रीवा	नोचहान
६	कांख	मरहुनंकरन
७	कुच	करमरहुनं
८	हृदय	करपरसनं
९	नाभि	मरहुनपंडनं
१०	कटि	मरहुनपंडनं
११	भग	पुरुषप्रसंग
१२	जांघा	मरहुनपंडनं
१३	गुल्फ	मरहुनपंडनं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८	पद	मरहनप्यंडनं
३०	पदअंग	छा।करमरहन

अखरखीअंगकामनिवासवि
विकल्पते मंगलाचरह॥=
पदमनीपरियाहोजोपावैचौ
खिचाहैजोग चितवनिम्राठैछ
छिहसमीहाहसीसंजोग संपती
सातैतीजतैरासिअमाथरसजानि
ऐसुनालहस्तनीबोहसीनयमी
पून्योंएकाहसीकरीचाव दोहा॥
विरिस्त्रामयतीकोपदमनीज्ञा
निचिचनीवामअपरसंपती
अरुहस्तनीसद्दाकरतचिरसाम
अबकामवासरसीतपद्धौ॥
पदपरीछंद।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनीपुर्यातियहौ ऐअबनसुनि
लीजिसेतासौंकामकलोलप्री
तिनहीकीजिसे॥ भामिनिब्यौ
रीप्रीतिबहुतकरिमानिये॥ पारि
हांअपनीवैसअपुजौजानिये

दोहा

जोमनभावैभामकैपठैतसौत।
हिजाइबहुबताहितंचितअतिब
हैकरेप्रेमनिरबाह

॥ इतिश्रीकोककमंजरीआनंदकृत
स्त्रीवैसबरननंनामपंचमप्रसंग॥५
अबनारीपरिछाजोजनारीबर
नतं॥ पुरुषनतेहृगनीछुधामन
हहपरगुनहोई॥ मदनअसठगुन
साजहुसातिगुनिहिविधिसबकोई।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥२६॥

अथ चित्रनी चारनी वरननं॥ चौपई॥
चित्रनी चारि नारी वहै पिय निकेत
पूजै नाक है॥ जो पति पवै पुरुष
न मेरहै नासे सील को कछु भिय कहै

चौपई

चित्रनी चारनी सगरी है जु कामीनि॥
रहै मातु घर सहाजु मामिनी यह पुर
षन मै नारी जु रहै नाकै सील को क
छु मिय कहै॥ अथ चित्रनी

लछन॥ सवैया

उतरवे गीन देत कछु पिय के सुष
और निवासन हारे॥ पोढती पीठि
दीए पिय के संग चुवन दत सुष पो
छि के डारे॥ जो पति के कोउ आवत
प्रीतम हू रजन सो अपने मन धारे॥
छीन रए जिन प्रेमत जो पिय एहि छिन
होइ सो मेइ धि चौरै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कन्यागोरीसमाहिकेबालातरुनि
जानीप्रौढाप्रूयानामीनीरष्पहै
स्पवष्यानी

अथकन्यावैस्पवरननं=अडील

सानयरष्यपरजंतसुकन्याजानी
ऐनासौकामकसोलनकवृठा
नीऐवालापनकोप्पेलसहामन
मेंआवहीकछुकलोकविवहा
रनमनमेंआयहि=अथगोरीव
रननं

अडील

आठवर्षतेगौरीनेरहकेतलै चाहे
चतुरविलौनासुहरीअतिभलै जो
जोजनाविलसेनाहिसुवजुसुष्यपा।
ई॥ परिहांताकोअंपकसिंगा।
रसहामनभावर॥र अथबालाव
रननं

अडील

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बालानैरहआर्हीजुननैरहयैनलै
चाहैपानसुगंधिसंहरीअतिन
लैतासौकनाकलोलहैतजोला
यइ ॥ यातअनेकसोभामिनीता
हिरिहबई ॥ अथतरुनीबरननं

अडील

बरषतीसपरजंतुसुनतरुनीकहा
बाई ॥ भूष्यनवसनसरीरनाहिअ
तिन्हाबई ॥ जोजनकामकलोल
हेतुजोलाबई ॥ यातअनेकसोभा
मिनिताहीरिहाबई ६ अथप्रौ
ढाबरननं

अडील

चालिसबर्षमुप्रौढाभामिनीतासोक
मकलोलप्रीतनाहितलपाइयेआति
अनेकसोभामिनीताहिरिहाई
है ६ ॥ अथवृधाबरननं ॥ अडी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यक छं द॥ अवकामवालावरननं
जोवनमयमंतकेनचिद्धरोवझहिन
तें॥ पझपवनी जमौनरूनिहतजलजन
समनतैकामिनीनश्प्रसूनमासहै
वीततजानहीगुननिधानकझप्री
तिसहाजोविरहंवप्यानहि॥
अवकामदूवीलछन दोहा
यनश्रमानतिसिवलसतनवकहेसुकं
तिवैनअनिअंकुसासचुहठचोच
जोतियइवैजुमैन॥ अवअनुराग
तीवरनन छपै
भरिभिरप्पतनिलजहसतिकछु
गहिवायतिखिनखिनहतीउआरि
नकमैवहनडुरावतिचलतिन
तहेरातिनचरकानरनसुरतिक
कहाछमुपमुहिजपुगहलरछुटीस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातिपल्लवचनवसुधालिअतिपि
निहरिकैकुचकसाति॥ अनुरगव
तीरोहिविधिजुवतिप्रीतिरीतिहि
अर्थीकराति १ == दोहा ==
उद्दकिउद्दकीहावकानचनतिरछी
रछिमुसकत॥ हतपियपियवात॥२॥नि
पहतिलजघोलतअधिक॥ अतिउ
हअतिहासकहैकोकनातकनिकेस
कलकऊसहछनमस == छपै ==
चलाकरीगहैउरोजकरतिकुचमर
नरिअधरअधरसोगहतिअंगमो
तिनारीसप्पीकोअंकमेभरतीपा
पल्लवचटकावती॥ होरीपोरीपैअआ
नचितवतिचप्पलायती॥ अतिजंम
तद्रचाहचितकचऊंनाहिनलाजन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ति॥ अंचसउरोजरूपकीतिनाहि॥मह
मस्तइमहछविधरती —— १० ——
ति श्रीकोकसारजाप्यानारीपरिछाहि
रनंनामप्रथमध्याइसमपूर्न -६-

अथसामुद्रिकछन

लजरूरघोसैअपिकतामसजाति॥
महासनकहकोकगुननरनिवेसकर
लछनीयस १ जाकीजुगनोहैजुरी
सीजुवतीजुहोइ॥कहैकोककजातिकु
लमनतेहिपीनपाइनकोइ २ ननके
मारगचलनजाघपिंडरीचारिजहां
हांतुमहेप्पीयोविभिचारानिपुहवां
न ३ कामिनील जुपरिहरैचैठैसन्मु
महूरा॥गहैकुजरन्नावैनहीरपैलछि
नाविभिचार ४ जाकेअधरविलास
तियोलतिसहा॥कुचैनासोनारीन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥२१॥

हीव्यहिनिरप्यिज्ञापनेनैन—६—
ज्ञानारीकीमळुपरपगटहोइकच
मपुडुमिनपरसैमव्यपसरांउहरी
नामः जंघमूछपरचारजोहिसुभ
कोघामपुछमीनपरसेमव्यप
होएसुविधिवावम ८॥ जाकेपगअं
गुसठहिंअंगतिजाकेवडीहोसंव्य
तहीपतिकौहतै मसिनव्योहोको
हीरहहोइअंनामिकाअंगतिकाया
हीन॥ नाकीपतिजीवनरठै चरप्य
यकैतीन १० जाकीनामिगंभीरव
श्रयनहोइज्रिमिसूय नीहचैहोय
लिकूनीज हीपिसंगरहैमूप ११ छु
ततीनिद्रावतीसोगवतीसीवम३
हंतरसनाकठिनकवकुनप्रावैहा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुतिलघुअतिहिथिलासतन सोलेज
रिअतिलाइ नातीयकोअपनाइकैन्ने
हनहीजेकोइ १३ एकपीनहोइछीन
कछुअधिककहीनकछुअंगवानक
ऋति ज्ञानतरूनिकैपुरलैग्रीयउतंग १४
सोम्नहोएसबगातपर॥ चलतीचासउ
तालअति दुबिलअतिछीननतनसोम्न।
यावेनवाल १५ जाकेकुपकपोलपरय।
नकहनहोइजाइनातमातनेफितरूनि
कोनिहचैजीबतनांहि १६ अंधरपा
नीतासुरसनिहसननिउपरस्यामउघ
इं तकोथीअधीकहोतदूरि दूनीयाम १७
पौलपायकीकमनीह्वैइपुरप्पनको
प्याइअलोवुरोजानेनहीज्ञीनतीतके
परजाइ १८ प्पटकरपह्लवकामीनी
कारैअपमअपरायसौतिएडुचित

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रितितनितजहिपिसंग्रहस्याथ १९—
इतिश्रीकविआनंदकृतकोकसार
भाषासामुद्रिकलछनवरननंस्प
तमखंड—७—॥अथविरहाकहितवरन
कुंडलिया॥ जोनहिजानेप्रीतिगति
रहैमलिनजोनित॥ पतिप्यारोनाहि
नकरैभ्रमराभैमित्रचितभ्रमरा
भैमितिचितथचनमुखदुखसुना
कठिनकपनआनिहोतअापुनहि
ऐसुखावैसोगवतीसीरहैबातनाहि
हितनरूपवैप्रीतिहस्तकामहोईप्री
तिगतिजोजनजानै——१——

दोहा

पियनागरसूरछबिग्रयातियनागरी
ऐकुरमनमोहितनाचितहुरिकरिर
तप्रीतिरुचिहूरिनव्याइनिश्रीकवि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नंदकृतकोकसारभाषायांविरक्त
हितचरननंदनमकसुस्तम:खं ३ —८—

सुद्धपुरुषलछन॥ छप्पै

सुनीतिमतनवसनचारुपरिमल
तनसारतपानखातमुखरागवचन
छिनछीनमुखआवतउरमोतीनकी
मालहसतवानीमुखआवतआनंदि
तचित्तहितवहुतएहिविधिजेकाम
रिरहतमोहतसवमनकामनीकछु
उपायरहिविधिकहतआनंदप्रीती
अपुतिउचरैमनमनोजकीरुचिरहत:१

इतिश्रीकविआनंदकृतकोकसारभा
षायांपुरुषसंगरनवमोध्यं ३ —८—

सोरठा

नृपतिमंत्रीहीनहूतिविनकासीपुर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पइनवीननेरहतीनकोकसारइमि

उचरै ॥ छं ॥

सखीमालनीग्वालनीऔर चतेरीन
नहीनाइनीरइनीआयोबनिचे री
औरसंन्यासनीबाठनीकलारीतामे
लनिबरनीदूतीकपोथीचार ॥ २ ॥

चौपाई

तियदूतिकबिकहोबनाए॥ जहांत
केतहांहीलेजाएऔर कछुकमैक
होबनाइयामैकपटक होकछुना
इतिश्रीकबिआनंदकृत कोकसार
भाषायांदूतिबरननंनामदूसमयं

दोहा

स्विवबीरजलोहाकनकताबोज
ई धातत्यारीएकत्रकरिप्यानरी
कजोकोई ॥ १ पय घृतआमीप

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोचरसनवलमसरीस्यामसधुमुडी
कुसगंधपुनिलघुहुयिकुभिराम—२॥—
संप्याफुलीगुरुउरहंगो॥ हूपीपरप्यांउ कै
यिविजसीद्याडामदाकुस्महलोठीमें।
उझाझागंमरहूनतिसतेसकों॥ परिम
लपानोगलोईऔरकछुकझोचिल
चिसाधातसवानिमेंहोई॥ घनकरव
कुतिवलधरनजौपूछेमोकोरुप
यसमानातिहूलोकमैंऔरनझौप
र्यिकोइपारोनिकेअंतजुपयपीवे
घटैनतेहिवलअंगचितहिनरतिकी
रुचिमीदेचौगुनवढेअनंग—६—
नाराइनी कंद
ना छहवपुसजोमरेजुरुकठोरपाई २
मागारुमालघगुनीगोघ्रीतमैपका
ई॥ टकहोरपरमानप्रातउठीषाई

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

सोकामीअानंदसहासुष्पपाईऐअस
गंधगाईदुधसौग्रठलाकअरहोर
जोकामीपीयैसहाअधिकधान
जोहोइ —— दोहा ——
मालकागुनीअानीकै घृतमैधरै
जोपाईकहैकोकचलनाघटैप्रा
नसमैजोखाइ।।अवसामान्यस्
गुडीइसगंधजाएफलजावत्रीअही
फेनविजियाअजयाइनिदुतिस।
तोबंअनमैन —१— पीपरिकुघुम
जाएफलचंदननागरजानीमीरो
अकरकराकेकोसहिएसयसम
रीअानीसाहसमासजुखावाईऐअ
रमैलैअहिफेनानिरपखाइजोप्रा
उठीदूधेनततहिजमैन —२—

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

—अथविसेषअस्वमन—छपै—
सिसिपकेसरीकुगसैगिरामझातीफुलझ।
नतयेहदाथकऊहिफेनगुझाह्वैमझ
महझानतसकसपीसोरुकहौरस
हितसोवरीघनाचतवारिरुकलेंजत
मुरूपऊतिऊानहितियहोतैसतव ५
गामनोजमुचैनहीजवलगप्यांत
नऊमलरस—१—सोरठा—चतुर
जऊहिफेनहांकरुकहहियहुझ।
हैचाकितहोरुमैनज्यौंप्यारिहारिनु
यारहमै—२—अथस्वांमनकोलप
झाज्ञासेऊठाहुंधपुनि लज्ञालऊझउप।
करपहनाऊलेपीरुसंमनहोथी
हारु—चौपाई—कहुकतोरईथी
पिसाइरुनीराहिसंगसेपलगाइसेम।
सप घडीहोरुकराइरु॥ लोगसेझपर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रछ्यासोकरैयरतीउपरपगलांधरै
रतीउपरपगजोधरैवीरजप्यलीत
रतहोईपरै ६

अथवीरजबाधेकोउपाउ

इहसहपीसपगलेप्लेलनासोकर
गपगधोएवीरजगीरैसिधियोग
ह्योचंग — पुनः — दोहा

काकजंघअरुस्वेतज्य स्वेतकम
केचुरआफुसमकरिनीरसोलेपन
निविचपरतेकरवीजबासितनाहि
एधोयातुरतप्पलितपुनीएसी
जोगकहोसोए — अथरतिप्रयोग

गीतकछंद

चिचांफलएकतोरिमध्यहवैतांय
पीपरउरिए॥लपटाएपटपिजोरत

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोसलमं हि सचारि ए आगीमे
वहु आरि कै मध्य आचपकार
औप्याहि संपूरनकरि सुछम चु
रनहीने अंमरहछनि ए — ३ —
समहार चीजी चारुलै फरककरी अ
धरलाइ ए। पुनी आपहांकप्रमान
मधुसो वरि सुंदरठानि ए॥ रति अ।
हि मुष्प जल होइ ता सो लिगले
घनकी जीए हहृ यको आनंहू
पजैति यनको सुष्पहीजी ए — ३ —
— दोहा — यथा —
तीतर आनौ स्यमरंगस्य जनर
चिहै जाहि — ८ — सोरठा —
सोही हांकसिवधीर जनाहि प्पय।
इए॥ नागर सीर जीरसुनाहि पप्प।
रिए — ५ — दोहा —

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरतिसमैमुष्कमेलिकै॥ सुरति
करैजोकोईसुरतिसमैहारत
नहीसुरतिऊखंडीतहोइ दे-
षतवातयरलोकहा॥पेसत
सुताजोप्पाईवधुवीलेवलोरति
करै॥निसिकामीचितलाइ-
—ऊर्मनारीदुवन=सोरठा
जवलगदुवैननारी॥तवलग
सुषपावैनही॥ली ज्यौचतुरवि
चाररीतीएकनरनारीकी—
दोहा—कामफेहपकरीलीजै
एवोहकपुतरआनीपुगीसम
गुटिकाकरैजोकामीनिसएक
एकामदुयेपुनीतुरतहीलगैकं
सोपाइ—दोहा—

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कंचनकांतिविचित्रजजानिउर
गलतताकेसंगहिनघबावैरमनि
कौनितचै हूबैऊंनग—र—की
हतोईइकसरहरितुवनमैतासनि
वासफेनऊंपिकगुप्पतेसलसत
तुनपरतासनिवासकरैप्पिलै
शीफ्लनमफरैफीतनिकारीव्या
लिचेलसंगहीजिस्रेहूबैमहनजल
नारी—६—पुनहूवनः
लोहूधनुरापीपलामिरचकतावी
जसिंगमलोमाखीसौयक्वारीन
वहजि पुनः—होता
ऊमलापरलसिंदुरहीमाखीसंग
पिसाइजोनिलेपनकरतहीमह
नबेगीहूबैजाई—होह

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धमरायेसिमाछीपुनीपीसीजोनी
माहेऊंवीरजइ्रैजैकामिनीजु
वरसैघनमेऊ —सवैया—
साहितसौठिग्यऊभानिपनानोपु
नीफरसरसकहलीकोजनौसज
लपीसिमहनाकुसलायेरनीक
रिकमलाननीकोनहावे—ए—
छपै
पृथमकमकलौलवालसंगच
ऊचिरकीजेताछिनऊपरछिनत
लैचतुरऊतीचपलचलावतघ
नऊपरतेछुवारेछिनकन्नीतर
पैठावतजोतीनवारऊहिविधि
जतनकरिऊपारुकामिनीहवै
ऊनंहकेहततकालहीरमन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रमनी मागहि सुषे — दोह-

नारि दूरती हारिकै पुरुष दूवैतत

काल मदन मद सुष पाइ आति

सुषमानैयल — सोरठा —

मदन सदन नेका ढिकै पिरिमद

नांकु सकी जीए प्रीति रीतितेर

चिवठै नामीनि को सुषही जि

— २ — जो कामी को मदन जलनि

कहज्यो पकु व्योहार नीति एवे

कजतन करै जानत चतुर जो

कोए — २ — सोरठा —

कामिनी अपने पानी सहरावैपि

यजंघ जुग जतन जुरहि विचिठ।

नीरमनी द्रवै ये रमन को — १ —

अथ लिंगलेप — मारसनी छंद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रथमहिपत्रचमेलिकआनेता
फोकुटिलेइरससछानैकुरिसो
हागामनांसिललीजैमीठेतेल
कंतरकीजैओरैसबैरंगपचि
जारैहीनेचरखलेइछनाईपुनी
सीतलकरीराखैतेलकाचमा
उमैराखैमेलिलिंगलेपकृतनेगु
नयकरैनसहुरीसोउपुनीजुरै
रहीछीनपडीजोहोरैनंहीयहै
जुहीरचहोरै ॥ दोहा ॥
इकइसदिनपरजंतलौलावैतेल
निरंतरधाौलिंगठाठरहैज्यैक
स्तीकेहंतत्र्यारा॥ ॥ सवैया ॥
साहितछरीलांबांडसवैसमजु
निरॆ॥अगितिसरूकमकरिपिरि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घसनमेंछानिस्।।मालकंगु
नीतेलसमानयकरिसानिस्।।म
हनांकुसद्भठहासेपजोठानीस्
ऽऽऽऽऽऽऽऽहोतऽऽऽऽऽऽऽऽ
नमयरसोनजुरतिसमस्भा
नेरासियकजुयोऽमहनांकुसम
रहनकरैद्भठयकठारमङतिहोस्=
ऽऽऽऽऽऽहोताऽऽऽऽऽऽऽ
न्वोहरयचमसगंधतीगजके
शरिसेयालयडीयक्षारीकनक
फलसवाहिसमकीरगलसहु
मजलसोपासिस्लेपनसंध्या।
सार्ंलिंगमसलसमहोनंहैहे
अतातिस्नसहारेख्याग्रीफरलर
सलीज़िस्यारानिगुपतप्रगरसो
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रतीयठैकाहिकरोयिकउपाय
नयसुखउपजैइकऊनकोयठत
चोपायितचाय२ई—ऊनपानुय
यिउपाय ॥ छिनमहपात
जातजेहिंहोइरातिरचकसोइयै
ऊकोइ॥सोकामीरहऔयही
करैइयैनयोगिधानुनहिगरै

ऊरील

स्यारलोहहसहांकसोठीसमलीजि
मिऊौउऔसमानसुचुरनकी
जीरहिवसइकोसप्रानउठीजो
जनपायइपरिहाबीरजनयेगि
धनुनहिजाय२—२

अबमुत्रकछउपाय—दोहा

एलावासगोखरूमहलठीजुमी
लाखपीपरहरडरेनकाकसम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैहसमजाएरघ्राव्यजुकरिके
लीजीयेसिलाजीतामिजघाली
ग्रवकछूऔपवरीकापुनीपू
मेलहैदालि — ६ —
ऐलालछूपीपरीसारिसासिलाजी
तसमज्ञानीपिसिछ्ठानीकैपुरी
पावोपैहयेहयेदाकप्रमान — ५॥
प्रातसमैतंदुलकेजलसोंइवाह
सरिनजोआरैअतिसुप्यहोइ
जाइहैअतनकोकहतजनहुप।
सर्वेजातिसुरतिकरिकामनीचि
तआपोतिहिमामिनीताकोपरि
हारोगनहिएयहीनहचेजानो
स्वकोसे — १ —
अथव्यपरिहासभाव — होत —
माहनसहनतेरातिसमैचलेस्यह
अग्नी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चकुचारीहरखनउपजैथुरूखावि
तनासुपावैनारी —१—

औखधीविधान

फलखजुरीकहूलीरसनामैआ
रीएतातेहूनेतालमखानेआनी
एजोएहूतीनौपीसीकेपीवैए
मीनिपरिहापावैपरमसुखनंदन
हामीपिआमीनी —२— कहूती
फलकरिपकुकाउमधफलइवै
रसाउआचरकेलीजिएनीरकौ
हाएकैप्रातसातादिनऔषही
समकरिखाइएकपुरमधुसं
लेपनहीजेसांहृकौंसूलहो
एपुनीलिंग=पुन=स्थुलीथ
रन—सेधवामिरचाकुलीनलअ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फूटंकजयषारनगरकटारीचूंघ
फूलहकरषनमरषरैपादस्रूस
गंधासमपीसीरै॥मंपुसंगले
पलगाभै॥सफुलीलीगभ्रतिहो
तहैयनिनापैनसफारै

अथसफुलीकरनं

सेमलगोधूनसोलेपनतुपरहेह
सानहियसपरमनहीसिंगडुही
रघहोरै ═══ दोहा ═══
विजयाअर्कफकनेरजोपत्ररस
धतुरेपारैगोलीकीजेपीसीजो
लीजैधोनसुफारैपरुषमत्रसो
पिसीकैकरहोसिगयरलेपहीर
घकठिनालिंगहोतहैहेप्पतना
गोतिरै ═══ दोहा ═══
अउसगंधीसोठीगंगारु॥ छ ३७५

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥३८॥

जमोंहांअनंहहतरउयहेअंगुवारे
कुटवीहारीमधंकेहृ१धनीयाज़ी
रामोचरससगंजपीपरीअजमी
रामसेवरीछालीकचुरसम
नवलगुसरीस्याम र मिरच
कास्फलगोखरूपीपरीपत्रज
अनसातीमसतालीसतज़वि
जैसारपुनीजन ३ सुखेवीजअ
नारकेजीरासेतअसेतचीता
नारंगीसुजनअकोंचारिजपुनी
लेत—७—मुहलेहिपंकजगद।
नवलसीघ्यारेज़ानकुसलीक
लितकांकडासीगीनागकेस
रीअजानःपुस्करमूलसतावरी
औबहउनतालीसटांकटांक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबग्र्यानीके बसनछानीस
पीसी=लयगछ्यारेजाइफ
लगरीचीरोजीग्र्यानीहायहाल
चीनीनघलग्र्यरूइलासघुञ्ञा
नी७ इसबंधजयत्रीसलीतहं।
कहाकलेग्र्यावइसबवोबध
पिसिकैनागरग्रंतरखाय ८॥

चौपाइ

मेरहसगोहृंयमेंगाये निरजलन्न।
जनमैग्र्योहाये विजिग्र्याग्र्यापसे
लेग्र्यावैबसनबाधिपरमैछोह
कावै—छ ६=हृंयसामानसो
हृंपगठनिहारिऐग्र्योबंधसंग।
ग्र्याहिग्र्यगहरलाइऐधारिपावक
मंहहिमंहविचारिपकाइऐ=:

दोहा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥३९॥

मं हमं हपायुकतवयालुसमहो
ईजाईलवंगादिक करनसकल
तामेहुरलाइ ११ भूमिपरयरै
उतरीकेजघहीमेकुसिराएताम
मिश्रीदुगुनकरिहीजेताहिमिस
ए—१२—सवऔषधएकत्रक
रीमैहककरै पचसमहनमोहि
कानामतासुसंहरवरीसुवास

अन्यपानुकरन

अतिवलघरनमाहकमनसि
जनीरःफुगनीउपायनहुमहन
मोहकसवहसरीर =१४

अन्यमहनप्रकासचुरन

तालमखानामसरीसूठीआव
पाईकोंचयिजकसगंधपुनी
सेमलपुऊपामिलाएयालास

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरीमोचरसपुनीजलसुंआजान
सौंतहुपसौपीजिरवृतिरहे
मैनीहृन—१

अथकामवीलासगुटिका।

कुंकुमसौंगरफजारफलत।
लमषानापारकौचवीजझ
रुमस्तकीअकलकराजरलार
तुंवरलौंगतमालपत्रपुरसनि
अजवाननीनभागमसलीली
जिरएकअफीमपरमानरस
वीजयागुटिकाकरुंपरमीत
हंफजुरकसरनसमरमछन
करेललनारमेंअनेक १—

अथसंकोचविधी—छंद—

कुमलहाडिमछालिमगाइकैनो
तुनलोहसोलैपंबांएकरैकी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छीनपुरातनचीरसौंनिरतीता
घेकेवासनवीचपरेघरीपा
ऊउपरताढिपकाइकेअंग
सुजोतिहिनाहवेरेकरिलिजि
ऐअंबरछाहसुपावनकारज
सरे—१—जोरोगोअंवरफा
रिवरंगहिंधारिकैघरीस्यव
मरैराषिनिकारीजुआरिकै
कोचनऊतिहोरैसंकनाहि
कीजिरै—२—
परिहजइहैताकोरोगीअपिसु
पावहि=इतिश्रीकविअनंदकृत
कोकसारभाषायांसमानचा
करनएकादसखंड

अबउचटनकरनविधि—

टांकचरिचंदनअरुनओष

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुंकुमआरी नवलचिरौंजीटांक
हसपीसेसकलसमारी—२
सयकरनकडुतेलमैकरै उतनो
कोइ जैसिकेमाथनसानीके
दियाअपनेकुचलवैअस्तन
होइउतंगतिकठि नहोइआनि
हिरमावै —— सोरठा ——
सुन्नहिलयकथिआनंदुकिजेत
हुनिलेपनधरीपीपरीऔसम
असगंधबासोपानीपीसीकरि
उउउउउउ दोहा उउउउउउ
बांसकेअयकेपानसमजलसौं
पीवैजोकोइ प्रमहापीवैप्रात
उठिपहुपनोयारनहोइ—१—

—— सवैया ——

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरद्वासौंहीआयरेलावैसमक
रिपीसिंकचुसोयावैसानहिँच
सवाये़जोकोईताकोपुष्यानि
वारनहोइ२—अवकेसवधि
उपाइ—दोहा—वारनाहूय
जकोवारिकेमाहिपीपरकेसं
गकचलैयहिनहिनवैछस्या
मरंगउतंग२वारनकौहूवेज
वारीकेमरहनतेलकेसंगवा
रनकीसोजायठवारनहीको
रंग—३—चौपाइ
चुनागोहूलीहरतासाहुनोअं
कहूलीकोउारकरैसुनतपरै
पजुवांमनतहानहोइवारके
म—१—संवजारीकहलीरस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रैपीसियवारसौलेपसमारे हुरिहो
१ कचसंधानकीजे कोकसा
ररसनोसुनिलीजे चुनाऊरु
आवैहरताल जहांचा[illegible]तहांसे
पसमारीनानछनुबारनहोस्रजो
हुरयामैकपटकहतसोकुरु:
पुन॥ प्रथमबारसबहुरीकरावे
पुनीलाबोकोइवरकोनीर बा
रनउपजेजन्मसरीर—पुन=
कोताबनपीसैजोहरतारनामेर
सकहलीकोहारकरिकैनपूस
गयेवाम तहांनहोइवारकोन।
म—ऋनबकुहूस्य ऋतील—
सरहरीतुमैहोतखंजनचोमा
सैपिजरापालीरु इकहिवसत।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केसीसउपरजमेधारसोतीछि
एसियवाकेवाहधारलेकेकंच
नमंषमंठाईसंकंठमेराषेअ
दूसहोसकैचलेजहातहांजाइसे

अथवसिकरन

गोरोचनकुंकुमसहितअंगजल
येपीसतिलककरैधसिमाथमे
मनमोहनजगदीस — २ — पुन
मंषुमहलोहितांकन्नरीपारवंव
जीनसमसानकोछारगोरोचन
सोहीकाकरेननहीअतिएपा
ऐनपरे — ३ — छपै — वच
गोरीमजीठापुनीस्वेतअकव
मुलपीसिकरैएकत्रसबतिल
कैरेतिएफुलतिलककरैतिस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फूलतिलककरितिएहूरसालून
वसीकरनकेहेतुरमनीयकुलेसु
खपायूतकहिऔनंहूकहितऔ
तिपायैरमनीरमनवसऔाकत
गोरीमोन्याऔोस्जुएकत्रेकुहि
तव—७—होठा—रक्तचंदन
औरधतूराचाकसमलामिलाए
तिलककिएजासंगरमैसोइव
सहोजए—५—रोऊपितगो
लोचनतीलककरैघसीसीस
योऔावैतिएहैचिकेजपोवसी
चिचमीनशाककोविसरगोहत
पुनीपिसितिलकहैजालावसी
होतहोततितिएहेचिकैतिएमानो
भईसनान—९—पुष्पनछत्रमे
औनिएस्वेतऔर्कऔरुगेरुगोसो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चनसौतिलककरीवस्यहोऽन
हिफेर—८—मालकंगुनीगो
लोचनांकुंकुमनामिलाईती
लकहृषीतिरवस्यहोइहैरीग
हैउहीपाएँ—९—मधुसोऊंज
कीजिरकूअर्कधरीमुलखिन
खिनतासौहितवठे हैविवस्य
होरहूल—१०—काकचौच
वेलपत्रपुनीकुकुमसहीत
साएँअपनेस्येतसोतिलक
करिनरनारिधरीपाव—११—
लीलहरीहूगहनमोहूसाकर
लेताहीघासिछीटिकेपान
हिहृतवस्यहोएजसे—१२—
उग्रहोतजोलीलीयेगिरहजु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुपास सो घसि उपर डारिए प्रीती
अधिक होइ तास —१३— काय
नले कौ मेल लै हैत लौंग सग जाति
पान चुवै पान सो वस्य होत सब
जाती —१४— पुन — चौपाइ
इयो सेत कटाइ सित बासा पुरुष
मूल हू लले न पान के संग खवये
नारी पुरुष होइ वसि ताकी वि
चार —१५— अथ उचानधि
धि — दोहा —
उलूक ज्ञानी रवीवार को दहिन नेत्र
जउ झाक पीसि जुती न वरी के
रै छीटै चतुर साया न वे गिवि कै
ह प्रीति मै उचाटन पर मन —२—
हुनेक रवीवी ज मंत्र मै होइ ह
फिनै बीज वांधिए सब तसि वो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेतोहि—३—कृष्णचतुर्दसीजो
गहैतसुवस्तमेंवहोइकुरिसंग
घसितिलककरिदेषतवांसिउड़
जाइ—अथवंध्याकरन—दो
वरसतिनकोज्ञानीगुरुपंदूदहिं
नजोघरैसोधिकरदसतसनिपै
सवैवादहोइजाइ ==दोहा==
अथपुत्रोत्पतिऔषधि—
मानुषकोलेषोपरीभूमिनगा
डिहोइअतिसुछमकरिपिसि
मेहूकरजुकोइ—२—ग्यानेहु
घजोगनरकोलइसेरभरतोलाइ
वासनमेकरिसोहीजियेवाल
कजनेअमोल—३—
इतिश्रीकवीअनंदकृतकोक
सारभांषाऔषधिविधानं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हसमोधं१—१२—दोहा—
अथ जोनीवरननं—कवित—
एकनिजोनिमनोअरुद्धारिज एक
निहोहोतमनोसुखकारी एकनि
कीकछुहोतकरारिजु एकनकी
जलहोताधिराजत—एकनकीर
तिमैपावनहारीकोमलहोएक
होरसुप्रीतमकोमलप्रीतमको
मनहारी—दोहा—नारीएकव
रंगमैनासिकारूपसमानसुर
तिमाहीताकोमिलैकामीनीर
सिकसुजान—२—रतिरुचिउ
पजैनारीकोपुरुषमिलैजोकोइ
रुचिवढाइजोरातिकरैतारातिरुचि
अतिहोइ—३—नारीहोतयरंगन।
सवनारीनमैहित होत
अति उतंगसीतलसहातेहिमन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिजुकोसोत—४—रक्तपरैजो
जोनीतैघिरजद्रवैजुनारीसोसु
वपुरुषनिकोद्रवैकोककेहीत
रंघार—५—जयलगमगकैद्वि
द्रमैपरतनायौरजद्रवीनवलग
निहचैजानिएगजनधारेहै
नारी—६—मदनांकुसजेजि
पुरुषकोलागतजासोजाइद्र
वैवीगीहीनारीहितासोलाग
नजाई—७—मदनांकुसजा
नारीकोलगैनतासोजाएचा
रमासजोरतिकरैजोउननारी
कुघारे—८—मदनांकुसज्यै
ज्यौलगैत्यौत्यौवढेआनंदघ
टैहर्पकंदर्पकोंककैकामतनतै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इत्थाअन्यपद्मनीयोनीवरननं

दोहा

मद्दुअलोमनीजजलअरुनम
गसुनचरनप्रमानकमलवास
वीरजद्दूवेजोनिपद्मनीजान
अथचित्रनिजोनीवरननं॥

दोहा

अतिचतुरकोमलविमलसहोए
नतापरवासदूवनीवेगीमधुगं
धसम॥जानीचित्रनीवाल॥
अथसंखनीवरननं

वक्रकठोरहीरघअंगपिकहोतअं
गपरवासअतिकुगंधसंखनी
महनदूवतीनाहीउताल॥३
अथहस्तनीजोनीवरननं॥
कठिनछुटकरवालवक्रअंग
महिंबीघुरयैनद्दवेसुगजमद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गंपसमहससनीअतीरसलैन
ध॥२॥ दूधतीयेगरतिरुचिकरै
पहमनीचित्रनीबालइकसं
खनीअरुहस्तनीदूधजनहित।
लछ॥ अथमहनाकुसवर
ननं॥ दोहा॥ महनाकुसजे
हिपुरुषकोआहोहोरसैविस।
ल दृढकठोअतिहोनाहिदूधन
सुरतिउताल॥२॥ जाकेसूछ
मअतिहिलघुनाहीविएतैहि
नारिअंतरहोविलीचारनीली
ज्यौचतुरविचारि॥३॥ जाके
सुनरकठोरवजनहिहीरघल
घुहोइतासमउनमओवरनही
जाननचतुरजकोइ॥४॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महनांकुसकोसीरसुजरहोर
सुजरनेधामप्रब्लमसमागत
नरुनीकोमुरैनवासौकाम–
–५–करैजुतरकांकमनीज
रतेताकोधामद्रवैवेजीन्नगप
रतैत्रपतिनपावैवाम–६–
रतिज्ञीकोकसारन्नाथायात्र
येहसवांऽसमपाम––१३–
अथरातिवरननं
दोहा = एकहिविलासतवहीवनै
सुनहुरसीकसबकोईतबस
बपवैकंतरतिरविचित्रजव
होइ–१–लघुछंद–एकरै
नकीजातरातिहोरजानतरसि
कचतुरजेकोईजोवठिकरैत्र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दैवलतासद्रवैयिननियहिनहोइ
ऊलस२ अलसउ्यावरनन

दोहा

विमलठौरपरिमलयविमलविमलजु
कुसुमसुवासकठ यिमलगारैन
सुखघरविमलसेजकेपासपांन
लौंगऐलाजुगलजातीफलघनसा
रजावड़ीसाजुसकलएहिविधिवि
सेजसमार२देहनागरनि
रमलवसननकरूपारिपारिमल
वऊलाएवहनपानराजतअंध
रसाज्यौवैठआए ३
नवकामीनगजगामिनीनवस
सजहिसिंगारवैठ त सनम अं
ऐकरिराजतरूपअपार२सोरठ
पाईकरऊहिसदेहार पुनेउकजुठा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसस्यकरजानुसोईहहिकिनय
हिममानिए—पू— अन्याआलिं
गन— दोहा — मामकेपकरव।
मपरिवैठायतपिएगोहपानव
वावतिप्रीतिकरिआलिंगनआ।
मोह—१— अन्यमुहितलिंगन-
तरुनीजंघपगिजंघहिमहप्पा
वतलैतासुसोआलिंगनमुहित
कहिउपजेपरमहुसास—२—
अन्यप्रेमआलिंगन—पतिक
टिहुतिएजंघपरजानीपरीमल
पिएलावतिउरजप्रेमआलिंग।
नमानी— अन्यआनहआलिं
गन—पतिकटिविधिचरनअ
रेपरस्परअंकमुषचुंबनमरह
नसहितआलिंगनआमोह—३

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥१८८॥

अबतृचिआलिंगन—तियवै
ठैपियजंघपरवामकंधपरनाम
तयाकिजाननीवीमुक्तआलिं
गनंतृचिनाम—५५—चौपाई
आसनपांचतरुनिरीतिकरैतव
अनंतृकामनिरेधरैरुपाचौ
आलिंगननामयातेसुखपावैत
खाम—५—अबआसनविधि

दोहा

प्रथमचतुरजोकामीनिपतिकै
आसनहितअतिआनंदचित
पजैयचैठविविधिसुखहोन॥
अबप्रथमजतोगजनआस
सुरंगछंद—तियवैठीपालग
आपेकरै जुगजंघऊंकरनै
धरैपियवैठिकजाहिकेलि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कषिश्रासन जोगञनंदचरेव-
अन्यरतिआसन—७जउपर
नामकेपावधरेपिऐवैठिजुज
गहिकेसीकरैरतिमानकहेइ
हिआसनको—८—अन्यमगो
हितआसनकहिउपरनारीके
पाएंघरेपिऐवैठिगहेकुचके
लिकरैमहनोहितजानोप्रिय।
धरीकैरतिहोतसहीदृढलाक
रीकै—९—अन्यइद्रआसन
कामीनीकेकहसिपगजुज।
धरीकैपुनीकामीकरेकसो
सअपवैठारिकेगहेपरस्पअं
गमैनसुखमानहीइद्रासनय
हजानिसुजानहि—१०—अन्य
लालआसन—कामीनीकेक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥इसीफलदेवेकरिधारीकैकामि॥
॥करैकलोलसरूपनीहारीकेग॥
॥हेपरस्परअंकमैनसुखमान॥
॥हीनललीआसनतेहनामस॥
॥षीसबजानही-प्र-अथ॥
॥विपरितआसन—पियपार॥
॥पसारीसोनकरैचढिउपरवा॥
॥मकलोलकरैविपरीतकहै॥
॥इहिआसनसोंआतिकाम॥
॥कलोलप्रकासनकों-९-॥
॥आन्नद्रयिआसन॥
॥पियवैठिकैनारीउराजगहै॥
॥तरुनिपतिउपरवैठीरहेनि॥
॥जकामीनीकामकलोलक॥
॥रैएहिआसनरुचिकना॥
॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परे — ७ — अथरुचिपोषि
तआसन = भामजंजमहिपु
रुषवामकरपरछुविछाजत
पिएनितंबकेपासनरुनीके
चरनविराजतगहैसेजहुरुप।
नीकरततिआतिहितकामनी
रुचिपोषितआनरुचतुरसो
षतिहेजामिनी — ८ — अथ
हितआसनं = चौपाई =
कामीनिवैठेपाएपसारीपिए
पगहेनीजनारीकंतगहेकाम
नीकेपाएहितआसनवरनौ
गुनराए — ९ — अथमगआ।
सनंपसुज्योतिआतिजगहोय
रहैपिएउपरआपजुरोजगहै
हरुवेमुखचुंवनकेसिकरै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ गजआसनरूपअनूपधरै—१—॥
॥ अथपरस्परआसन—चौपाई—॥
॥ चारैपाहैकरकरिरहैदोउद्वैचर ॥
॥ नपरस्परगहैदंपतिकेलिकरैअ॥
॥ भिरामआसनजनीपरस्परना॥
॥ म—११—अथतमआसन—॥
॥ दोहा ॥
॥ पिएठाढितियकटिगहेलिए ॥
॥ अंकनारिवालकामीनिजंघमहि॥
॥ आसनकहैतमाल—१२—॥
॥ अथमनालआसन—पंकज॥
॥ छाढिरमनीहिएआलीनवबा॥
॥ लातियउठाइमजापरलाइआ॥
॥ सनकहतमनाल—१३—॥
॥ अथसुषपह्लवआसन—॥
॥ पिएपौढिकेजंघउभेजुकरै॥
॥ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करैकामीनीकंतकेसीसधरै
१८ = अथमहाबलआसन =
कामिनीकेउपरभुजाजुगधारी
कैकामीनीकरैकरैकलोलसु
पाइपासारीकैपाइनकौबलकु
तिहिनिहचेआनिएनाममहा
चलआसनयहसो जानीए-१९-
अथसुरतानंदआसन
तिएकेचरनकंधपरधरैकटि
करगहिकीडाअनुसरैसुरति
अंतआसनकोनामयामैदियो।
हैयेनिजक्रम-१९-चौपाइ
एबोडसआसनजेहिकरिआ
वै: तबकामीनीमनमवाहिहुउ।
वैपुनिछिनएकपोढिरहैवर
नारीजनउठीलैरउमैकरवारी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥५१॥

-१-पिऍधोवैनातेउ इकतस
जुसीतसतोऍयह द्रढकोद्रढ
हीरहैचसमसंकोचनहोइ-र-
वैहीसेजपैपानकरीपानहीं
इकुनंह रहेनींहमैमगनहैकुं
जुगलभुजकंद-३-कु
गलछन- जोनरनगनसो
वैनारीसंगतौघटैकुंगमनज
जोवसनजुतपौढीऍवेहुमन
मनचौजजोजुगलसोचपैंल
नमुदितराधैछुरैजयाहीसि
नजोचपलतिऍछनद्रुढ
यऊनजोनिहूधनजान-६-
कुनहुतिऍकुआसनचिपि-
होहा==रहरैनजयहृाघुरी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिरमोनकछुमेंहसोवतहीको।
सनकरैआलसहीनआनंहै—१—
अन्यआलसआसन——
तरुनीपौढ़ैपीछहैपुरुषगहैक
छिपानीसोवतहीजोपतिरहैक
रैसुआलसजानी——२——
अन्यआहितआसन—प्रमहै।
पौढ़ैपीछहैपतिवैरतिध्यानक
तिकुचकामीनकेगहैआहीन
आसनजानी—३—अन्यसंको
चनआसन——तरुनिनिजप
पसारीपरैपियतापरवैठीक
तोलकरैजुगपीनपयोधरपा
नीगहैयहनामसंकोचआनं
हकहैअन्यासिथिलआसन—
तियहहकीनपाएपसारीपरेहु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ ══════════════════

॥सरोपगपियकेकंधधरेपतिपा।

॥नीगहेकुचकेसिमचेसियलिस।

॥सनरूपअनंहरचै—ह—अच॥

॥जेहुककंसन:—तरुनीचरन॥

॥धरीभुजनपरस्परअंकभरेहि

॥तउपरपगहोठउच्चहैकेलिक॥

॥रैकामीनिउपरकंतसुक्रीडाकी॥

॥एगेहुकनामरसनसुनिलिजि॥

॥ए ══ दोहा ══ एपाचोआसन

॥करैतवहीदुवैनिजकाम ══॥

॥रोमरोमसुखपावैअतिहितम।॥

॥नेयामइतिश्रीकवियअनंहक॥

॥तकोककसारभाखायांचौहहमो॥

॥घंऽसमपतसंवत् १९.८ मीति॥

॥सवनमांसेसुकलपाछेहीति॥

॥थेअंगरवीसरेसमत २ ══॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२

कर्नेयासंनकेध्यनउपचारगा
जरकेवीजाइका। पानागवेली
कोजेपैस २१ नरगाइकेदुध
सोवंटेइहीरातकेसमैतोगरह
रहैरसैडवेडावनहोरोगाकर्नेपे
पोध असवीकोवोहारकमही
जोगाजुरकेवीजइका इप नाग
रवेलीकेजडइका पूरावाटीके
नकेहीज उपीरजवरतीवंती
होयतवअसनानकरेनापीछे
हीजेहीना।उगारकेदुधसो
हीजैतोगरमरहा। प्राकरमीपु
त्रहोरोगाकरनपहोवछ इमील
करसंकरपैगरगाके गुसाइजी
हमकोनगतकेतवअामाहा
देवजीवाचेजोनजघातुम्हारो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१

मनमानेजाहाइरहेसोइजगतुम
कोदीवीहेतवइमहादेवस्येहोतेन
नेकहिकेहमजइअसखीकीकु
प्रपीरप्रीत्योकेजाइवसेवतहींजो
गकरहेतवेसंकरवूहानदीवो
तवदोवदुअसकथीकुवप्रजा
वसोजासोअसखीचांमनमेइतव
परवतीनेसुनीकेहोमनकोवूह
नदीवोातवपरवतीनेपुछीके
येनकोवूहानेगुसाइजीतुमसे
हेकहाकोबोातेहतोसकलप्री
थीकोचंमहुकरडारेगतवमु
नेमाहादेवजीकहाकीमैतेवृह
नेरेचुकेबोातवपारवतीकहै
केजेवृदनहीबोहैतोाअसोद
रोजवारहेदोवपेहचानके
जाइअनोाइनाकीकेमदकी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

जोजातेउनइसत्रीकोबालकहोवै
॥तबमाहादेवकहीकेतुमनेलीबात
कहीं॥मैंकछुकहीसंवोरी॥॥मनबपार
वतीजुसोकहतहैसे॥होथकेची
नेजानी॥शाप्रेमचरनीकीरत १
होथःतकीवीथी॥ईसत्रीकामाग
मपेकमलहैसोपदीरतारहतहैत
सोवीजनहीलहतहैः२अबदूसरो
होथमंसाहोथहोतहै॥जोनलीचे
मंसीबीचहै॥सोवीजनहीपकुच
॥हस्कमलमेः॥अ॥ओ॥होथ
असत्रीककमसमेकीराहोतुहै
सोबीजकोथाडायतहै॥नासंग
मनहीरहतहैअबऔरचैन्या
होथ॥नानमवीहदेहोथसोकेसे
जानी॥नबकासत्रीकोरतीसमै
॥देहमावैतवजानी॥अन्यपा
चरा॥पा॥होथनीऔन्या॥छोडै

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होयगा सो अगस्त्री जू सुनत होते भ
यो । स्रहै छौ दोय बहरू सो महादे
व जी को ब्याहौ मौ तब इन कु बी
हा की धोतम्य पारबती जी ने कही
इन की श्रीअध्यताई जो तब स
कर जु पारबती सो कहत भए ॥
पुन्य महाधर्म है छ वा अगस्त्री
जु बरनी बनी हो वो । जो मान्ये
धेतो परमी फेर हो अ जानी ए
तब पारबती कहै कथा की श्रोध
ध्यताई जो तब संकर उवाचः ॥
पहले अगस्त्री के उपास कराई
जे नाना पी छु दीन दीया वे जो ॥
तब पारबती बनो करावई जे त
व होअ को दीन । राती वस्ता मे
न नीनी दी जे । नापी छे बुनो क
राइये वऊ तक सनान कराइये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोडेसे ३ चारकरा२ येताकीवी
धीमानकोपेडछैरजडा।।वा
नफूरलसुपडुथडजे।।नाको
जैलास्नसमकीजैपातीस्वो
सानकेतास्कीबातीङ्गुर।। ३
सोचारथसोलपैरथको।।स्वोघ्र
जमोपराहीजहैना।।ङु।।नीके
तपीछेपुरथसोसंगनीकीजै
हीना।।ना।।नोगरनरलपुवहो
रङ्गाथहुसवोप्रीङ्गकेतथ
रतीयतीस मङ्गस्वोकीहुहे
फीरता ङ तासोथनहोथकही
येताथकीवीधी।।कमलको गु
थवंहहोताहुताकोडुपचाराहो
ना।।ङु।।रतीयतीङ्गसनानकै
पीछा।।पेहलेडुपसकरथै।।हो
नासुवतवङ्गोथदहीजीये।।ञ
मेसेकरुपाहानञ्जोरस्पेकजा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होयाासोाअमासत्रीपूसुतहोनेअ॥
वैास्है छवेहोयहरु सोमहादे
वजीकेव्याहोमेतवइनकुवी
हाकीयोतवपारवतीजीनेकही
इनकीऔाधव्रवताइजोतवसे
करजुपारवतीसोकहतभए॥
पूनमहोयश्रीछवाअमसत्री
जवरतीवंतीहोयोजोमानेद
येतोयिरमीपरहोयजानीये
तवपारवतीकहैकेयाकीऔाध
हवताइजोतवसंकरउवाचः॥
पैहलेअमासत्रीकेउपासकराई
जोनापीछेहीनदीयावेजो॥
तवपारवतीवनोवकरावइजेत
वहोयवकोदीन॥रातोवसतमेह
ननीतीहीजे॥नापीछेवनोक
राइये वऊतअसनानकराइये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोडसे उचारकराइ येनाकोवी
धीतावनकोपेउठरउ।।व।
नफुरलसुपउथउ जो।।नाको
जुलासभसमकी जुपातीसो
सानकेररकीवातीजगुरा।।३
सोवारसमोलपैटकौ।।सोम
गसौपराहीजहना।।उ।।नेक
तपीछपुरथसोमंगनीकीजु
हीना।। ।।नोगरभरलेपुवहे
रःझाथहउसराप्रीझकेनथ
रतीयतीस मझसबीकीहहै
कीरतो ।। नासोथनसोथकी
यातायकीवीधीताकनलकोउ
थवंहहोत हैताकोउपचारहै
ना।।उ ।।रतीयतीझसनानके
पीछापेहेलेउपसकरखे।।दी
नासुवतवझोयदहीजीयेना।।
मेसकरुपाहानझौरसकेमा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहीजै जन्यासंकरादाना इजे
तवपुनौकादूवइयफीरीज्ञोष
हीजैस्यातांगउदाक्या॥ उाका
लीतीलकेतलसका॥ ज्ञास्क
नुककेपीछेरास्त्सैनजउ।
पानपूलसुधाबाधाहै॥वाती
कीजैंमाहनघनकीकुइकीव।
नीकंगुला३॥तबहींगतरै
मवारीलपैहै॥तवजागमैष
रीहीजैहीन५मापीछेरीतर।
नहीजै:हीन५मोगरमरहेपु
वहोवै॥कनतीसरापूकार३
जवकसबीकारतीसमस्छे।
तीदुखमाकंचववाकाहोइ॥
तवजानीस्जोनमेब्रीवहोइ।
ताकेउपचार॥रतीकालपाहै
सजैंसनानकरो॥ताकापाछे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलोहानहीजेऔरस्पैहूना
हैनाआऔरवस्तरकालेस्पो
रैकुंमठांमेघोमरीहीजैऔ
रेजंन्यासंकरहानहींजोसव
वृनोकराइजोतलाकीउपैछह
कृतीकापीताऔरचैछरके
पीताऔरवीलइकेपीताउ
नतीनोकेवाहीकोास्पेकजी
वृकरीकेयातीहरकीकरके
ऋगुलरााजातीनीकीयाती
सेवपेटीकेभागजीलरघरीके
कमसकेमेघपरहीजेहीन
घडनसंगनाकरतोगरभर
हेपुनहाइचोलीप्रीऔगा
ऋास्त्रीकीरातीसमेकमर
हुपैतोजनीस्पेकेउसकीजो
नीमेकीउहोतहैसोवीजकु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थाप्रे जतहै।। जाप्पैगरभमेहीरह
ताहै।। ताकोउपाव यहपेहैसें स्त्रीकु
उपसकरावै फीरीइानहींयावैह।
नकीबीधी।। गरभकेहीजै ११।।
सीसांमेंचकोहीजे जन्यासेकरहा
नहीजैतापीछे घनोकराइजो।। तब
औषधदीजै जीरोहकालु।। सरसौंके।।
तेलतामोजीरधाटजे इतघनाइरन
बनकीहइकीबातीबनावैमेंगर
३ तासोंकेसहलपेरजे।। सोबात्र
गभीतरहीजैहीन ३।। तोगरभर
हेपुत्रहोवैअर्धकछठवाप्रकार
।।६।। कहीजे: जोपांचसौपमें जो।
पैसोयनाहोयेतो स्थूल सेयजानी
पेतबकूपनोइवातमनावेसंब
रकुमनावैतोगरभरहै।।पुत्रहो
वै।। अर्थकस्त्रीकोछडाहोय
ताकीबीधीवीचार मुमारेकी
जडकोवोकल।। गर्भकेदुधमे
वाटकेपीलासेहीजै हीन २१ तोस्त्र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जौशूनहोवैकै खलऔरवीचाराकु
सगंधसेर ३ व पीपूवागाजरावाकै
सकीसोनीसोलीगलपैटहीन ७
तौसीगवूंधिहोवैकैअर्धहूसरीझै
घहकासगंधटक १ कुटहाक १ पी
पूटाक १ मधु टक १ गरकेकामुत्रसे
वाटेकोफीरसीगमलेपनकरेसु
पारीसुधातोसीगहीं ६ होवैकैस
वंसनहोवैअपनीरघातकागु
टकासींधाडासेर ३ आसे ठसतुका
सेर ३ आगा ३ वेसतसेर ३ आ खांडसेर
पाग्ड ३ केपागसोसद्यनांवौप्रा
तकालखरनानेरानीघातवासेकु
वसहोवेयाकैवितयउअन्यःअपत्र
नकीसेघसाकेसरटक १ कसा २
तुरीटक १ नगजरफलआकपी
मटक १ रहेचारावीजसहेतमे
वाटकैमैंटरकेगोलीबांधेटक १
तकोसोरकेगोलीसांझकेखार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१

॥ तोवंधेजहोरपुरुषनहारो॥ अ
थवंधेजकौवीयीगोलीयाथे॥
पोसतसेर आ पानीमन ४ क ॥ ४
ओटावे जवपानी सेर आवे
तेर ४ पावरहेउप ॥ नयहकानते
ई नालेगाईके दूध उ ३ सेर हस॥
पुरनगुड सेर ॥ ३ ४ के सबवस्तुमी
ला ४ के औटावे ॥ पानी जवपकी
जवे तबसहतसेर ॥ ४ च ॥ ३ पैकी
मी ४ का बकरे के औटनलेयास
नमे जरीरये सौ [illegible] के खा ४ पै
सभर १ और पैसा ४ कभर ६ दि
नखावे ॥ ऊपरपानी न पीवे दी
न २१ खावे तो नामरद मरद हो
वे गुर्च नामरद होवे तो कीधी
धी औषद गुण करे कोपनाकीगो
ली ४ बु ॥ ३ सामरनो नमेतपे
हके ॥ नीगलजावे रोज २१ मी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नैवास्तोनामरहेसेमरहुहोवै॥
अर्थः औखहूंवेजकी॥हल्दी
नीटकरलोभानचौखहूमकी
छेमेहूइसवकोएकजीवकवे
कपड़ासेछानलेवौ॥साभरको
पीसीरीटांक२औखहूएकटांक२मी
लाइकेचारनोवेखेजहे॥खेतुस
रैवंच ... ॥ औखहै॥
अर्थःइसवेलतक१वेसरीतक १०
१अफीमटंक१केवाचचीनी
टंक१अफकरसाहहटंक१जरु
फलटंक१जावत्रीटंक१इनहस
बरेकोबकरेटंक॥पीसीकपडु
छानकरेसहे॥ममेगोलीवांधेट
कर२प्रमननीसो॥हुकोखायउ
तरसोंआफीमन्वोरीसीचार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नोवंधेजतोहेकामाझूटेतनहींजो
घराइघारतोछुटेहैं॥अथरनैगाल
रहेकीचोखीदाहोरकेबीजस्का
नलकालीसीसीकाटकाप॥
चीनैस्वारबाघास्हींनास्व
इस२१नागरभरतेपुत्रहोवेंज
नाससकेतोहुानहबै॥अथर्जेत्री
जाकेबेटीहोनाहोस्॥जावके
बी॥मोनाकेजउदकापार्
कबूनीगाइकेदुधपीअइहे
वैरातीअसनानकेहीनःतो
गरभरहेवाकीकेघपलटहो
स्ना॥अजनेओरचीथीजाकेप
टमफहिहाइ॥वाजालपरह
इतालाकेयालाकनाजीस्फेऔ
रनाहीवतोकेबीधोनानुसो
पांच प०॥जवाखारटकल
सोठीस्काइ॥ सेफगारटक२॰

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नसाहरलखोइपगुडसुरानोके
रगुपनेबुकेरसकठेइसेइन॥
कोपैहाउथैनामोगुरडारेप
उलनलो॥नवसैबैइडारीके
मीलरहीजोचीकनेधूतनमे
मेरीघेरनघलकेभरइथारके
सांझसबेरेनोफीहजावेउ
पैपरजावोरतमैअनरनहीं॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इयसुसरइके॥ मुरीहुइपरस
मरी २॥ सतवरी ऽ- ॥ घीसरके
ऽ ऽ+ कमराज ऽ+ सेहमुसरी
ऽ+ सपेहीमुसरी ऽ+ सेमरके
रमुसर ऽ। असगंध ऽ+ चीनी
ऽ॥ गइके घी उसबइयइके मैं
कैके अइके घी उमले जइ॥ उ
परसे गइके दुधपीस पुसर
करे॥ ५॥ इयइहुसरीप्रकर॥
गुरचीकेसत ऽ। सतवर ऽ।
असगंध ऽ। तालमुखी ऽ-
चीरा र आंवले ऽ= स्याहमुस
ली ऽ= सपेहमुसली ऽ= गोखु
रु ऽ। तालमखाना ऽ। भंगराज ऽ।
चीनी ऽ२ घी उगाइके ऽ२ गा
री ऽ= छोहरा ऽ= चहाम ऽ= की
समीस ऽ= मुनका ऽ= चीर ३

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जौ- मेयहफुलगनीकरीपैकातरी
उरै गुपसमबककुहीकेमैदकराउ
धौउमसनीछरेनबकेचीनीमपक
यनहैसबरकरमसनीकैगात्री
यथैबुमलछरफलरदैउ-ार
कगात्रीसधेरबरतेहपुससपरे॥
हकरतीसरीप्रकराउ॥ जीसक है
नजेरपरीहे॥ तह सहीजनकेग
ईसेगफुपइमधसेर [illegible] मरसथी
नीगेफु धीउमबरीकुयनइकेथ
वहेजारहाइ ररररररररररररररर
हवहतपकेमुनक॥ गुजराइतीउ
सरची॥ सबगसबरफइमपीसी
केसकबोरहीक्रगीमबुपतप
बेजाबुपलससतोइतलवहीमहव
इछरीहेदबुपपकीजरत सरइज
इते पीकहइइराज ३॥ तपकोडीहे३
ररररररररररररररररररररर
तरकीवपेट हरेकेसडीजनकव

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कसलखैपकौनठुलठा छूतेमेसुख
चैतकुटीकेकपरछनकरैमवज
नौकीवरामीहनुमंपसेरखतहैत
वहयइकअंचपठ ३५ = रतोमपोइके
घवखररोज २१ तपीहैरेकेइसरो
जगुरखवचैनअंचपठ ३५ = करोज
रकेरसरोज २१ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीवघरवतकेजो हउपेसव
चेहहोइपरफुलहोइत मकुंअके
जसलेअंघइजबनीछपीछोटी
रवेउँछिसहोतहै मकुअंकेजलस
इकेचौलसमवकठइकेउकम
बुपघुअंहीचेय रामप्रतपसो
मुछलेमजइग ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीवअंजरछीनकेकसमी॥
जपइसमरीवमिसीरीतीनोपइ
समरी ३॥ सतराजघइजैनअं
रमहोइतेमहीननरीघइकसमी
तजवुकेकपरछनकरैनरु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वरतनमवसमपनीउरीकैथरैव
रैसवैरपीमुइफजौर वइकचही
गोउकैरातोहलीमुरहरीकैकीतेउ
रहकैपोइकैहलीवइघीउवइमु
वरसवचीजकरपरैजकरैहव
रमइगुनकरैमुनामहोइ ऽऽऽऽऽऽ
तरकीबहदुकैमीसीरीमुउगंधक
हुनोकपुपधोतीकैलगवइनीकौ
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीवमुउकैपोहतकरछोकल
लैकैचरहदउसकरंगनीकरीलेइ
पउमरीमेहडा चीनीघीउमहेलु
मुवनवारकैवइमुमतोइ ताजन
मुरमहोइतसोठीकैचहनीवनर
इसोतरीसेवइमुरमहोइ ऽऽऽऽऽ
तरकीवचुरनकमजोरीकसउफ
चरीतालमरी ६ हरवैयुकनु
इपैसमरी २ पीपरीदुइपैसमरी २

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सनुरडुडपैसभरी २ थडुभीरंगापासु
भरी १ जयनी डुडुपइसभरी १ सौंडु
चरीपसभरी १ भीरी चहुइपैसभरी २
नौनसौचरडुइपैसभरी २ हींगभु
पैसभरी ॥ वहैरकरवडुडुनडुसपैस
भरी २ गरकरडु धपपभरी उपरसे
पीसे

डुवरधीहडीके वयुरके पतीडुकै हरडी
एक समभीलडके ओरतमकुपडु
डइनीचे उपरसे चीलसमवरठइके
लेर पुडुलीलेजइतैनीक होइजइ॥

नरकीवतएके पतसनीचकलेडुव
इमीजीकरगवीसडुनलेमलगपहेइ

नरकीवपेरडुहीके पारऐनकचर
नीवनबैगाइकरहतीमसनीचेथइ

रकीधनजोरीके कडइल वैजरी
उजरपुरसवलसकडडलथैजरीडुव

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेर ३॥ चीसी के घमेमसुखवे पीसी
के मरहकरे गइकरहुं घ हुइसेर ३२ म
कपरमपासीविपीके हु घमचुराके
नवके हुहिजमवे हुनीकमनलीकेम
घनकरछेलेइमठजमीनमगपीले
इमखनकघइकेघजनजघनरी
सतरोजथइपहरेजकरे घहइमीठ
इनथइइसतीरीकेपसनलेजब
नइहुपघइ ररररररररररररररर
तरकीवघसीके केघरलकरीर
कपइसनरी१ पीपरीपइसनरी१
वशारसोठीपइसनरी१ कपीमक
घेलनरी ॥म डेहुपइसनरी१ कु
हीकेसव मधुमसनीके गोसीवधे
सवरे१ कगोली घइराजप्रतपरसे
ररररररररररररररररररररर
तरकीवपुसतइके पतलकोहड गंउ ६
सेमरवकमुसरगंड हु॥ सेहमुसरी
गंउ हु सपेही मुसरीगंउ हुजोगु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कसतमेउ रसोकरगेउ रगइके
धीउ मनुजीके गोहीवधईसके
इस उपरसे गइकरहु पपीऊरउ
धऊनपुसदकरै थरइमीठइयच
है

तरकीघनसुरकै गइकरहहीलैकै
पीतरीकेघरतनम पइरघइरोजनी
नीउ भोउसघरतनमकीनरकी
नरेपीतरइजातहै सोकफुरीसोर
गरीकेलगव इऔछहोइजइ—

तरकीवर्धनपुसदकएलूपरकवीऊ
उ-सेहजीर उ-जगपुरानीऔपैलम
रीगोलमरचकउपैलभरीगा संफ
र उ= सबकमीलइकै चरीहीसब
रै जगक भ्रइसपीसेहुइसेरपनी
मछनीकेपीजइ चरीराजपनुप
मरपरैऽऽऽ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रकीयतइजकेनीवकेपतकररस
कफपमहुनेष्कमीलइके घोहेमरसु
तवरवरीगोलीवपै इइइइइइइइ
नीवकेफूलगोलीमरचहुनेउके
मीलइकेपीसैगोलीकरउपरवरी
वधैगोलीवड़ाइकेठंडपनीपीवै
इहरमधुरघृतनीवकेफूलपीसी
कैपेडुपरलगावैइगाकोरहूचौ
गगमेलसुनएकपारुकेलौके
चौरगमेपरकेमटीसेबंधकरकै
जीमेकरइहूइजेकैपनीमेवारीहूइ
तैउहइपनीपीवैबड़ाहीगपमी
मघरीकेहृतीजरमेलेपनकरै॥
गइकधीउवात्स पुरनचहुरकम
उपीवैरहेइहुइराजकीवदांपीवै
वैमूरमहोइजगायइइइइइइइ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरकीबजुलबनमंजन ।।सन
कैयकुनऽ-गइकधी ३ऽ-सक
रऽ- तीनीजुकमीलइकै इक्षुपक
तरकीबजनजरीगोलीव थैस्त
राजघरस्कस्कगोलीस्कपह
फोबदी रोटी हली धीउखाऽऽऽऽऽ
तरकीबहइकैगधकनइनुक्षगो
घधिछुक्षुपसमगरी १ स्पोहग
चउकीक्षुपसमगरी १ मीसीरी
पइसमगरी १ लहचीचीरकैपती
मवस्कैइसपीसीकैसक्षुकै
तेलमफेरीकैलगवैऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीबनजरीजइने।।कैबइक्षब
रागगरीलेइ चुनक्षुरसीकरा
लउसकबनवैस्कइसपनीबै
वइकैसगवैतेक्षधतोरजइ।
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीबहइकै चउकीक्षुस्पोहग

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहरूवनवैनीसहस्रजरी
उरैहूनैकस्यैकरमवुकीकैघसी
पनीमसगये
तरकीवसैगरहनीकैसकैगीरी
फमसपुइइअपकीममसचरी ५
सोतगमसरयेक १ कुजीकैतीनी
उकमीलइकैगोसीचनयेपरम
नमरथूकीरतीकैहमनहोइतेस
हतरकेगोलीचयैहीनकैहसतहे
इतनेबुकरसतगोलीबनयेहु
नैवधनतसइमीरारलोउंथेहूहे
इमुसकेहलीत्रातयेइत्रमसहार
हूरकीयपुसटरकैलकुगापरसत्र
तीष १ त्रगरपदसमत्री १ कायल
गरपइसमत्री १ चंदनसुपेदपर
समत्री १ जीरसुपेदपइसमत्री १

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घसपइसमरी१इय चीछोती
पइमरी१नगरमोल्यपइसम
री इेघनपइसमरी१मुरेठीप
इसमरी१जरमसीपइसमरी
१नगरपइसमरी१वंससोच
नपइसमरी१पीपरीछोटीप
इसमरी१कथोलपइसमरी१
मरफैलपइसमरी१इलीची
नीपइससमरी१नगकेसरीपइ
समरी१तलमखनकेचीजप
इसमरी१मुसलीसुपेद३=मुस
लीसीअह३=मगर३-संतव
री३=इघ३-गुग्गुल३-संकर
३१॥ घीव३॥ घी३॥ कुम्ह
ड़ौरस१क३१ ===========
नरकीवपेरचलैवैमोमपर
समरी१इंडुजवपइसमरी१

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

येलकग्यहपइसम्मरीकृपौउवेपू
लइसवकुटीवैकपरछिनकरैख
नैकैयजनहमरीभरीदइचंगहो
इग्यनकरैऔरामहोइ रररररररर
तरकीवपीसइकैघीउकुम्हरके
पठ१कलनीमकपइसमरीकृस
जौघरीपसम्मरीकृचरउनीमकद्धी
उकुम्हरीकेपठमम्मरीकैगरमक
रैजीसतरफकुगीपररहैतीसतरफ
थुपपकइहैरतवउसकग्यहनीक
रीकैघरैचरीउनीमकेउपरसख
रचंगहोइ ररररररररररररररर
तरकीवपेटचलैकेछुलीकुचवै॥
जमुनीकै।।ग्यसरीकैतीनीउवर
चूरीकैकैपीसीकेछनीलैइतव
पीम्हइसगैतवजोरचुनघोसी
कैपीजइचंगहोइ ररररररररर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नरकीलसीवहरहवेनकछोकनी
मसेस्येकइमवीमसेस्येकइमीर
चमसेस्येकइतोठीमसेस्येकइती
नमसेइसीगीरीपमसेस्येकइस
यपीसीवेनमसेइहरखजस्य
इखनेलहरहीयकनीकरैकेवी
भीहरहीवेचीलयेवीनसेर ॥६
चीरीकेचरीपवीकारैतैयगइ
करइपसेरमरठरमरठसेरठ॥
चरीरीजसुबवेजीसमेदुपलै
रसोवेवै ॥६ छहतमेसुबवइद्ग
वहसेरहपसोवेजयेतवस्यक
मरीवेवरतनमलरडसवीपे
दीमेछहयकरैवरतनमोयकपस
पेरैरतबरेकगएतवोहरड
गएतकतरैसकगहवोहडस
केलीतरस्येकयरतनगऐतोसव

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपरतहदीकरखरतनधरैचरो ॥१३
नरसरवकोउभैरपुरकीहैइतखनरैके
चरतनपतलसचुइचुइपरैकगो
नीवुहइतचजतनसूअरतेलकीनी
करैचउतकीमतीहैचौपीतेल
बनैकोपजननीनीहमरीभरीठ
इहीनचलीस ॥ परहैजसख
चीजकचकरैबनैचहैइगोठकै
रोटीअरहरीकोहलीचीउचरी
पुसमरीहलीमचहूरोजतव
चैसठीअजरजाइसनीपतनेरह
जैइछपरमतजरचरीसुलजाइ
छातीकेजरनीजरचरकेसुलजाइ
चरेगोलजाइमूतकछजाइअन
कोसजरअहमीनीमरहहोइतै
भरहठारमनचकैजरनीजाइआ
मीमीकारककजरारसचीकेद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रीकनहोतहोइतैसरीकहोइ ॥ रामबु
नपतेसतीआवनीकरूपलननेल
करनमहै ररररररररररररररर
नरकीयगरमीकेवंसलोचनतोल
नरीइसीगीरीपन्नोलनरी १ गुज
रतीइलइचीनोलनरी १ मजुफल
तुइमदरकेजरपंचनोल मरक
अकैजरीअपनोला ॥ यइरीकेज
रीअपतोला ॥ सनअगलगअलग
कुदूकपरछनकरै ॥ जरीतीनो
उसकैमकुटकपरछनकरैसब
सकैममीलवैतोगोलीबधैअवे
ननरकीपुजनइसकचीलमम
धइकेतमकुकीनइबुपबीचे
अंगुनीपरैवइरीकीलकरीकेत
यपीअइलगैतवबुपबोठीलइ
बुपपुअहैयेहुनेवबतलइस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोजलेशैतेक्षुरमहोररररररर
रहवरसेमुहक्षुध्रुनत हैतवनेके
गतनाबधुरकेछलीक्षुवकेछ
लीगुलरीकेछलीक्षुवतरके
छलीजमुनीकेछलीलकेसव
कचुरवैमुहकरवें हवेकेबु
पचुखैतवचपररसेरपनीतव
ठंछहोरनवबकुलकरैनवक्षुरम
होररररररररररररररररररररर
तरकीवसुजयकौचिलिकनर
है पनीक्षु ऽ-मुसरीहुनास्यार
सपीहुऽ-पेहुक्षुमुजवक्षुपक
चऽ-हवइकपरमनासतरोऊ
घइ गइकरहुपपनकरै हुपन
भीलतौवसीपनीपीवैरररर
तरकीवक्षुपीउठइकेचीरगम
जोवतीकेहमहैतवनेकलैके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीतरीकेलोटकीपेहीपरसुप
रीसेसुपघोटइअजनकीमा
फीकघोटैभरीभरीअखीमल
इहैतेआरामहोइजाइ ।।।।।।।।

नरकीथकरेजपीरहुतैमहरेक
सुनगपुलुइपुलुइखोरीलवैमी
जोथैप्पयइहेइआरामहोइजाइ
।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।
नरकीयपेहलरहवेजोनीतीम
हीनतेउपरसेहूयतहोइतेगासै
जनथैअतरछलसैरउप ले
अवैतोथैछहरमसुखवैनकौ
मरहबनवैकपरछनकैरत
कोछुटकअरकैयजन ५-
अरमरोरीबनइकैखवयइही
न२१तहीकेउपरछटकअरो५

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेलीपुरनी धइहींन २१ घटइमी
ठरनथइसोमहेहए उसेछकरीहै

तरकीब धनुपरदीगलेइतकीबीध
गधकदुधमेर ३८ पोहतकेबाउरी
कचीदीनचोरी ए छहर एत
कोडरीके धोवचनवे छोकसनो
करीठरेतको गोलीबनपेधरही
न २१ घटइमीठइवचए इसो
केपसनजबहींन २१ तबसेछुले १

तरकीब रवनइकेमरक इइसके
फलकचेसओबेतको बीजनी
करीएरे धुपबोइडरे वजनकेब
थए ३= धी ३ ३= स्केमडरीकेज
जोतरकरीवनवे ताक्सीरादीकेस
मथरहींन १ तरकरीमनीमक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नऽरै रोजुषइतोमहदेव॥ऋछप्य
रीहै षहरमीठइनषइ हसतोरी
कैपसनजरहीन ६०८८८८८८

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेसायनमः॥श्रीरामजीसहा।
सीतराम श्रीगंगाजीसहातनोमन
पापीकोकुसाग ॥चरनोगनप
तीचीघनवीनसनरामरूपपुरा
नहूकरतारावरनोचंद्रसुर्जकर
तीरामरूपजासनीमिसमोती
गुहनसारामरामरामरामराम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

मर्दइकेदूरकरनेका छछुंदराके
राकतसे बगलापानपराली बेग
हनकाहीन छपरामे बोसदेना
तोजयहोइभारी

नामदेवः कारार्न मंत्र

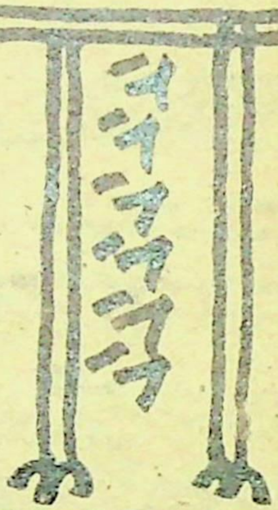

रजंद्रनागपंचमीकोलीखेकगद
परहवीचंदनसेतोसापघरमेन
आवेगा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्रगौकाबोरातारकतचंदनसे
पानपरलीषकेपीलाइनारोज
२१ओआरामहोजाइगा

५	५	५	५	५
५	५	५	५	५
५	५	५	५	५
५	५	५	५	५

जंत्रपरसोकाहैगोरोसनासे
कजपरलीषकेआगेधरीहैना
तोआरामहोजाग

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेलीकामसानचौथेनेकाकाग
काराकनमेचअलपानपारली
घनागरहनकादीनघरमेगा
उहेनातोमासानवांधी जा गा

जेवकयलयाइकाहै।।आघ
मेपालीचसैतक ऋसवगांधके
सरमेघजायाआरावीसाइतीस
वुनमेरीकचीयमहसकरके
सागायेगराज ७१ मे जागाः

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

जंत्रजरैआकहैताभीमसैनीक
पूरवोऊकापीतसान्यओजपत्रपर
लीषनानाछुव्रपष्मगा लाम
गलदैनातोआरामहोजा गा

जंत्रकानहातजोवन्धैनोकछुआ
काराकतस्यपानपरालीषकेगा
लामवाधैगाआरामहोगा

१११११११११११११२

२ २

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग उयंत्रंपूतकाहै गोलोचनवीसा
इपराइनीसालभोउपत्रपरली
पनाना छुत्रपुरुमेगालामेउ
सहेनातोआरामलोउगा ग।

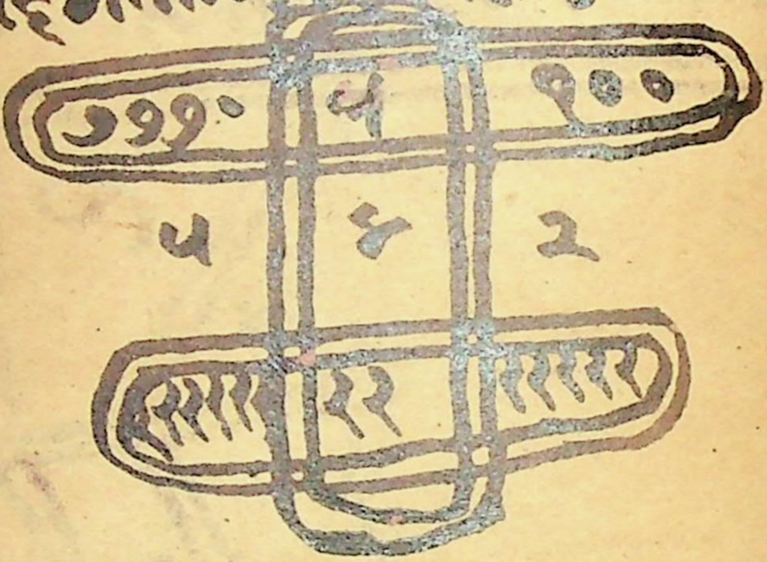

गराजनजनजंत्रा।ऊआसापुरी
धुपराकतचंद्रनसालसीखके
पानपूषागारोज ७१ मोरजागा।
गराजनजमेगा

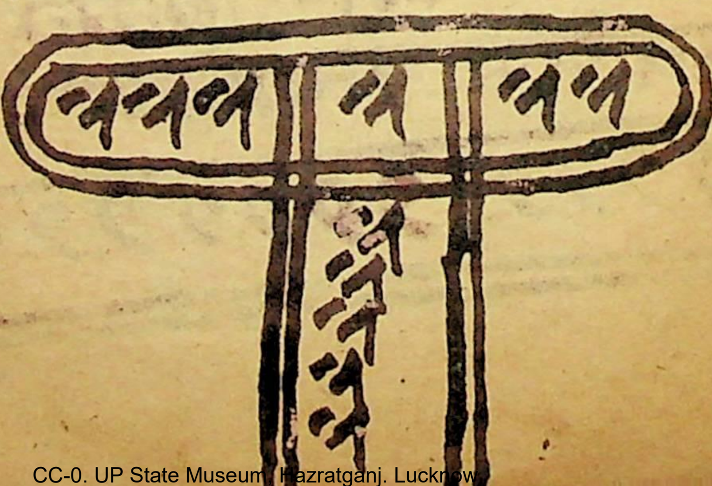

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सापजो घेरै नकराजंको है ॥ राका
नचंहनसे घगसापान परालो ठी
के धीलइ हनातो आराम होजागा।

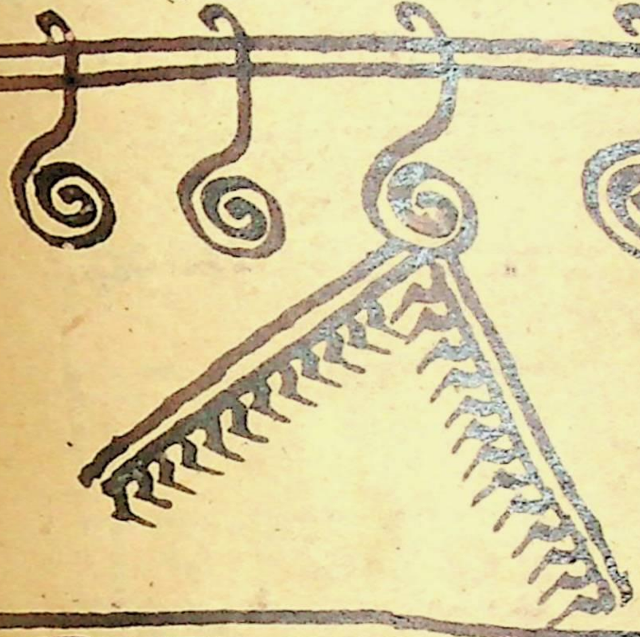

जंत्र पीलहीका है ॥ संघहरजनेमु
कारसकेसर मधगसावसान्ताप।
नपरजमाकराया गारोज ॥ १८
मो आराम होगा।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्रतहरीअंतलफ़सहीलसकाहै ॥
जीजसेनीकपररुकतचंदनसान
नामाकापवपरालीखलाअरतल
काहीनगालामेंजसहेना

२	२	२	२
२	२	२	२
२	२	२	२
२	२	२	२

जंत्रवसकरान ॥ गोऊकारोनीप्र
आवरातकानामकआपानानां
सीखककारीकुनाकोबीस
इहेनाचरामगरतककरनामे
आपसोआवेइगा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

जंत्र धीनहींहोय ।। पेतुरकापाला
परलीषनायोहीकेकलमयोली
कारशानछत्रपृथमेक्कारामलोजगा

५	५	५	५
५	५	५	५
५	५	५	५
५	५	५	५

जंत्र जरातयाइकाारकतचंदन
केसरमधसाव्यपानपरलीष
केषरगानछत्रपृथमेराज १मा जाम

333	४	२५५
५५५५५	२२२२२	

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्रदेवीजीकाहै ॥ इसबकारोजपरच
लातहै ॥ रकतचंदनसे भोजपत्रपरली
खनाइसकाहसीकाहीन गालामेंडालदेन

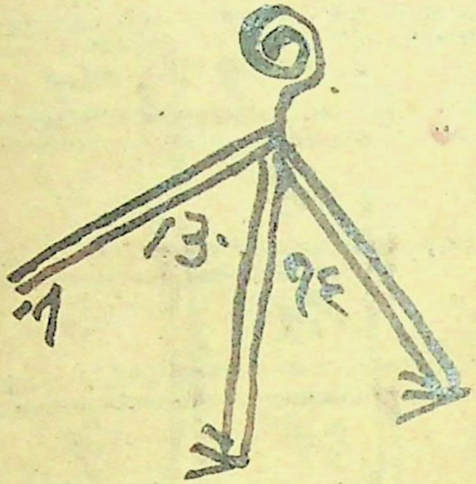

माताश्रीजी का जाप ॥ जेमतलबका
घेसोहोगाजाप १०००० मंत्रपढ़ी।
ढ़ोवो पढ़ीकाराने मंत्रदेवीसांहासाह।

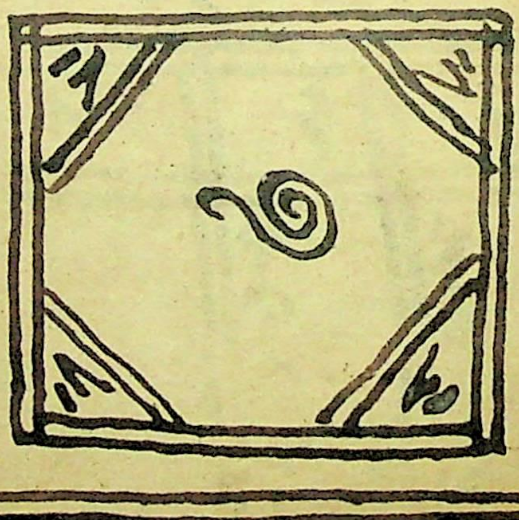

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्र जमुरूका है ।। गोलोचन से ज्ञामु
नीका पात पर लीखना गलामे डाल
देनाः आराम होगा

जंत्र पीअुरी का है ।। राकत चंदन सा
पान पर लीख के खागा रोज २१ मोजाग

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तारातरे होमकरे तो।चालकजीस
गामनमे जपनकरे हनुमानजी
ध्यानधरे तो काऊजस्पीष होजा
नकसपरजपहर ड़ीसे कागदप
सीखना।

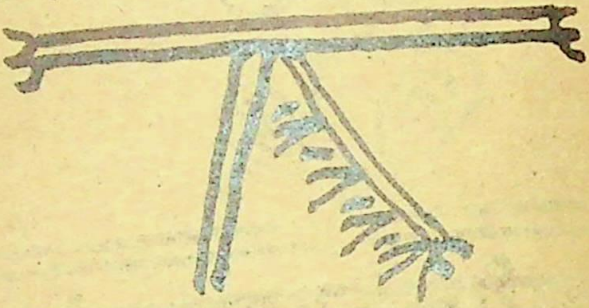

मंत्र अंगीनीकाहै ॥ रोसनाइसे चतु
कपलापर सीषनाछपरमे षो
नातो अगनपरइजार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्रसुगधासापकाहाकुमकुमासे
पानपरालीखैकेखागाजोक्कारामहोगा।

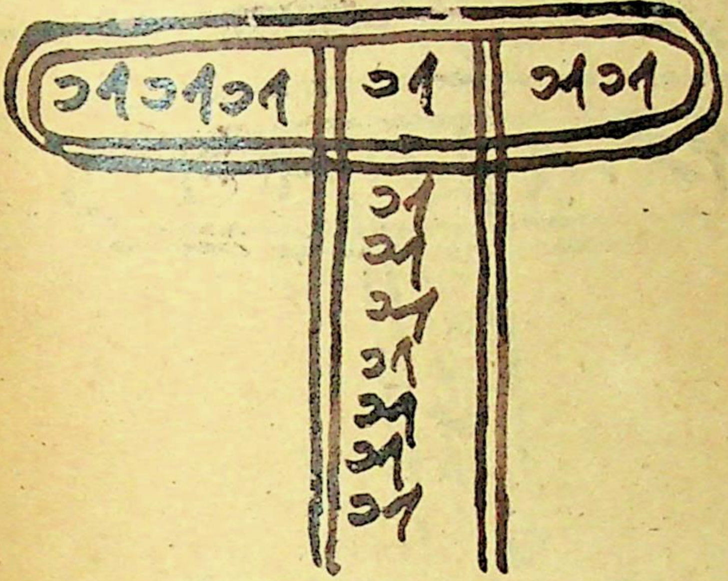

हूगरलगानेकाकागकारकातसे
भोजपत्रपरालीषनघुषनछत्रम
१ घरामेश्रोरखदेनतोजपहोगा।

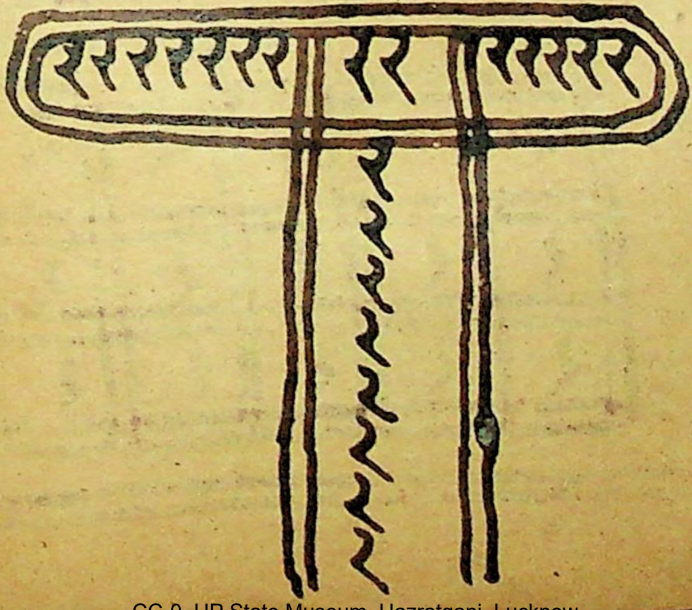

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्रगोलाउचका आपकाराकत
सेतामकुकापतापरासीक्लानछ
त्रपुष्पमेरोज११मेजागा

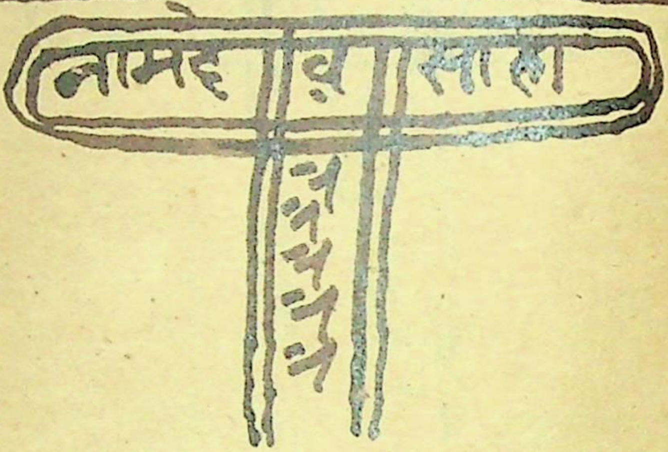

जंत्रकराकमुतीकाहैादेवीचंदनसे
पानपारलीखकेखागारोज२९मेआ
रामहोगा

२	२	२	२	२
५	५	५	५	५
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंत्र ताप का है।। रोक्त चंदन केसर म
घसाक्ष पान पर लीखे के खागारे कु
रु मे जागा

२	२	२	२	२
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२

सुखैनी का जंत्र है।। गोलोचन में जो
जपत्र पारा लीखे नारू का इस का हात
माला मे डाल देना तो आराम हो जागा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातजोनीकसेनाकराजंत्रहै इसी
चंदनकेसरमें घसाकेभोजपत्र
परालीखनाअराहनकोसीनमे
गासामेडालदेनातोआरामहोगा

जंत्रमरोड़काहै ॥ अगासपुरीवृ
पराकेनचंदनसेनपानपरली
खनारोहीनमेगालमेडालदेना
तोआरामहोजाता

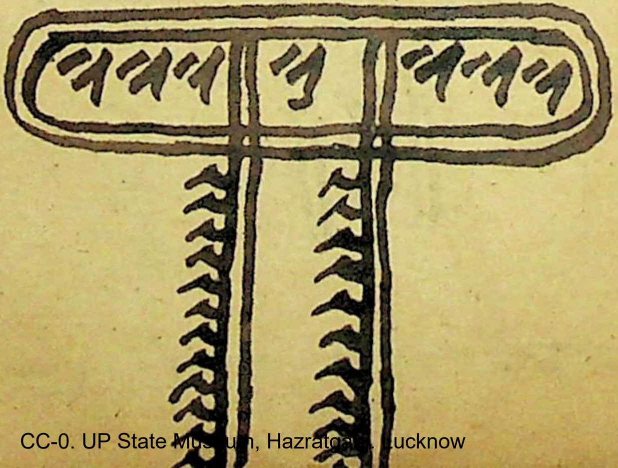

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुम्माजीतनेकाहै कागकाराकत्त
सैभोजपत्रपरलीखनापुखनाछ
त्रमकरानातेजीतेगा

८	५	१
१	५	१
१०	५	१
३	५	१
१		१

लालासाहेबकाहै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्री रामाय नमः

अथ सूचीपत्र की चरनी को

प्रबंधकपर		४	मंत्र मुल पा
सुचपर		५	मंत्र होमक
चदै		५	प्र मेहकी
चरसीरकी दव		५	श्रेउवीच
गोरती		५	गमगारकी
कठवरसीरक		५	नीपुंसीक की
तलवरसीरक		६	के सीहतुरन
चंदरि जल		७	गलव
लघदी जल		७	नमरदकी
जीरनजरकीदव		८	
वपरीक्षकी वसं		९	वीजेतुरन
न मलीकी		१०	वत्रककीब
५ सम्रदीघ त			हेय
रकतपीतकीदव		११	वलकेका
वरकीदव		१२	मंत्र
कापनधनत		१३	मंत्रपुज
		१४	मंत्रपुत्र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्री ग णे शा य न मा स्त्र ग च्च न्व त र प्रका
स ली ख्य ते स्त्र व स्त्र स्त्र व कं पा राँ किंप
प्रु र न सी र क र स क र्स र च री ॥:४
ति स र्म्मि ही च उ र प्रु र न प उ मरीः ५।
पि सी र्के सी र क प्र ऽ रि कें हा ऽी म्र चुर
पुं ल करी ते वं ल्म ति नइ स्त्र म्र व ऽ
री र्द इ ज व प्र ही कि स प्र हो इ त व ९
कसि सी प्र र वँ ति स र्प्र र वँ ती को प्र
ष वं द कैं वै च लि स दी न:६ प्रेर्म
रा पँ फ रि च न्व ऽ प्र प सेर ९ क ५१
षहो सी सी म मैं ऽ रि फ घों ऽ कं ली दी
म ग ऽि राँ व दी न:४० च ली सु तो स्त्र
स्त्र व क क प र हो इ ज इ जौ पनि
र ही ज इ तो जं र तें नी करी लें इ
को उ क हू की स्त्र स्त्र व न्त प रा न
ही नी करें त हें तो म्री स्य है इ ति प
रा स च्च

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है परअर्गिन स्वादु होत है सो निस्कुल
है इस मे कोइ संसकार नाहि की पञ्च
ज्ञीस जोग मे च है जिस मे स्थपान
रै सो सवु दुरस्ता होइ इ सम्र र्पवु
औपराह्न कंमरी १ सि गुरुकं पर स्त्री
वे दोदूपह्न कानरी १ पतिनि उ ७ कं मप्री
मूपकै सी राकाप्रचो ह्न चरी ७ कं १
करी ७ क सो लि प्र राषी कं ७ कहडीर्म
चारी अग्र गु रा वरुप रै जिस मे सी सी घरै
पैरी हाडी कं मुब नाइ वरुभरै नवक्र
च देइ छपहर मंद सिसी कामुबबु
लेरै षै स्योग सी नल्प पनिक सैम्र
चीमाति पह चं दोदे पम्र भूचीरनी
जोग कं सब्प परस नादेन नो सनत
र सोइ जोग करै मुबलगै वहुतास
र परोग जर पुठनेहोइ वरनस
देहोइ अस पचीक दइ नो अर महो
॥ म्र च म्रर्ण प्रकरम हा॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

... Some ver...
... form in his
Besides its style differs.

7- दिङ्नागलक्षण - Some really ...
Bhasa and their style too ...

8- Then there are two more pla...
but that cannot be thoroughly for...

Ashvaghosa as a poet. - Aśvaghos...
declares the purpose which lead to
the Kavya form; he recognizes the...
in the delight of the word and see...
and therefore he sets out the truth
to enlightenment in attractive garb
that men attracted by it may ...
aim and extract from his work th...

In the later classical writings th...
such purpose. They are only for the ...

He is an Indian Milton as Kali...
Virgil.

He is an Italian painter of 15th c...

In order to fulfil his main objec...
he sometimes has lost the niceties...
He is more like a sculptor than ...

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ा:दु त्री।२५ जउ क्रूर।२५ त्रिकृल।१२५ कुली
ा कु।२५ प्रि स्त्रं गु।२५ भ ज र्थ।२५ त जो२प च त्र।२५
जौ गा।२५ मी चा।२५ कं को ला।२५ सु ग चा वल
व इ जु रं गा।२५ क भल की जर।२५ घरोते
पीपरी।२५ इल इचि सोता।२५ दंवु मै जरी।२५
इ।२५ व सा।२५ चानि स्त्र त्रि र।२५ सोक्रू।२५
य द वु इ पी सा के प नी म य ह इ जेल के
गु न प नि ले इ सो नेल म प च वु ज
प चि ज इ न व उ ज री ले इ सो सि स म
र इ सो ते ल ल ग वु र जो जी एं च रा
इ से ते ग द दु व त्र मै इ ल क्र इ क्र ल
घ दि जे ल ते ल ति ल क से र ऽ ल के
ढ क प नि चौसठी ह क भ री ६४ जो र
इ द हि का।६४ सो तल म प च वु त के
ते कुर की दंघ दु कु इ म ह रं वी
कू चे द नु ह र दि त्र स गं च मो च
र हरि रं नु क र स नि स व द वु इ तो
जो ले ले व स व य क द हे के जो प घ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ पंचसीर की दवा सोठी पीपरि
पिचं वाइभरंग चीत त्री कल्ला तज
पत्र भरलाइचि सम भाग ल्लैत्य ही की
वरवाशी तहि भगुडा ऽ रै ९ कक कुहै
घइ तौ यउ सीर जाइ अथ अन्य उप
र थांड्लं कं कढ तै सो वै तौ यउ सीर
जाइ अथ तैल कसिस कुड चीत पीप
रीनल वा सोहर तल भेनसीती करि अ
री घइ भरंग सेचौधन तौर डु कंवीज
चौ वाद सुनी सभाग पनि तं वां ही कं
तैल भ प च इ इ इ स हृ ड कद्व
भ दर कदुव गो मूत्र तैल की साभल्इ
सो लप चढु कं तौ तैल यउ सीपर चुप
र इ तौ भसानर है अथ अन्य उप उ
हर दिक रुइ तौ रइ कर स तैर गर
इ लेपकरै सो यउसिर जाइ अथ चं
दुदि तैल नल जिलक दुइ सेर ।१२।
चंदन सावं द टू क १ न गकेसा
री ।२५ गौरोचन ।२५ अगर तगर ।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

On :—

e Sanskrit Literature

...ष्वघोष first Brahmin who took to the
...ध. Dr. Keith's view that he was a
...ng because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
...assage of [illegible] in [illegible] also occurs
व्यवसायाद्वितीयः सोऽस्य हरवत्प्रमूलं प्रयातौ । ([illegible])
... येन प्राप्तं पदममन्तरम् (अश्वघोष)
...s proved by writing an epistle to [illegible]
...is prior to the date of Kanishka.
...o Yiberian opinion of बुद्धचरित—
... belong to [illegible] school at all — golden
...irregularity due to these versions being
...ence his priority to [illegible].
150 B.C. and 100 B.C अशोकावदान
50 B.C. " 100 A.D अश्वघोष's date

बुद्धचरित ii सौन्दरनन्दकाव्य iii शारिपुत्रप्रकरण
...eds in previous life up to his enlightment
A Kavya in 18 cantos. Deals with conversion
...ther.
A play in nine acts. Conversion of शारिपुत्र

...inst Brahmans. But it is not the work of
...abe inscription describes. It was really

...n appreciation of बुद्ध in various verses.
...ves the fact as it is much polished.
...mentioned by chinese pilgrim इत्सिंग
perhaps it is the work of [illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यु त्री।२५ जप कूर।२५ त्रिकूल १।२५ कुली
नु।२५ प्रिस्क्रं गु।२५ भग थ्र।२५ न जो।२५ च त्र।२५
भो ग।२५ भी च।२५ कं को ल।२५ सु गच्च बल
वइ भु रं ग।२५ कभल की जर।२५ वरोही
पीपरी।२५ इल इचि सोगौ।२५ दंवु मे जरी।२५
र।२५ ख स।२५ च्चनि श्र।२५ जि रं।२५ सोकू।२५
यदवु इ पीसा के प।२५ नी भय ६२ तेलके
गुन पनि लै इ सो तेलभ पच वुज
पचिजइ तय उ तरी लै सो सिसभ
रइ सो तेलल मकु इ जो जी एंच्चर
रसे नैग द दुवज में उले क्रइ श्रव
घदि तेल तेलतिल क सेर ऽ१ लेके
ठकपनि चौसठी इ कभरी ६४ जोर
इद हि का।६४ सो तेल भप चवु तके
ते कुट की र्दव इ दु कु इ भहर्री
कू चे दनुहर दिक्र सगं च्च भोवु
रहरि रनु कर सनिसव दवुइ तौ
जो लैवसवयक दहैं के जोभप

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो जैन मप चव्युव उ जर के सिसी मेर
षव सो तेहल वुँ जो जी सि जरू जर
विपम जौर जर पैन वच्य जर गृष्ठ
नी इ त्रि कैवलक द वल्स जो नवै
दिनतिनी सो ऽ हु नलैवहत गुनकै
श्रव जी ति जो रा प्रसँ सं नमलौनी सो
यनपपरीक्ष हं. सुपदि वैं, दल्ल वुरीहम
दरे क दृच सह उकदृच हरिवर ऽक
ऽ कसो घो है श्रीति नी ति नीस्त्र चै दइस
रवु सैपृह मैहिकरी कोरथि कै दृइ सेर
उपरकीश्र चीदेइ जोन सा होइ जर
श्र गुवंसं मलीनि॥ घ प रि पश्र य वु
किकैक पर घ नकरै मी चै कै चु सि कि
रिह द नौको ऽ कमकैकै चैल मरीग
इ कनैनु तसव्व त ऽ कप हर मरीर
गरै जो वउसिर जर श्रववासदिछ तं
रू सै कर सु सोर हकमरी॥१८॥ गो घू त
ह कसोर मरी॥१८॥ गो दृच ६ग्ग चोसग्गी ह
कमरीच मपचवुँ चिर इत॥१२ कुर इ
श्र॥१२ मो वय अँ ऍि मच्चु॥१२ नि नु वल्ल॥१२

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२।१२

दन१२ इं दो रानि १२ मो ह कमर र त ग
१२ सरि व नें प सं क मल ग ह १२ व प म न १२
द म व १२ मु र ह रि १२ म व की पि र्ठि के के
म च वु मो वीं व इ पं स भ री १४ स ह नु १२ तो
तो पी न ज इ श्री वक्रन्य ठ प इ वी प र
नी ल ह १४ कु ल उ कं प नी त व ही क पी पैं दि
नी तु व ज गु नी की श्री व की घ ल श्री र्जे
न ह रें की व ल स म म ग कै कै मो ह चु र
नु क र मो र ति क म जैं दें इ प नि म सी प्र
ता क ल म ली क छ नी लै इ म म पी ५
सी के पी पें दी न १५ तो र ता [illegible] पी त नी
क हो इ श्रीव ॥ श्री श्री तो ल ४ वं म लो च
न तो लें २ पी प री तो लें १ ग ज र ता इ ल
इ ची म सं ६ त ज म सं ३ म व क पी सी
क च री र व इ र्चे ल म री व इ तो द र
क स स्च स प श्री सु ल मैं दा नि ब र ह प
पा ९ क द ह न र हैं श्री वक्र न ठ प ९ व इ म
रं गु लो ह म स्म ह रें म ग म ग कं कें चु र नु
र ९ क मै सें स ह ना के स व प र द र ज र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रण कल्पनछू त इं दो र नीत्रि कलर इक
द रु हर दि सरी वन पि न्य वन ककुद
नी कमल गर इल इ ची म नीं द
न्तु नी स्त्र नर कस नी त्तल सतजप
त के टुं पौसि वद दु ड् सोर इक नरी १६ प
नि चौस हिँ इक नरी १४ गो दु ञ १४ सोदि
म प च वै पनि न वं तृ केसी घी उ पर
नो वैल न नि क होइ स्त्र ण मं त्र जुत
ध ऽ यक ॥ ॐ न मो ऽ स्मा न वा सिनं
कृ जा दि पल पनं कुं कु रु स्वाहा ज
प १०० स्त्रण स्त्रण मं त्र ॐ न मो नर
सिं ह प हि र न्व कास्प प ठ छसव
दार ना य क न प्रे न पि शा च क प
उ की नि स की नी कु लो मल ना स
प स्कं न प ॥ स मस्त देव न ह न ह स
च ल म च ल कं प प कं प प मन्द
म न हुं कट ६ ६ ६ ः ६ ः ९ हि रु द्रो ज्ञाप प
नि स्वाहा ज पं १०० स्त्रण प्र ना शवीचर ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हा॥ दोहा॥ चित्र रैबकारै संतपअलम होइ
रु द्रिष्टि चरैबनबसै उर पैत गुहीनरतो
॥औनरी जत्लदि जत्लदि चलो नि त्रति
नक्र रु नहोइ तव पहवि ष्वि करै त्र
मताः सचुसर मेहरै क्रर क्रमुक दस
त कीनरइं दु त्रछ्वै तल्ल बीर बि[illegible]
पैगंमर तैर दुम बुलीकलीका कुबों
कचि पा मसाल पीर सहीद गुरु गोविं
गोबीद गोरी गनेसघ्र हकोध होइ प
ह कोब होइ पक्रकसकी नगिनी पत
कीपरीनीः तरि जीवि मुहिरोग दोषग्र
मुच मुचस्य ह्त्र च मतहो मविच्ची
घूत गुग इच्चतु स्कंवीज मदरै कीसभी
रनतहो मकरै चैरसी क्रहतु दइ चै
त्रपणीप णीके होमकरै जोप्र तदोष
इ॥ क्रम प्रमेह लोगादि चूरनु लोग
कोत्ल ग त पीपरा सोंठि चंदन सप
इलइचि छोह क्रमिस पं सल्लो चन
सपीपरीक्र गर नगकेसरी जयक
कपूरु जट मसी घतावरी गुगरु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६

ग्र स गंच गुचेकसतु तगर सब दडू
चेलचेलजरी १२ लेई सब की दुनी प
लेइ तो प इ।१२ तोवीस पले हजर ग्र प
ग्रे उ वीची त्री कल कोक ट गो पु न्न म उरिकप
तो ग्र ५ वीची जइ ग्र मले पग्रे ५ वीची का जोर
सचो रं उकीजर कुट हर्इ व च स म न ग क
कें कं जी के प नी तेले प कर इ वु ही के ग्रं
पर तो नी कहो इ सब गु ज गिर वु की वि
इ लेर ए कि जर ग्र ठ ग्र गुर र मै ग म
र वें उ तो दिन तो गु ज गीरी प र तु च
॥ सो हि गु रु पुर न मैं द कें के ग र क वी
म पी ग्र इ तो ग ज गीरी वर इ त ब ग ज
र कवी ज ग्र ब सब कें के गु रु रं मैं व
तेलु १५ तो दि न ति नी तो गु ज गीं इ
नि पुं स कै की ची की स न क ह्रो के
क म द घ द म म १६ म ह तु ब
म मरी १८ उ के म क इ के व दि
ट प बु घी ठ न न ब इ ग्र ल
इ के सर रु मी म सो गि ब कार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जसती जज पीपरी लोग ज९ कर
ोचिल संचो न ग सव द२ तो
न ताल न रीविंद स वकवुरनुक
सहत्तम मीनि इ कं पर जोनीपं
कनीकही २।। तव गाली सोर्न
क नवक मस ११ मोतीत्र न वंचे
तासे २ संग कं म से ३ मिच मसे ४
व ९ क त कइ कं गइ क थीमव
क कं र पहरा चरी ४ न कीगो
वचैर नपू मन १ नोव इ तो
नपुंसक नी कहो रा त व्या।। प
२५ से द र कइ गु र।।२५ हरन
२५ न म न गो कीं दि २५ सेगी गु
म ह र।।२५।। इ सव मंडीक दुच
पलु कं र नहिको शलीवचै सी
मर वै नहीकमोहर वंदक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ अचो पं त्र कों कें अर्क नी कसी
र सीं जन लिंग अर्लपकरें ओर
पान म षर जो न कोतित्र इ प्र
नरसिंतों १ तं घ॥ गर गवकी
ठि कें सर्पदि म सं विर वहा
सें६ कूर्त्ल्य करी म स ३ जड्क
र म स३ सवइ जै गरकें घम
[illegible] घ लू करें पहर १२ सो
ओषचलीग की विधि मनव
वधें वहर ४ कूरि बोली ३ र
ान तान पनि तें अ सननक
र गोलीपुंसीक अद्द होइ अ
नृसिंह चूरन॥ सतेबरी १६ त्रिकु
२० सहते ३५ चूत ११ बिलेरी कंद
अससी दनो १६ तील मसि १६ गुपरु
५ १६ वचों ही २० गुंच कसन्त २०

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३२

कलवृ नी ची तर्कजर१० सवक
चुरनकर इ छनीलर सहेंतु
चृ तमील रकंचरीरवर दनो
नु नव इ इ कमरी ८ कमस
कव ८ त वृच पन र तरु नहोर
जे अरु चीजर तरु जर प्रमहुज
इ म गं दर प्र त्र कृछ मृत्र घतज इ
सु नव कवृ र पं ३ हलीमक ह पक
सस्वस छ इ सवत कसे गजइम
नु सी ह चुर न अवजुलवर
जसी॥ नर इ कम रि ११ सोर्ठि
२५ ह र इ इ कमरी ११ सोक २५ म
कोइ २५ गुल कंद चरिप समरी
॥ मीच १२ त सोहरकं वीज १२ मु
तक १२ स वक कुहोर जीकमीज
प अचुसर पनी मप्रत कल
ति नि पइ पनी मील इको मृ
म चट इ दें इ गर म होइ त
पी अ इ सनरी रुकर ३ रीक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तत पनी पीत्र तीत्र र विर पती त्र र दास
तिहो गर भिम गत्र मनर हैं श्रो गर म
मगत्र पनहोर पड़ैं त्रव वं द कर र
होरतो व द हो ज नु घर श्रव नमर
कीर नत्र स ३ ९ कु गि द र ९ कु द
चौं नी ट्ट क ज री १। गरी ई कम री १ व
मट्ट क म री गु दी १। लो व नु ई कम
११ त्र व़ति चै न म रीं १२ स व कु चु नु क
र स ३ क म म मी ल र कं गी द र कं प ट्ट
म रं पं ट्ट सी न र स वु हैं गी द र ९ क
स न म च र र सो ९ कु म ३ वु घो दी
श्र पं दी म व दु क रं र त रं ९ कम री
चरैं प की प सि म री वी नु व़ कं ३ न
वं ग त्र पु ट्ट क रं त्र य तें न गरं त
व ग न प न म न ग र कें सिय़ नी
र कं वं चे उ प र की क इति स
स वं र छो जी ३ रं जो रं द्दो त्र उ पर
गे हो र जो श्र हो र ई श्र घ हो र
नी म द क ग द्दु हो र

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व न क सु कार कै व स ई दि म
र ग रै तो स्प ल हो र पु हो र पु
ता ग्र सी सा र ग लो ह तै र गु
न को सोच न म र न वी ची अच
म ग्र सोच न वी चि ॥ गो म ग्र तै ल ता का
ल पू कार तै र च र ग्र सव घ ता न
सोच न य र वि ची ज न व ग्र यु त
ग्र म र न वि ची ॥ वो ह ज म रो र ग सोप
र गै च क दो र प ग्र न पहं त म्र कु तसो
र तो वी ची हो र स र वा म ची च री र प
त कै क प रो हि क री ति नी व र प ह ग्र चह
त म्र स्प हो र ज र ॥ त वं कं प ग्र चं
ह कै वं ची ल र सो प ग्र चो गु नो लो
तु सेचौ प ग्र न यं त र उ प र च री क प
नो त गो ज र दे ह प न र ग्र ह क री नी
का सी ल र लो त छ उ र उ र ची री ह र त
न कौ ल र र क घ ग र धा नी बु बु कर सम
धो ह प ह र र त मै प ग्र म ल पहं त उ प
र म च री क जा दु ग्र स व न वै म ही म ल
रे से ना त ह दे व कारा पु यैं ल ह न

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गं त्रर नीप ढीपचर्ह कम रीत।५
नईगिा ढह हादि।५ कि कला।१५
लगप सिंथ्यो५ सम मरी पस नीपर्द५
मोचर५ सवद्वह कमर्द वरर को
ईपसनमच्चर्ह वर्घ्ये लमरी।।ह
र्हह नर ईउकनैलमपर ब्रोनोब्र
वन लगनी होर नोप नी कसनवर्ह
वलगमलीनसंचो कसचवर्ह पे
ह कूनहोर नोम हीर कसूचवर्ह श्री
प्रीड गुल्म वकरि कम क्र कसनवर
९ रनरो गजर कसस्वस वर्ह गोल
कै पवन पी नसन दंगर मं दकनी
ककू वई वंवंसी पिनी कं पद्र ननें
रोगजर र्द सवरोगह चीकसम
न हे ९ह चुरन सिह कीसमनह
त्र ववनव्रं तवप९ कं नवंन ई व्र
तेकरैं क्रनीन ह बैपवें ९कैरनी
दिनमपनवें

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व वलचीकीत॥वचकुरस
तकेसंघचरं ग्योर दं न होवमी
पुछतो र ग्र लवलसंगुम की॥वे
सुघवके कुरल लोच ग ग पीपरी स
न कपिमी कचुर नुकरं सहतकेस
पवइ तो संग्रह ण जरग्र तीस
जर पुन॥पिजेरगरके दचम
निकै जतकरके तोदिमलेपक
तोनीकहोइ॥पुन॥पंसवचेद
तेरतो॥सोहि पीपरी मीच पीपर
न रासेचोलनु वड मिलरके
रनुकरे सहतुकेसवाचहेंचे
क यपुनी॥पुन॥तलीस पिसकेप
मी महछनी के पीसकै पलकपिती
मी हीजर पुन॥गरगवकेसत
नुकनु करें चीमगुजै योरज

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेमरीधैं सकर उरी कै वलकक
रोजुवदु पैंपतकपुद होइ॥ पुन
सर्वकै चतुर जंगर कैरस तसौं
कैगोलीवर्चें चनसमनरो जुपइ तो
पकुहोइ श्रेष्ठ तिसरवसौं दमनु
तपर मवनसौं॥ पुन घोरदिन
कवलकहोइ चनुपिअइ नजर
तौ मैंचैलीनस हतुवौ उमवर
हर नवम वुकिकै जीती मलग
वै दुपुपिअइ॥ पुन जो वलक
कञारहोइ तौ कुहू कीवंउभी
लहकैसहतुकैसव चटवै॥
पुन॥ ककरसीगी अ तीसपि
पदीवुकी कैंसहतुसव चटवैं
तो कघर दअरनर॥ पुन॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोच सोहि म्रती हर इ दृ न उ
घस इ नक कोचवन वै तोम्र
तसर जइ ॥ पुन ॥ ककर सीगी
पिपरी म्रतीस मोच इ नकचु
र न करर सहतक सबच
है म्रतिसर जोर घसी जइ ॥ पु
न ॥ पुहकर भरी म्रतीस पिप
री ककर सींगी पीसी कैसहतकै
सवच है तो तप कस मग ॥ पु
न ॥ वैसलो चल सहतकैसव
च है स्वस कस मग पुन ॥ काह
ली कौ चुर नु सहतकैसबची
है च कीजइ ॥ पुन ॥ जो पुत्र
नीचो होइ ॥ तो मी श्री सचोतान
पपरी मीच सनन प च है तो प
॥ व ७ तै

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुन॥ तन्नी स पिपरी पन्नी मघ
नि के पिसाइ दइ वलक की मीप
सीहीजाइ॥ पुन॥ जो वलक कै मघ
पके॥ जो पिपर की छलीव हीके
लेप कराइ नीक होइ॥ पुन॥ मुव के
व के अतार छली लेप कराइ नीके
होइ॥ पुन॥ वलप ह गुगुरु हर
हि घिउ हरीकव छ जौ वलक
रनी दीन सेवु कराइ तो इही की
चुपदै आर ज्ञघ वलक कौ वी
चरे॥ जौ वलक कउ दवै ग होइ
सेवु कराइ दुध उ रै द तौ न देह
काह न ह ल काह द वर सो पु नीहे
स्वर व ह लौं मल ही पुछ मघु है
तौ लघु न ब्रह्मचीज न वा॥ चौप
न हिल हीक संग मन हो॥ दोउ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिलोकै जहं होउ सुमे की मतीन
वृ॥ ताकी पुनरी पकवनवे॥ पुन
उचीह चपुमन॥ तानी नयन
कर चतुर सुजने॥ पुनरी केहल
पर श्री मुल कपलध रै मतीनि
व न रे क श्रोज गि पि न • रू द्र प
चनवै सघ्र मुवत जसा तनगवै पु
नरी के सव अंग स गृह उ परर
द के ह वे मूरति मे नाहि बोलवें
तो द श्रोर पुनन॥ अरर द्व संच
नहि सव तैर चउर पीसे चर
न करर ज्यौ चोकर नव चौक
परव पुरव मुब ग्रनी मर पध
पदीप च द ब मर मौ ग क ल म
कौ करि कै पसं जोग वली कीस
म तसवचर नवमर ती की

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुत्र करै अनप जोगवि चौ ॥ श्री
ठ जर कें ग्रह हो इ जन ह गोग्र सो
नौपी कें वीरी जन ह ह य म रे कें
चउ र न क चउ क दे ९ यु चौ
पुह चौथ दे इ जन्म ९ को व स
क म्र न वै धि उ ले कौ स पुच
रे जन्म म ही कौ म र जी च र
क्रि री म ही न ति वी व र न दे
ले को उ प च र क र र म्र पुप
व ल स्य स दे लो स सै ल म से
ग्रह व ती क री या ९ ति म ते जे
स क ल प्र त्र व करै क्रि री प्र ति
म च स्तु प का ग्र व र ह न क र र
क्र च स न क ग्र न क ग्र ह क ह स
ह न ॥ स्त्र अ ग्र कु ह स भी ॥ सौ म स
पु ह म बि ॥ जो म स्तु ह य बि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ुयरुवहयमि॥ चंहमाजिरुवह
मि॥ मुकेरुहयमि॥ सनीरुवह
यमि॥ दहवुरुयमि॥ केजोरुय
यमि पहि मत्तिनसुगुह नकोरु
नफरद सवंगहचिपनधहं
रसहं॥ पही मत्रसोरुस्वनगें
पुछकुपदिपनैवंदि सठस
यरवै स्वनपीमनयं दिववरी
चरं॥ गुरकुसरचन मघरी
सुमदिरगोह कीघुघुरी वरास
सप्रतिपकंरुगंचेरं मंवयह
ठीकं ॐनमोपगयतं श्रंनकाये
तुसंनसुवसलसुवहतुकरस्वह॥
लूमंत्रपठिके ९रुमुरिघुघुरीबाट
कंहयमंदेद नवपहिला जोसम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परमौलोम पुतरीके अग तम घुघुरी
उरवैठिरी औवर घुघुरी लरीकके
न्यमद्दर॥ मंत्रपढ ॐ कर वैन
तेप्रापनम॥ ९८ मंत्रपढीके परी
सैतअमगन वैकीरी औरपुर्व घु
घुरीलरीकके न्यमद्दर॥ ॐ ह्रीं
ह्रीं घः यनमं त्रपढीकेपरोसन
अमउरवैलरीककी वरोवसी
कुलनकमल वनवृवैसो
मलरीककेउपरतिनीवैर
करीकरी॥ ॐ केका री ह्रीसुरु
९ ह्रीं मंत्रपढीके घु है मल प्रति
मकेउपर पुर्व दिसमें प्रत्तीमके
मवसमचरीके औती, ९ वैकीरी प
र्वकेनरव तेहीपीछे वमसु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

।नन कटइ पीपरी मीरी च जइम
ी प नुष्यी केय र विलरी कीवीछस
कीकें चुली हव्वी कदनु वछलक
ीगु छोली लें र हीग सव छकें
म मीलर दर सोचु प दरलरी
केकमो म हनी कक कपरसौ
छर जो मुनप्र[illegible]न छ मदनु
ा व सगतर घ सपीसच कुछं
र्यौ गम द घ नु [illegible] चुर छल सव
मगे ॥ श्र न संतुवंदकारसी
गुरपीकी मंद वचजड इनीसो
र नकपुरकारँ जो संतु वंदहो
श्रम उसीर श्र दीचुरन घस ॥२५
वर ॥२५ हर ॥ सब हर ॥ पीवरी ॥ सो
॥२५ चनि म जि त वल ॥२५ सर्व दचं
रज की मैंचु ॥२५ जी र दु नो ॥ दव ॥२५

Digitized by eGangotri

रत्न चीख्यनत्र ख्यर्क सरीख्य बंसलो
चनख्यपीजपवर सर्व स्रोबदि पीसी
के गुर चक सन ख्यइ रे कृ री सव
किवर वरि मीसीरी इ रे प्रत्तगरि स
हत्तके सम्य घइ त्तोजीर नजरु
जरर रुपीन्त विव मनर जर
ऋचसर्व वरपुप ॥ कृ ह: निवं:हरे व
च: सेर सैः नक: सनन गर्कके कु ईगा
मकुजैस नेसम कोरोगी कर्सिह ने
पुप देर त्तोसर्व जोरजर ऋप
सं नीप नजोमलुवी गरीगलोर तका
वीवीतस्त्सीर सकीछ ली:र कहरपृ
कीजर: द नोकपीसीक पंहमलं
पकर र त्तोवं दहोर क्रिरीदत्तानत्र
रु क्र वक्रिह पंटमचरै र स्रीकि
दच महिग मीजर्क नोदि मचरेउप
रर्ग महवक्रंप नकपनरीववं ती
मलवंदहोर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्र व द स प्र ल कें न इ ॥ स रि व न १
पि ष्य व न र को इ इ स्त्र ३ द नो गु बु स ५
वें लु ६ रां त्ति ७ स व नः र धं म्र री ८
पां ऽ रि १० ७ ही त्तं कां क ८ त्त त्तं र सं
नी प त्त ज इ स्त्र य त्त ली स चु र नु ॥ त्त
मीं स हं के दु र र मी र र्चं हं का त्ति नी ३
मो र्ि हं कु च रि ४ पि प रि हं कु ५ वं स
मो च न हं का ७ कु १ ब ऽ ची नी व त्ति
नं हं क २२ मी ल इ कें ब र मो त्त ज १२
नो र घ र ज इ क स स्व स स्र रु ची पं ५
लो ह नि छ र्दि स्त्र त्ति स र स्त्र ल ७ त्त रां ग
त र स्त्र अ त्त ल स चु र न ॥ क ली स ॥
वी त्त ॥ वी प री ॥ मी र्च ॥ मो र्ि ॥ स्त्र य
स्व र ह स्त्र न र क व क ल ॥ त्ती त्ती री
व ॥ इ स व द कु इ ह का इ का म रीं ल इ
ज मो द ॥ ग ज पि प री स्त्र ज क इ नी ॥
पि ल र्व त्त ॥ व इ म र्ि गीं पिं प र मु
च व ॥ न ग कें स रीः ह ह र्व र ॥ च
पी प ज ७ क र ली ग त्त जं प त्र ज इ ल र ची

CC-0. UP State Museum, Hazratganj

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वंसलोचनु १ सव द्व२ तोल तोल
लेइ सव ७ कनकाइ कं मे ६ कारर१ क
परछ न करर१ ६ पु की ६ नीषडलेइ ची
नीषरो सव मीलइ ६ ईर्च्यनमरी ॥१२॥ ष
र पिनस र ज रोग जाइ सर्ववात ज
इ मृतछष चोवीस पित्त जाइ वीस
सर्वषमजाइ तेर वलगम जाइ रोग
जाइ ॥ अथ अर्वी चूर्ण ॥ ग ज ७ क कपर
लर कोमद र के ६ घमभौजे स तरो
जसु वसु पै कंभौजर्वे की सेउ ८ के ६
घमवैस ही भौजवैं श्री गंधक श्रीन
७ कमभौलइ के कपरपर लेपि ६ र
क्रिरी कपरकी वती पनवैं सव ती ठ
लर ६ मीकें वरर१ श्रोतारैं कछु वसनु
परइ सोधि ३ लइ लेइ सोधि ३ चरी
र तिपनमचरी कें वइ तो पुछ र क
स खम जाइ कोढ वैच अगिन मै ६ ६ री
लेइ

Digitized by Sarayu Foundation

य संग गुरु सोच न विची ॥ सुर
ीच मय रैं थं द कार इ म्र च दइ पह
र जो सुच होइ ॥ म्र चा ॥ सु धी सं दर क
ई री कइ लेइ पैं स पैं समर की सोचो
त द कपर की नइ ती व नवैं सो तीसम
स द ३ कमरैं मोहर वं दकार इ ७
के प उ मरै की त ल क द इल्प
य न वैं ती समैं च इ ल रघ गेल्व
त वु ति सम ९ क म्र गर की मो ही म्रही
मा ग वु के री के रं ड की प त सो लप
ह द स कं ड की म्र च द इ ७ हि वीची
सो ७ क म्र ८ १.८ तो ७ ह सं द ३
चैं द्वो दैं की सम नं है तिन म्रमूव
ोच नवी ची ल प द म्र मू घ ॥ म्र गाव
ह चम सोची ले इ म्री च गा कैं लर
पप हि म्र मृ व की चम [illegible] मरी
सम्र —

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वंसतसरमीरका मउरीदेरचलीसदेन
थमेमचररनीसममृचपरपैसमीर
॥ ववुरकीमचरीदुकमरी१। ७दुनो
७कममीलरकेसुधेकंवोदेपहरक
१नीसकीगोलीवनवूसीसीरकमउदे
र७कलकरीनरोजचलरदेरकरेंदु
रचरिदेरजवचलीसदीनम दे
नवकीरहेनवगोलीनीकरी कैसीर
कसहीनवल्लकरेंजवगछोरनव७
कहीकरीवधिकेकुरेंउरेंनवसरवुसे
पुदमरवेंगजपुटूमक्रचदेरचरी
मेंरकंउकीम्रवदेरकीरीक्रोरेसीरक
मचोदेंकीरीउसीमनीनक्रचदेरक्रोति
निवरक्रचदेरनीसुचीकीक्र७हे॥क्र
मधरनिमरीवरनीक्रचनवेंपिरजर
मुवनगवनधिजवकदीरोगनसेंह
धिरवीकरनीकहोरविसप्रकेंहनीकही
रवनकुरछपुउपदेसप्रीतिगलुमउ
देरवीकर७नेरोगनसे७हमिक्रनीव
लहेहकक्रवभूनहैं

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न च नेलसोचन॥ नेल म घू न म
र हीम चठ इ ट इ जवनवृचनइरहो
र नवपच इ र ठ वें नं चलवेंविपरव
रग ट र पकरी ग उगुलारी कइहरपर
नकचतवृं करी री मदीकेगुर इरें
इ र सपच करीरी नेलठ नरीलर३करी
जचरी र वें नववलसुची होर
ग च श्रीगीग वी वसोच न॥ श्रीगीय
विभु नीनि हीन गौमू नम नीजडूँ
कर इ वपेमसुपवृ नौवीवसुधहो
ग चवीव मर नसुच विव चनें
मरोवरी ट कर करें जिसको नीनि
हीन गोमृ नम घो हैं पि हेंसुवरके
पवकीवरों वरसोहगउरें पिसेव
ड र इ नौविप मरैं ग नच नुरसो
नच नरें कविन गौमू कमजीजेर
वरीप हर पिववनम गुपवृ बुसी
कसीउरें नासुचीहोइ

CC-0. UP State Museum, Haz...

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२
वं स॰ बतुर मरनच नुरंकेसोचवी जव
९ कवनम पोउरी वच्चँ अमर्च मउसी
कअवरीबेद जोसुषहोइ ॥ अवकोन
चनसोच न ॥ कैजीके पनीम दु
पहरउसेदु कीरीविमअजैवकाव
नि कोइ के छुरी ने नव सुष होइ
अप अकीमसोचन ॥ अ दकेरस
नेबौहँ नोनि दिनयोरचोररस
उरतिगइ नो श्रावी होइ अचे
उ दररोगनिवुददु ॥ जमीरी
निवकरसमोदके१०० हिं गमु
जी ।२५ सचेनोनसोचर संम
री ॥ १।२५ सेर सो।२५ रर सो हिं १।
मीरी चजवुरन ॥ पगा।२५
वि कर ।२५ वनरसीर रा२५ मुठ
।२५ अजमद ।२५ सवदवइ मैदका
९ कसोसमचरैं उपर नेनमी
रीकरसडरै दसदिनचमम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जव रैं यदि द स दि न . व र म
री ४ जो स र्व रोग ग उ द र की ज र
जी न व्य ज्ञ न प ठ प इ ।। लो च न दा ज्ञ
ज ह्व इ नी ।। ज्ञ वा ल वे ज स ।। जी र
द नो रा सो ठि पी प री मी री १२५ च
य हि र ।। मु ठ १२५ सं कू ।। तं न री
व ।। ज्ञ वु र ।। ची न ।। ही ग ।। ह र इ ।।
पी प री ।। ज्ञ ज मी ला सो च र ।। च
नी मू ।। व इ म रं ग ।। सो र क न
मी गु डु ।। घी कु व र क र म सो ह
कै म री १००। स व द व र मैं द क
इ को ७ क म ही के ब स न म वु र
र्क मु इ म ग डी हैं इ ही न र २० कू री
नै क सी र्क घ नी नि र ७ के मी मी
न च री र हैं प इ म स ४ पो हर
भी के रोग ज र

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वं स दृ तेलै ॥ ॥ ल्यै करु सर ऽ४ दृ
गु ग इ क स र ऽ१ द स मु ल्व सर दृ
स त कें न म ॥ स रि व न ऽ१ पि व
व न ऽ१ गु षु रु ऽ१ क ह इ यृ दु न
ऽ१ व म री ऽ१ प ऽ रि ऽ१ सा व न ऽ१
वं लु ऽ१ श्रु ग व व ऽ१ नि व कें प त
ऽ१ प ठी ऽ१ ग द ह पु र नि प ऽ१ न
इ जी र ऽ१ कौ स्व ल ऽ१ म द र कें ज
र ऽ१ छी उ लें क ई सु ऽ१ सी र को
क ऽ१ क इ शै ल ऽ१ सी र स ऽ१ कें ल
कें प त ऽ१ चौ र इ ऽ१ मु ह र मिं श्री
चें ली प ऽ१ इ स व इ वृ र नें क क
ट क इ क तें ल म प च इ दं इ श्री
त पी दें प सरी की द वृ ऽ रैं तीं कु
ल ।२५ त ली सा ।२५ क चु र ।२५ कि
इ व र ।२५ तीं कु इ ।२५ त जा ।२५ प
ले जा ।२५ इ ल इ ची ।२५ व इ म रैं

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर मुठ स्य द

प तास्य नु ल स

ी स्य इ सै द इ र घनिमवरीकव

च इ द र जव प की जनवठ न

रीत र सो द हा मलगवे तो वं व

तनि कृहे इ अ प स्म र अ तोन्म

द सव वात जीर ए ज्प र प तेरो

म जर श्र व्य मु त ठ द म द ची

नु॥ द ह ची क र घकौर संत

प्र न म होइ गु न द ची व र व

न व स ठ र पं त म्ह नरसी र॥

ग्गोनसी ज न दि च न नि व न

न होइ क रु न हीर॥ त ब॥ म

स्म च मरमं हरं अर ग्रु क द

कृ मतकौ न्यर इ इ ज घि कावं

तव विर कि र स्त पं गमरमं

ठं न प नी कत्ती क जु आं ड क

CC-0. UP State ...

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वं स द्रू तेलै ॥ ना सहि द गरु गो
गु ग इ क स ा स घ ए कोष्ठ ऐ की
ग नीपा जलकी पसी नी जरी अी ठि म
ठि रो ग होष्ठ ग्रही मुं च मुं च स्या ग
र जी मंत्र होम ॥ अप हो म विची
गो घृत गम गरु ॥ चतुर के विच ॥
म द र की समि चैर न तो हो म का
रें चोर सी ट अर्गली द र मंत्र
७ है पर्णी पणी प्रतो होम जर ॥ अ
च मंत्र वली ॐ सं करे भ्ये सर्व देव
भे नं च्य भ्ये नम ॥ अच वली वी
ची ॥ मु गाम घ ॥ नं द्ल सीचें के
द ची बीर पंड वृत ॥ गु री वली द
र दीन

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अ प सं नी प त

म सं नी प त दि ना

अ त कु १२ ग दे हि १२ अ न प न प

र क त इ छ १० प न प ११ जी क

१२ अ मी न स १३ ।सि तं गा १४ त हि

अ का १६ कं ८ कु व ज १७ का र न मु ल २

प ग न नि त्र ८ अ व सं नी ही न मो गी

सं ची क दि न १२० अ न कं १०५ गु ह १२०

अ म चीत्त प्र व १२ मी तं ग ही न १४

त हि पु का १२४ कं ८ कु व ज १३ का र

न मु ल १२० प ग न न त्र १२२ र क

त इ कु वी १० पु व पु १४ मी हि का १६

अ मी न म १४ इ तीम प ग ।।सं ची

क ल घ न ।। अ मी व न ही व न सो

अ नी मु ल नी दु ह नी अ म मु सा —

क सं ना प रु क र न सं सं पी क

न नी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वंस न्दू नेलै॥ गजेकदि हीकी जो
गु ग इ कनेर पोदकरेहु॥ रुमा
रु कंरे कनुकदि वहुरी जवुम
हदेनु॥ नुकल मो ब्यसो ठी गीलो
इ॥ देपु देनु सनी सम पसोर॥ ओर
वेपसा हमनी हेंजा॥ करोहु को
यगुगु रसम पेंजा॥ ओगपी रकेन
समन नसइ॥ सोकु सेंची कीची
व मीहइ॥ सो ठगुरी च हरीजा
की देवुदर उपहार हसनी
समकरी कोन दे सांची पीर
सबजर॥ वहेर पीपर मुल
र हमनी हर चीर इजा॥ पहे
को बसमजल॥ं इ जल मोप्र
नहेर हेनसंची क मुल॥ सं
वीपज कली क कहे॥ वसमो
ब्यसो ठी गीलो रुम कजवु

Digitized by Sarayu Foundation

री हर रैं मोह।।
नी अतिस देव दे
पी सी।। इन सब ही दस मुल
ल ह।। दस मुन नम।। वेन रंड
पमरी सोन अग ठव कहये व
केन पडरी यु हसव रीअर।।१०
को चपीयुसं घी कगुर छीनम
तर मीहं पीर सवअंगकी कहि
पीडमो मड ह।। सकलपीर नर
ही मर्क संघी महजही जरअव
पुनी मंडजी मरसं गुलड हु।। नी
व पत्र रल समदह पुनी इनको
ती जैं गुनी।। संघी नसबनको ड
र मुनी अवअं नकलछिन।। दन
मोह सीरक पन होर।। ही क्षासो
पुरेगरसो ह घोसअरसवर्द
पीर ह।। इन तेअ नकजनजर

CC-0. UP State Museum

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वं स॰ दृ तेलै॥ ना सभु ही करीदि
गुगइ कसर रात्ज कोमैं तक्रव
कृ करि ग्रंक्नं त करि है॥ चीकीस
गोपरि सो ठि चर इ त्रघ नसही
गीतोइ॥ दिवु दर सै केकर कुरं
वित समोइ॥ दसमुव कोक्कोव
करी कैं तक श्राव गुर गुर॥ पीस्व
सुलसुरु कसको सो सवभुगी न
सइ॥ हि क्वोस नी सो नर हैं प्रहि
श्रोव ही कदि इ॥ सुचरु गुदह॥
कसजल नी सुरु स्वोस सुपसंदि
कैठ ग्रह हानी॥ व वसुलसुं वच
र ना ९ रु रु गुदह सो तनु॥ चीक
सा॥ चंदनवलसो ठि ठ सीर सोक
पपरतें तंती॥ करै कोव तह मेरद
सी ह॥ रु गु दह सैनी दुरी होइ अंस
॥ हरै सीकापपर पइ कुह कीरिसुरदद
सीलइ॥ सीतकरीपा जं ज्ञोदु हु कल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्नमें कईकोनु॥ कवनु बार काप
कईमोनु॥ ई टें पुकरी मलकनेइ
ची न्नप्नम पही नेजननर। चिक
ला॥ नरर्हनी व मोर्कवच वहव
मोर मोनवपवर सम जोनकिरयु
स मकनठर्दन॥ चनप्नमकन
नके हेनन॥ न्नवनुप॥ वीपनी
सेवर बनी देवदर मरेठी हेनी
तर्चेद नयुवीक रोज॥ वीन
मकोर हें नबेगु॥ न्नप सीनग
छन॥ सीनजो दकंपन्ननक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

१५

नं स दु तेलै॥ ना सपुहीकरीदि

गुगइकसर २ गाकोअंनकुन

रुरफरे अंनकरेरु॥ चौकीअ

ापरिसोटीचरइनचनसही

गीतोइ॥ दवदरमैंकेकरकु

बिनसमोइ॥ दसमुनकोमा

करीअंनक चुनथुरनठजैग

सुगिअंनीतिछनदतेनीकनस॥

नस॥ वचसचौअरुपीवरीपर

मठुदुअटुलीजनलइमीलर॥ दीग

संजवीचे[redacted]समन॥ ओनप

हीकेनसनकेहेन॥ अनननस॥

सहिजनबिजअर्सरमोपर॥ से

चौकुहलेहसमनइ॥ ब्रजगुत

सौदिजैनसोपहसनीपननक

रीनसु॥ अद अपनंद

लछनो॥ कनपिरस्रोअची

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाःपरसयली ... गदहै॥
नीपनकुनीककहनतेहीके
नमनेमहे॥ऋषक्वोवा॥गुरीच
नपरङरत्नीकुद्वपशाइनकका
ठकरनुयनइ॥हीजैसैनीव
नकेहेतानेहीहीनमीहैयतमम
त॥ऋषक्रंतन॥कुटहरदक्रो
त्नीकुइपइ॥क्रीरमहीकनम
मीलइ॥ऋनपुनसोऋतनलउ
उहिनतेहिकमिहइसुमउ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वं सं दे नै ॥ ना सम्पु ही के रीदि
पु ग इ क स र रा ज को श्रं त कु व
दु र फ रि श्रं त क रे ॥ ची की सा
नापरि मा टी च र इ त घ न स टी
गी लो इ ॥ दे वु द र श्रै के कू र कु
वि ज स मो इ ॥ द स पु व को ता
क री श्रै त क ग यु त घु रु त ठ जै ज
मू व क जै र्लि व न रे ने ली ज स ध ॥
कु नी ॥ क ठ के के
प त ज रु ह नी ॥ वं ग स नी ह
ली व न इ ॥ स्र पं कं ठ कु व ज ल ए
न ॥ हा नी म व ग्र हु दे हु ग्र नी मे
हु पु र ढु ठ नी कं ठ ग हें ग्र रु
थ प त त नु कं ठ कु वि ज ज नु
त सु क ठ ॥ कु हु की मो ब ग्र क
न प इ ॥ त्री कु हु त मं लें स म प
श ॥ स म क री हु न को क ठ दे हु

नन २५
नींदन॥ पंगगुनम्र घ्यानम्रनी
म्ररनिपचनकहन्नी॥ र कन
र घुविजनु॥ नस चीकस्ताप
परघनीयुम्रोरजैयुम॥ मीन्य
उसीरनीनकेपम्र॥ कुइकी
म्रीरपिपंगुमीलइ॥ इनकीघ
उफरहमीलर॥ हिजैमघुमाम्री
ीलर॥ रघनन्तरंम्रसंनीमीहर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

On :—

Sanskrit Literature

first Brahmin who took to the
Dr. Keith's view that he was a
because he was really Brahmin by birth
script evidence. in the Kanishka
passage of मातृचेट in नासिक गोदी also occurs
अवसायाहिताय: लोऽयं कारलब्धमूलं प्रयाति। (मातृचेट)
... येन प्राप्तं पदमनन्तरम् (अश्वघोष)
proved by writing an epistle to कनिष्क
is prior to the date of Kanishka.
Tiberian opinion of बुद्धचरित-
belong to सर्वास्तिवादिन school at all - golice(?)
irregul... to these versions being
en...

तारा वा न या वा त न त
न नै व द पू ल प क सो इ ॥ च
की स्त ॥ प र गै च क स म कु तै
वै ॥ कु त च त र कै र स मो दि नै ॥
च शी प ह र व र त त्रि कृ ह सै च प
ग हि र म नै रो ग प्र त प क न र ॥
ख जी ह क नी ह न ॥ क म स्नो स
प री त प क्र न्नी जी ह क त व ल ह
जी न क र्ण न क्र रु प वी र त र न
जी ह क न्न नी ॥ ची की स्त ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

On
Sanskrit Literature

first Brahmin who took to the
Dr. Keith's view that he was a
because he was really Brahmin by birth
script evidence. in the Kanishka
passage of मातिचेट in नामिक गोती also occurs
व्यवसायाद्वितीयः सोऽथ शरण्यमूलं प्रययौ । (मातिचेट)
... तत प्रपेदे पदमनन्तरम् (अश्वघोष)
proved by writing an epistle to कनिष्क
is prior to the date of Kanishka.
Liberian opinion of बुद्धचरित –
belong to सर्वास्तिवादिन school at all – gohn done
irregular ... to these versions being
ence

कैवराव ... ॥ कैनमत ॥ मारां
वै लिचो पीपरी वड ॥ मह ... मह
तममह ॥ कैकर मरै नीरसोनस
ग्रमीनसकोकरडवीनम ॥ ग्रव्या
य चलची पीपरी मीरीचं नही मी
नडम ... कनजीन ... नसमनड ॥
... नसो दीजै न ... मीनस
... करडवीनस ॥ ग्रवव्याप ॥
श्रीगी त्रीकुरचीरडजपड ॥ श्रीर
पुर्हं नवनुमगग रा ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

ध ख र आ प ण ल र जो कसे
स क कु च न प र इ पु ही हो इ
ल अ ची क इ [illegible] सी ची गु
पं के है

६५ अवी की। : [illegible] ग र २
स पु द कु नु ३ ८ रु ह र दि ४ र
ख नु प पु नि सपि स कै अ ब के
प ह र ल प क र इ:

९

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

On :

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
...assage of [illegible] in [illegible] also occurs
[illegible] [illegible] [illegible] (सौन्दरनन्द)
... [illegible] (अश्वघोष)
... proved by writing an epistle to [illegible]
... is prior to the date of Kanishka.
... Liberian opinion of बुद्धचरित -
... belong to सर्वास्तिवादिन school at all - [illegible]
... irregula... to these versions being
...ence...

[illegible]

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पापरा

सोर्ण

मुर्व

कॉप.तगर.

नौकें वैर.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

On

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the

... Dr. Keith's view that he was a

... because he was really Brahmin by birth

... script evidence. in the Kanishka

... passage of [illegible] in [illegible] also occurs

... [illegible] (...)

... [illegible] (अश्वघोष)

... proved by writing an epistle to [illegible]

... is prior to the date of Kanishka.

... Liberian opinion of [illegible]

... belong to [illegible] school at all - [illegible]

... irregular ... to those versions being

... ence

... भारतीय लोक नमऽऽऽ

... [illegible] ऽऽऽ तो

नीक होइ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Luckn

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

on :

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
passage of [illegible] in [illegible] also occurs
[illegible]
... [illegible] (अश्वघोष)
proved by writing an epistle to [illegible]
is prior to the date of Kanishka.
Liberian opinion of [illegible]
belong to [illegible] school at all - [illegible]
irregular ... to those versions being
ence ...

[illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

تنبیہ—(۱) کتوفی حصہ نقدی کے کاغذ کا نمبر مطبوعہ نمبر سے نہ ملانا شمار کے ...
(۲) خانہ کیفیت میں بقایا قیمت جنس دکھانا چاہئے۔—

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Luckno

نمبر شمار	۲															
نام کاشتکار مع ولدیت و قومیت و سکونت	۳															
نمبر خسرہ مفصلہ کھتونی جمعبندی	۴															
رقبہ ایکڑ یا بیگھہ میں	۵															
نام جنس	۶															
طریقہ تقسیم یعنی بذریعہ کنکوت یا بٹائی	۷															
شرح کنکوت	۸															

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

٨	٧	٦	٥	٤	٣	٢
نمبر شمار	[illegible]	نمبر خسرہ مندرجہ کھتونی جمعبندی	رقبه ایکڑ یا بیگھه میں	نام جنس	طریقه تقسیم یعنی بذریعه کنکوت یا بٹائی	شرح کنکوت

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

نمبر شمار	نام کاشتکار مع ولدیت و قومیت و سکونت	نمبر خسرہ مندرجہ کھتونی جمعبندی	رقبہ ایکڑ یا بیگھہ میں	نام جنس	طریقہ تقسیم یعنی بذریعہ کنکوت یا بٹائی	شرح کنکوت
۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

نام [illegible]

نام محال اقبال [illegible]

نام موضع [illegible]

نام پرگنہ [illegible]

نام پٹواری [illegible]

سنہ فصلی [illegible]

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

CC-0.